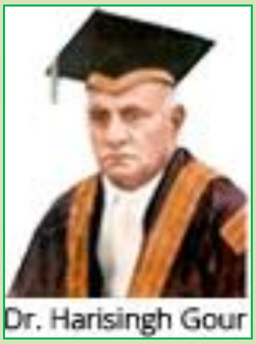

न्यूज़लेटर

फरवरी 2025

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

संरक्षक

प्रो. नीलिमा गुप्ता

कुलपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर

विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सहयोग एवं परामर्श

डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय

कुलसचिव (प्र.)

संपादक

डॉ. विवेक जायसवाल

जनसंपर्क अधिकारी (प्र.)

संपादक सदस्य

डॉ. हेमंत पाटीदार

डॉ. आशुतोष

डॉ. शालिनी चोइथरानी

डॉ. संजय शर्मा

माधव चंद्रा

विकसित एवं स्वर्णिम भारत की संकल्पना तभी साकार होगी जब भारत आत्मनिर्भर बनेगा- प्रो. एस.पी. बंसल

जीवन में समस्याओं का आना 'पार्ट ऑफ लाइफ' है और उन समस्याओं का सामना करना 'आर्ट ऑफ लाइफ' है- प्रो. नीलिमा गुप्ता कुलपति

विवि में उच्च शिक्षा में शिक्षण, प्रशिक्षण एवं शोध पर क्षमता संवर्धन कार्यक्रम संपन्न

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा उच्च शिक्षा में शिक्षण, प्रशिक्षण एवं शोध विषय पर भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित 04 फरवरी से 15 फरवरी तक चलने वाले क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र का आयोजन विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में हुआ.

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों और प्रतिभागियों का औपचारिक स्वागत शिक्षाशास्त्र के अध्यक्ष एवं क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के निदेशक प्रो. अनिल कुमार जैन ने किया. कार्यक्रम के सह निदेशक डॉ. धर्मेंद्र सर्राफ ने 04 फरवरी से 15 फरवरी 2025 तक चलने वाले क्षमता संवर्धन कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया. कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल जी पधारे थे. क्षमता सवर्धन कार्यक्रम के आरंभ में मुख्य अतिथि और विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा शिक्षाशास्त्र विभाग में छात्राध्यापकों एवं छात्रध्यापिकाओं अपने विद्यालय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान निर्मित किये गये शिक्षण सहायक सामग्रीयों सबंधी प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया गया. इस अवसर पर अपना अध्यक्षीय उद्बबोधन देते हुए विश्वविद्यालय की कुलपति महोदय प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शिक्षकों के समाज के लिए आदर्श बताते हुए कहा कि ए. आई (कृत्रिम बुध्दिमत्ता) कभी भी शिक्षक का स्थान नहीं ले सकती. अपने प्रेरक वक्तव्य में प्रतिभागियों विद्यार्थियों से उन्होंने कहा कि समस्याओं का जीवन में आना 'पार्ट ऑफ लाइफ' है और उन समस्याओं का सामना

करना 'आर्ट ऑफ लाइफ' है. साथ ही उन्होंने हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय और डॉक्टर हरीसिंह विश्वविद्यालय के बीच शैक्षणिक साझेदारी की भी चर्चा की.

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने अपने वक्तव्य में शिक्षकों के कौशल विकास, शोधपरक प्रशिक्षण, अनुभवात्मक अधिगम एवं आलोचनात्मक चिंतन पर बल दिया. साथ ही उन्होंने अपने उद्बोधन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में भारतीय ज्ञान परम्परा के संवर्धन एवं विकास की बात की। प्रो. बंसल ने कहा कि विकसित एवं स्वर्णिम भारत की संकल्पना तभी साकार होगी जब भारत आत्मनिर्भर बनेगा और आत्मनिर्भर विद्यार्थी बनाने की जिम्मेदारी शिक्षकों के ही ऊपर ही है. इस अवसर पर विभाग के सहायक आचार्य डॉ. प्रवीण कुमार टी. डी. द्वारा शुरू की जाने वाली वेबिनार श्रृंखला 5 आइज (इग्नाइट, इंस्पायर, इनोवेट, इन्फॉर्म, इम्पैक्ट) के पोस्टर का अनावरण किया गया। इस अवसर पर शिक्षाशास्त्र विभाग के बेस्ट प्यूपिल टीचर इन टीचिंग के पुरस्कारों की घोषणा की गयी. बी. ए. बी. एड. (चार वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम) से हिमांशु मिश्रा, बी. एससी. बी. एड (चार वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम) से अंजली राय को दिया गया. साथ ही 'बेस्ट प्यूपिल टीचर इन टीचिंग एड' का पुरस्कार राजन गुप्ता को दिया गया.

छात्र-छात्राओं ने बनाए विज्ञान के अद्भुत मॉडल, अतिथियों ने सराहा

क्षमता सवर्धन कार्यक्रम के आरंभ में मुख्य अतिथि और विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा शिक्षाशास्त्र विभाग में छात्राध्यापकों एवं छात्रध्यापिकाओं अपने विद्यालय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान निर्मित किये गये शिक्षण सहायक सामग्रीयों सबंधी प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया गया. प्रदर्शनी में छात्रों द्वारा पोस्टर और मॉडल का प्रदर्शन किया गया जो विज्ञान पर आधारित थे. छात्रों ने पोस्टर में दैनंदिन जीवन से जुडी बहुत सी रोचक जानकारियों को प्रदर्शित किया. सभी अतिथियों ने मॉडल एवं पोस्टर की सराहना की.

उद्घाटन सत्र के अवसर पर विभिन्न राज्यों से 30 प्रतिभागियों सहित गुरू घासीदास बिलासपुर विश्वविद्यालय से प्रो. सुजीत मिश्रा, कुलानुशासक प्रो. चंदा बैन, अकादमिक मामलों के निदेशक प्रो. नवीन कांगो, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष एवं संकाय अध्यक्ष तथा शिक्षाशास्त्र विभाग के शिक्षक डॉ. रश्मि जैन, डॉ. प्रीति वाधवानी, डॉ अनूपी समैया, डॉ.

रजनीश अग्रहरि, डॉ. पुष्पिता राजावत, डॉ. चिंतन वर्मा, डॉ. सावन कुमारी, डॉ. नवीन सिंह, डॉ. रमाकान्त, डॉ. अपर्णा श्रीवास्तव, डॉ. अखंड शर्मा, डॉ. शिव शंकर यादव, डॉ. शकीला खान, श्री योगेश कुमार सिंह व श्रीमती कंचन चौरसिया समेत शिक्षाशास्त्र विभाग के बी. ए. बी.एड., बी. एसी. बी.एड., बी. कॉम. बी.एड., बी. ए. (शिक्षाशास्त्र) एम. ए. (शिक्षाशास्त्र), एम. एड. के सभी विद्यार्थी और सभी शोधार्थी भी उपस्थित रहे. उद्घाटन सत्र में मंच का संचालन कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अभिषेक कुमार प्रजापति ने किया. आभार ज्ञापन डॉ. रानी दुबे ने किया.

डॉ. गौर विवि एवं सीयूएचपी के बीच अकादमिक साझेदारी से होगी एक नए अध्याय की शुरुआत

दोनों विश्वविद्यालय मिलकर संचालित करेंगे वैदिक अध्ययन, योग एवं पर्यावरण जागरूकता में सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम, रिसर्च जर्नल भी प्रकाशित करेंगे

डॉक्टर हरीसिंह गौर, विश्वविद्यालय, सागर एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के मध्य शैक्षिक अनुसंधान, कौशल विकास, गुणवत्ता उन्नयन, सामाजिक सरोकार से संबंधित विभिन्न विषयों को लेकर किये गए एमओयू को क्रियान्वित करने की रणनीतियों को लेकर विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता एवं सीयूएचपी के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल के नेतृत्व में दोनों विश्वविद्यालयों की समितियों के साथ संयुक्त बैठक का आयोजन विश्वविद्यालय के गौर समिति कक्ष में किया गया. एमओयू समन्वयक प्रो. वंदना सोनी ने दोनों विश्वविद्यालयों के बीच हुए एमओयू के उद्देश्यों को रेखांकित किया.

बैठक में चर्चा उपरान्त आरंभिक तौर पर वैदिक अध्ययन, योग एवं पर्यावरण जागरूकता में सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारंभ करने पर सहमति बनी. ये पाठ्यक्रम

ऑनलाइन मोड में संचालित किये जायेंगे और इनकी संरचना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए की जायेगी. दोनों विश्वविद्यालयों की संयुक्त टीम पाठ्यक्रम संरचना, परीक्षा, मूल्यांकन, क्रेडिट निर्धारण, पाठ्य सामग्री निर्माण, पाठ्यक्रम संचालन एवं अन्य आवश्यक बिन्दुओं को निर्धारित करेगी. उसी अनुरूप पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाएगा. आवश्यकतानुसार प्रोजेक्ट एवं लघु शोध प्रबंध इत्यादि के लिए फैकल्टी एवं स्टूडेंट्स एक्सचेंज कार्यक्रमों को भी संचालित किया जाएगा. दोनों विश्वविद्यालय की संयुक्त टीम मिलकर शोध जर्नल भी प्रकाशित करेंगे. बैठक में सभी आयामों को क्रियान्वित करने के लिए अलग-अलग समितियों को गठित करने के लिए भी सहमति बनी.

कोलैबोरेटिव शोध परियोजनाओं, पेटेंट एवं स्किल पाठ्यक्रमों की दिशा में भी होगी साझेदारी

बैठक में चर्चा की गई कि आगामी चरण में दोनों विश्वविद्यालय कोलैबोरेटिव शोध परियोजनाओं, पेटेंट एवं स्किल पाठ्यक्रमों की दिशा में भी आगे बढ़ेंगे. दोनों विश्वविद्यालय अपने संसाधनों की साझेदारी के माध्यम से अकादमिक रिसर्च, प्रोजेक्ट्स, लघु शोध प्रबंध इत्यादि की दिशा में मिलकर कार्य करेंगे. जिससे शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को लाभ मिलेगा.

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि दोनों विश्वविद्यालय ज्ञान, संस्कृति, सामाजिक सरोकार और संसाधनों के पारस्परिक विनिमय के माध्यम से प्रभावी पाठ्यक्रमों को निर्मित करने का प्रयास करेंगे जिससे दोनों विश्वविद्यालय के विद्यार्थी एवं हितधारक इसका भरपूर लाभ ले सकें. भविष्य में मूल्य शिक्षा, आउटरीज कार्यक्रम, दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम आदि से संबंधित नए डिप्लोमा, प्रमाण पत्र, पीजी डिप्लोमा, अल्पकालिक पाठ्यक्रम आदि भी प्रारम्भ किये जायेंगे. कोलैबोरेटिव रिसर्च के तहत विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों को संचालित किया जाएगा और इसके लिए राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों से वित्त पोषण के लिए भी प्रयास किये जायेंगे.

इस अवसर पर सीयूएचपी के कुलपति प्रो. बंसल ने कहा कि इस अकादमिक एवं शोध समझौते के माध्यम से दोनों विश्वविद्यालय एक नया अध्याय लिखने जा रहे हैं. उन्होंने कहा कि किसी भी अकादमिक समझौते को सफल तब मन जा सकता है जब वह पूर्ण रूप से क्रियान्वित हो और उसका उद्देश्यपरक परिणाम निकले. उन्होंने कहा कि जिन-जिन क्षेत्रों में दोनों विश्वविद्यालयों की विशेषज्ञता है उन क्षेत्रों में शोध, अनुसंधान, प्रोजेक्ट्स, सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम, फैकल्टी एवं स्टूडेंट्स एक्सचेंज प्रोग्राम के माध्यम से इस समझौते को क्रियान्वित किया जाएगा. इसके निश्चित ही सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे.

बैठक में विश्वविद्यालय के अकादमिक अफेयर्स निदेशक प्रो. नवीन कानगो, प्रो. श्वेता यादव, प्रो. वन्दना सोनी, प्रो. सुशील काशव, प्रो. विनोद भारद्वाज, प्रो. एम एल खान, प्रो. अनिल जैन, प्रो. दिवाकर शुक्ला, प्रो. बी आई गुरु, प्रो. यू के पाटिल, डॉ. केशव टेकाम उपस्थित थे. सीयूएचपी प्रतिनिधि मंडल में प्रो. विशाल सूद, प्रो. प्रदीप कुमार, प्रो. सुमन शर्मा, डॉ. महेश, प्रो. सुनील मौजूद थे.

अश्वगंधा के उपयोग के लिए जागरुकता अभियान कार्यक्रम का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग ने जिला आयुष चिकित्सालय, सागर के साथ मिलकर अश्वगंधा के औषधीय गुणों से शिक्षकों और विद्यार्थियों को अवगत कराने के लिए एक जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया.

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, भारत सरकार, नई दिल्ली के अन्तर्गत अश्वगंधा कैंपेन के तहत जिला आयुष चिकित्सालय, सागर के चिकित्सक डॉ. आशीष पटेल एवं डॉ. कीर्ति पटेल ने अश्वगंधा के औषधीय गुणों एवं उसके उपयोग पर व्याख्यान दिया. कार्यक्रम में विद्यार्थियों के बीच अश्वगंधा पर चित्रकला एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कराई गयी एवं विजेताओं को आयुष विभाग, सागर की ओर से पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किये गये. साथ ही सभी उपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को अश्वगंधा के पौधे प्रदान किए गए. कार्यक्रम में आयुष विभाग, सागर की ओर से राकेश यादव, स्टाफ नर्स एवं छत्रसाल शर्मा, योग सहायक का भी सहयोग रहा. अश्वगंधा के उपयोग एवं आर्थिक उपार्जन को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार के आयुष विभाग की तरफ से एक मुहिम चल रही है. इसी के तहत इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के शिक्षक और विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया.

भारतीय ज्ञान परम्परा जीवन का आधार एवं कौशल हेतु शिक्षा ही जीवनोपयोगी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा उच्च शिक्षा में शिक्षण प्रशिक्षण एवं शोध विषय पर भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित दो सप्ताह तक चलने वाले क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के द्वितीय दिवस पर महत्वपूर्ण व्याख्यानों का आयोजन विभिन्न तकनीकी सत्रों में किया गया. क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के दूसरे दिन प्रथम तकनीकी सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में भोपाल से पधारे प्रो. नीलाभ तिवारी ने भारतीय ज्ञान परंपरा औऱ उच्च शिक्षा में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया विषय पर व्याख्यान दिया जिसमें अपने वक्तव्य में प्रो. तिवारी ने प्राचीन भारतीय 16 संस्कार के वैज्ञानिक पहलूओं पर प्रकाश देते हुए मुख्य रूप से बालक के सर्वांगीण विकास के साथ

बालक के समग्र विकास की बात की जिसमें उन्होंने मन के भाव पक्ष एवं बुद्धि पक्ष पर जोर देते हुए युवाओं को दायित्वबोध परक शिक्षा देने पर बल दिया. विकास पर और गहन वार्ता करते हुए उन्होंने पंचकोशात्मक विकास, अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनंदमय कोश को समझाते हुए अधिगम के भारतीय पंचपदीय चरण अधिति, बोध, अभ्यास, प्रयोग, एवं प्रसार को व्यवहारिक जगत के उदाहरण से जोड़ते हुए पश्चिमी विकास के सिद्धांत से तुलनात्मक स्वरूप प्रस्तुत किया. इस सत्र का समन्वयन शिक्षाशास्त्र विभाग के शोधार्थी शशांक नामदेव ने, अध्यक्षता डॉ. प्रवीण कुमार टी. डी. ने और धन्यवाद ज्ञापन प्रतिभागी डॉ. मोहना सुशांत पंडित ने किया.

द्वितीय तकनीकी सत्र में शिक्षाशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन ने मुख्य वक्ता का प्रतिभागियों से परिचय कराया. विषय विशेषज्ञ के रूप में गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय के मूर्धन्य प्रो. सुजीत मिश्रा जी ने 'नैनो एक्शन टीचिंग फ़ॉर कंपेटेंसीज' विषय पर रुचिपूर्ण एवं विस्तृत व्याख्यान दिया. प्रो. मिश्रा ने शिक्षक, शिक्षण तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और बेहतरीन शिक्षण की विशेषताओं पर चर्चा करते हुए सूक्ष्म शिक्षण कौशल के जगह 'नैनो एक्शन शिक्षण कौशल' की आवश्यकता पर बल दिया. उन्होंने तीन तरह के उदाहरण; विषयपरक उदाहरण, अध्यापक के अनुभवपरक उदाहरण और विद्यार्थी के जीवन से संबंधित उदाहरण से ही शिक्षण कराने का ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया. द्वितीय व्याख्यान सत्र का समन्वयन शिक्षाशास्त्र विभाग के शोधार्थी शशांक नामदेव ने और धन्यवाद ज्ञापन प्रतिभागी श्री शैलेंद्र विश्वकर्मा जी ने किया. तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रवीण कुमार टी. डी. ने की जिसमें शिक्षाशास्त्र विभाग की शोधार्थी विजयश्री जयसवाल ने मुख्य वक्ता के रूप में आई. ई. एच. ई. पधारे डॉ. महीपाल सिंह जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला. विषय विशेषज्ञ ने 'एन. ई. पी. 2020 और अधिगमकर्ताओं के कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण' शीर्षक पर वक्तव्य दिया. डॉ. महिपाल ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कौशल विकास के पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए तकनीकी कौशल, व्यावसायिक कौशल और मृदु (सॉफ्ट) कौशल के विकास पर परिचर्चा की और इस तरह के विभिन्न सरकारी कौशल कार्यक्रमों से अवगत कराया. इस तकनीकी सत्र का समन्वयन शिक्षा शास्त्र विभाग की शोधार्थी विजयश्री जायसवाल एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रतिभागी डॉ. यतीन कुमार जयसवाल जी ने किया. दूसरे दिन के अंतिम सत्र में प्रतिभागियों ने शिक्षाशास्त्र विभाग के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया जिसमें कार्यक्रम के सह निदेशक डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ ने प्रतिभागियों को विभाग के प्रमुख स्थलों का भ्रमण कराया और विभाग की विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया.

भाषा शिक्षण एवं लेखन की बारीकियां से ही सक्रिय पाठकों का निर्माण संभव

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा 'उच्च शिक्षा में शिक्षण, प्रशिक्षण एवं शोध' विषय पर भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित 4-15 फरवरी 2025 तक चलने वाले क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के तृतीय दिवस कुल चार तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया.

तीसरे दिवस के प्रथम तकनीकी सत्र में दर्शन शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने अपना मुख्य वक्तव्य 'अनुसंधान में तर्कों की समझ और सूत्रीकरण' विषय पर दिया, अपने वक्तव्य में उन्होंने तर्क (आर्ग्यूमेंट्स) और दावा (क्लेम) पर विस्तृत रूप से चर्चा करते हुए निगमनात्मक तर्क और आगमनात्मक तर्क को सोदाहरण समझाया. विषय विशेषज्ञ का स्वागत शोधार्थी श्री आशुतोष उपाध्याय, आतिथ्य परिचय व आभार ज्ञापन प्रतिभागी डॉ. विपुल भट्ट जी एवं सत्र का समन्वयन डॉ. प्रवीण कुमार टी. डी. ने किया.

द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रुप में अमरकंटक के केंद्रीय विश्वविद्यालय से पधारे आचार्य दिनेश कुमार ने 'विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली के क्रियान्वयन' विषय पर व्याख्यान देते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली के प्रावधानों की चर्चा कर करिकुलम एंड क्रेडिट फ्रेमवर्क फ़ॉर अंडरग्रेजुएट प्रोग्राम्स, अंडरग्रेजुएट सिंगल एंड डबल डिग्री क्रेडिट प्रोग्राम, बहुविषयक प्रोग्राम, विभिन्न वर्गों में अवार्ड के लिए न्यूनतम क्रेडिट आवश्यकता, मुख्य विषय और गौण विषय, अकादमिक बैंक क्रेडिट, उच्च शिक्षा में क्रेडिट प्रोग्राम के लेवल 5 से लेवल 10 तक के तकनीकी पहलू की व्याख्या करते हुए सीजीपीए और एसजीपीए के निर्धारण की प्रकिया से अवगत कराया.

अतिथि का स्वागत कार्यक्रम के सह निर्देशक डॉ. धर्मेंद्र कुमार सर्राफ ने किया और उड़ीसा के प्रतिभागी श्री तपन कुमार डुंगरी ने मुख्य अतिथि के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला व आभार ज्ञापन किया. द्वितीय व्याख्यान सत्र का समन्वयन शिक्षाशास्त्र विभाग के शोधार्थी दुष्यंत कुमार मार्को ने किया.

तृतीय तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में पधारी शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की सेवानिवृत्त प्रो. शोभा सिन्हा ने 'उच्च शिक्षा में विषय-वस्तु क्षेत्र के पठन' शीर्षक पर अपना वक्तव्य दिया. आपने भाषा शिक्षण, लेखन की बारीकियों पर चर्चा करते हुए सक्रिय पाठक वर्ग बनने और भाषा के महत्व को व्यावहारिक जीवन से जोड़ने के लिए प्रतिभागियों को अखबार के ख़बर की प्रतिकृति वितरित कर समझाया, साथ ही साहित्य की विधाओं की चर्चा की और पाठ्य बोध टेक्स्ट मोनिटरिंग, पुस्तकों के पढ़ने पर जोर देते हुए कहा कि सिर्फ पाठ्यक्रम केन्द्रित पुस्तक अध्ययन के अलावा व्यवहारिक जगत पर आधारित साहित्य भी पढ़ना चाहिए एवं समृद्ध पुस्तकालय की उपलब्धता पर बल दिया. आपने प्रतिभागियों को सत्र के दौरान कुछ पठन गतिविधियों के माध्यम से अनुभवात्मक क्रिया-कलाप भी कराया. इस सत्र में सह निर्देशक डॉ. धर्मेंद्र कुमार सर्राफ ने

अतिथि का स्वागत किया और शिक्षाशास्त्र विभाग की सहायक आचार्या डॉ. सावन कुमारी ने मुख्य वक्ता के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला. इस तकनीकी सत्र का समन्वयन शिक्षाशास्त्र विभाग की शोधार्थी भावना तिवारी एवं धन्यवाद ज्ञापन जम्मू एवं कश्मीर राज्य के प्रतिभागी डॉ. तबस्सुम मसूल जी ने किया.

अंतिम तकनीकी सत्र में क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के सभी प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय के समृद्ध जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय का भ्रमण कराया गया जिसमें प्रतिभागीयों को ग्रंथालय के विभिन्न अनुभागों जैसे सन्दर्भ अनुभाग, आगत-निर्गत अनुभाग, अनुसंधान अनुभाग, इलेक्ट्रॉनिक एवं पत्र-पत्रिका अनुभाग इत्यादि की विस्तृत जानकारी पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. मोहन टी. ए. एवं सहायक पुस्तकालाध्यक्ष डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने दी.

छात्राओं में आत्मविश्वास एवं मनोबल सम्वर्धन सशक्त राष्ट्र की आधारशिला – प्रो. नीलिमा गुप्ता

शोध एवं स्नातकोत्तर छात्राओं में आत्मविश्वास सम्बलन, अकादमिक प्रोत्साहन, मार्गदर्शन, बेहतर स्वास्थ्य, करियर गाइडेंस, इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी आधारित दक्षता तथा रोजगारपरक क्षमता विकास हेतु विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग द्वारा एक नया कार्यक्रम ग्लैड (ग्रोइंग, लर्निंग एंड अचीविंग ड्रीम्स) आरम्भ किया गया है। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के द्वारा इस कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन किया गया। उन्होंने भूगोल विभाग द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों की सराहना की और अपने बहुमूल्य सुझाव दिए। उन्होंने विभाग द्वारा किए जा रहे शोध, नवाचार और शैक्षणिक गतिविधियों की प्रशंसा की तथा इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश भी प्रदान किए। उन्होंने ग्लैड (ग्रोइंग लर्निंग एंड अचीविंग ड्रीम्स) कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह पहल छात्राओं के ज्ञान, अधिगम और उनके सपनों को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस कार्यक्रम के तहत छात्राओं को आधुनिक शैक्षणिक संसाधनों, व्यावहारिक प्रशिक्षण और शोध के अवसर प्रदान किए जाएंगे, जिससे वे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकें। उन्होंने यह भी कहा, "छात्राओं के सपनों को साकार करने के लिए आवश्यक है कि उन्हें सही मार्गदर्शन, आवश्यक संसाधन और बेहतर सीखने का वातावरण मिले। ग्लैड कार्यक्रम इस दिशा में बेहतरीन प्रयास है, जो विद्यार्थियों को उनके लक्ष्यों की ओर प्रेरित करेगा और उन्हें आत्मनिर्भर बनने में मदद करेगा।" उन्होंने कहा कि बड़े पैमाने पर महिला छात्राओं को लाभ पहुंचाने के लिए इस पहल को विश्वविद्यालय के अन्य विभागों तक बढ़ाया जाना चाहिए।

विभाग द्वारा संचालित वोइस (वाइब्रेंट ओपन इंटरैक्शन फॉर क्रिएटिव एक्सचेंज) कार्यक्रम पर चर्चा करते हुए कुलपति ने कहा कि यह एक अभिनव मंच है, जो विद्यार्थियों की रचनात्मकता को बढ़ावा देने के साथ-साथ उनके विचारों के आदान-प्रदान को भी सशक्त बनाता है। उन्होंने कहा कि संवाद, विचारों का आदान-प्रदान और रचनात्मक अभिव्यक्ति किसी भी राष्ट्र के बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक हैं। वोइस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को एक ऐसा मंच मिल रहा है, जहां वे अपने विचारों को साझा कर सकते हैं, नई संभावनाओं पर चर्चा कर सकते हैं और अपने कौशल को निखार सकते हैं। "छात्रों को अपनी बात रखने, विचारों को साझा करने और एक-दूसरे से सीखने का अवसर मिले, यह बहुत जरूरी है। वोइस कार्यक्रम विद्यार्थियों को न केवल बौद्धिक रूप से सक्षम बनाएगा, बल्कि उन्हें एक समावेशी समाज के निर्माण की दिशा में भी प्रेरित करेगा।"

अल्ट्रा परफॉरमेंस लिक्विड क्रोमैटोग्राफी (यूपीएलसी) पर हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में शोध की गुणवत्ता को बढ़ाने और वैश्विक पटल पर डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने के लिए उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) द्वारा अल्ट्रा

परफॉरमेंस लिक्विड क्रोमैटोग्राफी (यूपीएलसी) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन फॉरेंसिक साइंस विभाग में किया गया, जिसमें कुल 40 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया. उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं. व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता प्रो. देवाशीष बोस (प्रभारी शिक्षक) ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में अल्ट्रा परफॉरमेंस लिक्विड क्रोमैटोग्राफी और उन्नत उपकरणों के उपयोग की महत्ता को बताया. डॉ. अभिलाषा दुर्गवंशी ने अल्ट्रा परफॉरमेंस लिक्विड क्रोमैटोग्राफी तकनीक की महत्ता और तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत की जानकारी दी. उनके द्वारा सैम्पल तैयार करने और अनुप्रयोगों के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी

गई.हैंड्स ऑन सत्र डॉ. विवेक कुमार पांडे, सीएआर द्वारा अल्ट्रा परफॉरमेंस लिक्विड क्रोमैटोग्राफी उपकरण के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ. प्रो. देवाशीष बोस ने विभिन्न पृष्ठभूमि से सैम्पल तैयार करने पर विशेष जोर दिया. सैम्पल तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को 04 समूहों में विभाजित किया गया. प्रत्येक समूह ने सैम्पल तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया. प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई. प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया गया एवं उनका उत्तर दिया गया.

प्रतिभागियों द्वारा अल्ट्रा परफॉरमेंस लिक्विड क्रोमैटोग्राफी तकनीक पर संपूर्ण हैंड्स ऑन सत्र सीएआर तकनीकी टीम के डॉ. विवेक कुमार पांडे, श्री शिवप्रकाश सोलंकी, श्री साई कृष्णा, श्री सौरभ साह, श्री आशीष चढ़ार और श्री अरविंद चडार की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया गया.

उच्च शिक्षा में महिलाओं की नेतृत्त्वकारी भूमिका से बनेगा विकसित भारत- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली और राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रयागराज परिसर के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रयागराज में आयोजित ज्ञान महाकुंभ का आयोजन 10 जनवरी से 10 फरवरी तक किया गया जिसका उद्घाटन उत्तर प्रदेश के उप-मुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने किया. ज्ञान महाकुंभ में ही दिनांक 05-10 फरवरी तक हरित महाकुम्भ और 'भारतीय शिक्षा : राष्ट्रीय संकल्पना' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया.

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी ने ज्ञान महाकुंभ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि, इस अलौकिक महाकुंभ में ज्ञान महाकुंभ का आयोजन अपने आप में ही अद्भुत संयोग है. इस कार्यक्रम से पूरे देश की शिक्षा व्यवस्था को एक नई ऊर्जा और भारतीय ज्ञान परंपरा से युक्त दिशा मिलेगी. मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह-सरकार्यवाह डॉ कृष्ण गोपाल ने कहा कि हमारी ज्ञान परंपरा में एकांगी शिक्षा नहीं दी जाती थी, परंतु आज संपूर्ण विश्व एकांगी शिक्षा व्यवस्था से ग्रसित है. हमें समाज में एक बार फिर भारतीय ज्ञान परंपरा की चेतना का जागरण करना होगा. विशिष्ट अतिथि यूजीसी के पूर्व अध्यक्ष प्रो. डी. पी. सिंह ने कहा कि आध्यात्म विद्या सभी विधाओं में सर्वश्रेष्ठ है. भारतीय ज्ञान परंपरा आध्यात्म और शिक्षा का अद्भुत मिश्रण कर रही है और हमें इस परंपरा को एक बार फिर बल देना होगा.

इस आयोजन में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शिक्षा में शासन-प्रशासन की भूमिका विषय पर वक्तव्य देते हुए कहा कि यदि हम विकसित भारत की बात करते हैं तो हमें माननीय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की बात को स्मरण करना चाहिए जिसमें वे कहते हैं कि अगर हमें अपने भारत को विकसित भारत बनाना है तो हमारा शासन और प्रशासन बहुत ही चुस्त होना चाहिए. अगर हमारा प्रशासन अच्छा होगा तो हम भारत के लिए जो भी हमने सोचा है वह करने में हम सक्षम होंगे. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी इफेक्टिव गवर्नेंस एंड लीडरशिप फॉर हायर एजुकेशनल इंस्टिट्यूशन की बात की गई है. जब तक हमारी लीडरशिप अच्छी नहीं होगी तब तक हम विश्वविद्यालय अथवा किसी भी प्रकार की संस्था को आगे ले जाने में सक्षम नहीं हो पाएंगे. एक नेतृत्व कर्ता के रूप में हमें एक गुड गवर्नेंस प्रेक्टिस को अपनाना चाहिए और त्वरित निर्णय पर ध्यान देना चाहिए. एक प्रशासक के सामने बहुत सी मुश्किलें आती हैं लेकिन उन मुश्किलों का सामना करने के साथ ही त्वरित निर्णय लेना चाहिए. नियमों के मौजूद होने के बावजूद कई ऐसे प्रश्न आ जाते हैं जिनके लिए नीतियाँ बनानी पड़ती हैं. कुछ केंद्रीकृत मॉडल हमें मंत्रालय

उपलब्ध कराती है लेकिन संस्था या विश्वविद्यालय के स्तर पर भी हमें कुछ मॉडल्स बनाने पड़ते हैं. यही अच्छे गवर्नेंस की पहचान है.

उन्होंने कहा कि आज हम विकसित भारत के साथ ही विश्व गुरु भारत की भी बात कर रहे हैं. यह तभी संभव है जब हमारा प्रशासन बहुत अच्छा होगा. शिक्षक, स्टाफ, अधिकारी, छात्र हम सब लोगों को मिलकर ऐसा गवर्नेंस बनाना है, ऐसा वातावरण बनाना है जो समय और समाज के लिए हितकारी हो. एक महिला कुलपति होने के नाते मैं यह कहना चाहती हूँ कि उच्च शिक्षा में महिलाओं को नेतृत्त्वकारी भूमिका में और अधिक अवसर प्रदान किये जाने की आवश्यकता है. महिला नेतृत्व, सक्षम नेतृत्व है. हमें अपनी आधी आबादी की शक्ति को पहचानना होगा, उनकी क्षमता को अवसर देना होगा, उन्हें प्रोत्साहन के लिए कई स्तरों पर नीतियों का निर्माण करना होगा तभी हम गवर्नेंस को और अधिक बेहतर बना सकते हैं और विकसित भारत की संकल्पना को सम्पूर्णता में साकार होते देखेंगे.

समापन सत्र में इसरो के अध्यक्ष वी नारायण ने कहा कि मनुष्यता को प्राचीन भारत की देन अद्भुत है, सभी क्षेत्रों में भारत के योगदान को कभी नकारा नहीं जा सकता. भारत के इस अद्भुत ज्ञान का परिचय आज की युवा पीढ़ी से कराना बहुत आवश्यक है.आज हम सभी का कर्तव्य बनता है कि देश के प्राचीन ज्ञान और संस्कृति के आधार पर इसे विकसित राष्ट्र बनाएँ. समापन सत्र के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय दत्तात्रेय होसबाले ने कहा कि देश के शिक्षा क्षेत्र में ऐसा बदलाव चाहिए, जिससे भारत में भविष्य निर्माता, विद्यार्थियों में ज्ञान और जीवन मूल्य को स्थापित कर सके.इस आयोजन में उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, विश्व जागृति फाउंडेशन के वागीश स्वरूप, विनय सहस्रबुद्धे, साध्वी ऋतंभरा, राष्ट्रीय सेविका समिति की सीता अक्का, एनआईटी प्रयागराज के निदेशक प्रो आर.एस. शर्मा, म. प्र. राज्य निर्वाचन आयोग के आयुक्त मनोज श्रीवास्तव, राजस्थान उच्च शिक्षा विभाग के आयुक्त ओमप्रकाश बैरवा, हरियाणा उच्च शिक्षा आयोग के अध्यक्ष प्रो कैलाश शर्मा, इंदौर के महापौर पुष्यमित्र भार्गव, नीति आयोग के शिक्षा निदेशक डॉ. शसीमशाह, पद्मश्री आनंद कुमार आदि गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति विशेष रही.

विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित गौर ज्ञान संगम श्रृंखला की चार नवीनतम पुस्तकों का विमोचन

ज्ञान महाकुम्भ में दिनांक 09 फरवरी 2025 को डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर मध्य प्रदेश द्वारा प्रकाशित गौर ज्ञान श्रृंखला के अंतर्गत चार नवीनतम पुस्तकों मूल्य आधारित शिक्षा: चित्त एवं चरित्र संस्कार, भारतीय भाषालोक: वैविध्य एवं वैशिष्ट्य, शिक्षा एवं आत्मनिर्भर भारत: नीति से निर्मिति, भारतीय ज्ञान परम्परा: पद्धति एवं विमर्श का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया. इस आयोजन में मंचसीन अतिथियों में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल भाई कोठारी, प्रख्यात शिक्षा शास्त्री के. रघुनन्दन, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता एवं अन्य अतिथियों ने पुस्तकों का विमोचन किया. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के नेतृत्व और संपादन में प्रकाशित इन पुस्तकों के संपादक मंडल में प्रो. अजीत जायसवाल, डॉ. अनिल तिवारी, डॉ. संजय शर्मा और डॉ. शशिकुमार सिंह हैं. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न आयामों को समेकित करती हुई ये पुस्तकें भारतीय ज्ञान परम्परा, भारतीय भाषा, चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व

विकास और मूल्य शिक्षा पर केंद्रित हैं. इस अवसर पर देश के कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के कुलपति, शिक्षाविद, शिक्षा प्रशासक, शिक्षक, विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षक एवं विद्यार्थी प्रतिनिधि मौजूद रहे.

महाकुम्भ में लगा विश्वविद्यालय का स्टॉल, सुपर 30 के आनंद कुमार, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह-सरकार्यवाह डॉ कृष्ण गोपाल सहित ख्यातनाम शिक्षाविदों /विद्यार्थियों ने किया अवलोकन

पाठ्यक्रमों, गतिविधियों एवं उपलब्धियों की दी जानकारी

ज्ञान महाकुम्भ शिविर में विश्वविद्यालय का स्टॉल लगाया गया जिसमें अतिथियों, आगंतुकों, विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों, गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी प्रदान की गई. सुपर 30 के आनंद कुमार, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह-सरकार्यवाह डॉ कृष्ण गोपाल, देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, शिक्षाविदों और विद्यार्थियों ने स्टॉल का अवलोकन किया और विवि की अकादमिक एवं सह शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी ली. इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता एवं विश्वविद्यालय शिक्षक प्रतिनिधि उपस्थित रहे.

विश्वविद्यालय में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के द्वारा स्वास्थ्य पर कार्यशाला आयोजित

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के द्वारा स्वास्थ्य पर कार्यशाला आयोजित की गई. कार्यशाला में डॉ. सत्यनारायण यादव, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ, अर्चना योगायतन, नई दिल्ली, ने जीवनशैली को सुधारने के लिए योग व नैचुरोपैथी के लाभ बताए. उनके अनुसार भोजन प्राकृतिक, स्थानीय, मौसमी एवं ताजा होना चाहिए. हमें मौसम एवं स्वभाव के अनुरूप युक्ताहार लेना चाहिए. अनुशासित व्यक्ति, योगी या साधक को शुद्ध एवं सुपाच्य भोजन शुद्ध विचारपूर्वक एवं शुद्ध जगह पर लेना चाहिए. जैसा काम करते हैं उसके अनुरूप खाना चाहिए. उन्होंने योग व शारीरिक व्यायाम में अन्तर बताते हुए कहा कि योग में स्थिरता व आध्यात्मिकता होती है परन्तु व्यायाम पूरी तरह शारीरिक होता है. उन्होंने तीन एच हेल्थ, हैप्पीनेस एवं हॉरमनी पर जोर दिया. उनके अनुसार कृषि विद्या व ऋषि विद्या को बढ़ावा देने से देश का विकास होगा. कार्यक्रम में विभाग के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे.

तीन वर्षीय एवं पांच वर्षीय एकीकृत (ऑनर्स) विधि पाठ्यक्रमों को मिला विस्तार का अनुमोदन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में संचालित तीन वर्षीय एवं पांच वर्षीय एकीकृत (ऑनर्स) विधि पाठ्यक्रमों को भारतीय विधिज्ञ परिषद (बार काउंसिल ऑफ़ इण्डिया) से वर्तमान और अगले सत्र में विस्तार का अनुमोदन मिल चुका है. बार काउंसिल से प्राप्त स्वीकृति पत्र के अनुसार प्रत्येक पाठ्यक्रम में 60 सीट पर प्रवेश हेतु सत्र 2024-2025 एवं सत्र 2025-26 के लिए विस्तार का अनुमोदन प्रदान किया गया है. इसी के साथ पांच वर्षीय एकीकृत (ऑनर्स) विधि पाठ्यक्रम को अकादमिक सत्र 2006-07 से 2023-24 तक एवं तीन वर्षीय एलएलबी पाठ्यक्रम को अकादमिक सत्र 2012-13 से 2023-24 तक का भी अनुमोदन प्राप्त हो चुका है.

विवि के कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय ने बताया कि विश्वविद्यालय में पांच वर्षीय बी.ए. एलएलबी (ऑनर्स) एवं तीन वर्षीय एलएलबी पाठ्यक्रम संचालित है जिसकी प्रत्येक नए सत्र में प्रवेश के विस्तार हेतु अनुमोदन का प्रावधान है. इसके लिए बार काउंसिल ऑफ़ इण्डिया द्वारा निर्धारित शुल्क जमा करना होता है. विश्वविद्यालय के स्वीकृति हेतु प्रस्ताव पर बार काउंसिल ऑफ़ इण्डिया की विधि शिक्षा समिति ने यह अनुमोदन प्रदान किया है.

ऋषि विद्या और कृषि विद्या का प्रभावी एवं सामयिक उपयोग आवश्यक- डॉ. सत्यनारायण यादव

ऋषि विद्या और कृषि विद्या आधारित हमारी पारंपरिक प्रणाली के विकास एवं पुनर्जीवन से हम एक स्वस्थ मनुष्य, समाज और राष्ट्र की संकल्पना को साकार कर सकते हैं. उक्त उद्गार डॉ. सत्यनारायण यादव, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ, अर्चना योगायतन, नई दिल्ली ने डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के योग शिक्षा विभाग में आयोजित

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा समग्र स्वास्थ्य पर एक दिवसीय कार्यशाला में व्यक्त किए. डॉ. यादव ने कहा कि एलोपैथी से क्षणिक उपचार एवं लाभ मिलता है जबकि शरीर का निर्माण करने वाले प्राकृतिक तत्त्वों एवं प्रकृति से प्राप्त जड़ी बूटियों से ही वास्तविक स्वास्थ्य लाभ मिलता है. आजकल के दौर में रासायनिक उर्वरकों के अँधाधुँध प्रयोग से हमारी उपजाऊ भूमि, वायु एवं आहार रूप में धारण करने वाले शरीर तीनों का नुकसान हो रहा है. ऐसे दौर में हमें ऋषि विद्या और कृषि विद्या के प्रभावी एवं सामयिक उपयोग से स्वस्थ मनुष्य के निर्माण का प्रयास करना होगा.

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए दर्शनशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने कहा कि योग व सांख्य का दर्शन से गहरा संबंध है. दर्शनों के मूल में जो तत्त्व चिंतन है उसका आध्यात्मिक सैद्धांतिक पक्ष सांख्य है तो व्यवहारिक पक्ष योगशास्त्र है. मनुष्य अपार क्षमताओं का वाहक है परंतु अविद्या रूपी अज्ञान रूपी आवरण के कारण वह अपना वास्तविक स्वरूप नहीं पहचान पाता, अतः आधि व्याधि का शिकार होकर भोग विलास का जीवन जीकर चला जाना हैं ऐसे में योग विद्या और भारतीय ज्ञान परंपरा की व्यापक प्रचार प्रसार की आवश्यकता बढ़ जाती है.

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. नितिन कोरपाल ने कहा कि प्राचीन काल से ऋषियों द्वारा अनुभूत प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर अध्यात्म योग तथा आयुर्वेद की जो जीवन पद्धति विकसित की गई उसका आधुनिक काल में पर्याप्त ह्रास हुआ जिसके परिणाम स्वरूप मनुष्य का अधोपतन हुआ. आज हमें उन्ही प्राच्य विद्याओं की ओर वापिस लौटने की आवश्यकता महसूस हो रही है इसलिये योग, आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा की तरफ हमारा ध्यान बढ़ रहा है. स्वागत भाषण देते हुए डॉ. अरूण कुमार साव ने कहा कि योग शिक्षा का सभी विषयों से समन्वय एवं तालमेल हो सकता है. दर्शन एवं संस्कृत के अतिरिक्त आज चिकित्सा शास्त्र, मनोविज्ञान, मूल्य परक नैतिक शिक्षा एवं शिक्षा शास्त्र में योग विषय को लेकर शोध एवं नवाचार प्रारंभ हो चुका है.

कार्यक्रम में इफको के स्थानीय फील्ड ऑफीसर प्रतीक गुप्ता ने कृषि में उर्वरकों के उपयोग को कम करते हुए नैनो उर्वरकों के उपयोगिता का पक्ष प्रस्तुत किया.

ललित कला विभाग के विद्यार्थियों द्वारा इंडिया आर्ट फेयर नई दिल्ली का शैक्षणिक भ्रमण

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग के विद्यार्थियों का एक दल 07 से 08 फरवरी 2025 तक नई दिल्ली के शैक्षणिक भ्रमण पर रहा. विद्यार्थियों ने दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी इंडिया आर्ट फेयर का

अवलोकन किया, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय मूर्तिकार अनीश कपूर सहित देश-विदेश के शीर्ष समकालीन कलाकारों की कृतियाँ प्रदर्शित की गईं. इस प्रदर्शनी में कुल 150 कला दीर्घाओं ने अपनी बहुमूल्य कलाकृतियाँ प्रदर्शित कीं, साथ ही इसमें कलाकृतियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय बाजार भी उपलब्ध था. इससे विद्यार्थी समकालीन कला के नवाचार, माध्यम, प्रयोग और मूल्य से परिचित हो सके. इस अवसर पर विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय कलाकार उपस्थित थे. विद्यार्थियों के दल ने अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय किरण नादर संग्रहालय, साकेत, नई दिल्ली में प्रसिद्ध समकालीन कलाकार गुलाम मोहम्मद शेख की कृतियों का अवलोकन किया साथ ही प्रसिद्ध समकालीन कलाकार अनवर खान के स्टूडियो का भी अवलोकन किया जहां कलाकार अनवर खान ने स्वयं छात्रों

से मुलाकात की तथा उन्हें कला के माध्यम और नवाचार के बारे में विस्तार से बताया. इस समूह में कुल 20 छात्राएं और 07 छात्र थे तथा समूह का नेतृत्व विभागाध्यक्ष डॉ. बलवंत सिंह भदौरिया ने किया.

इस संदर्भ में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें भविष्य में कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में अधिक से अधिक योगदान देने के लिए प्रेरित किया.

देश, काल एवं परिस्थिति के अनुरूप हो अनुसंधान

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा 'उच्च शिक्षा में शिक्षण प्रशिक्षण एवं शोध' विषय पर भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित 4 से 15 फरवरी 2025 तक चलने वाले क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के नवम दिवस पर कुल चार तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया. नौवें दिवस के प्रथम तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, अर्थशास्त्र विभाग के सह-आचार्य डॉ. वी.एम. रेड्डी का स्वागत कार्यक्रम के सह निर्देशक डॉ. धर्मेंद्र कुमार सर्राफ ने किया. विषय-विशेषज्ञ ने अपने उद्बोधन में 'गुणात्मक और मात्रात्मक शोधों हेतु ओपन सोर्स विश्लेषणात्मक उपकरणों' विषय पर वक्तव्य देते हुए शोधों में सान्खिकीय अनुप्रयोग तथा विभिन्न विश्वलेषण उपकरणों का उपयोग किस प्रकार किया जाय, इसका अनुभवजन्य अभ्यास भी कराया. विद्वान अतिथि का परिचय शोधार्थी शशांक नामदेव एवं आभार ज्ञापन प्रतिभागी श्री अखिलेश सिंघल ने किया. प्रथम सत्र का समन्वयन शिक्षाशास्त्र विभाग की शोधार्थी विजय श्री जायसवाल ने किया. द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में कानपुर से पधारे सेवानिवृत्त प्रो. सुभाष चन्द्र अग्रवाल का स्वागत कार्यक्रम के सह निर्देशक डॉ. धर्मेंद्र कुमार सर्राफ ने किया. प्रतिभागी तबस्सुम रसूल ने मुख्य वक्ता के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला. मुख्य वक्ता ने 'प्रभावी शोध प्रस्ताव कैसे तैयार करें' विषय पर अपना वक्तव्य दिया. प्रो. अग्रवाल ने शोध प्रस्ताव निर्माण की प्रक्रिया का चरणबद्ध वर्णन करते हुए शोध समस्या का चयन, चरों के परिभाषिकरण, परिकल्पना, जनसंख्या एवं प्रतिदर्श चयन विधि को व्यवहारिक उदाहरण से समझाया. द्वितीय सत्र का समन्वयन एवं आभार ज्ञापन शिक्षाशास्त्र विभाग के शोधार्थी प्रशांत कुमार द्विवेदी ने किया. तृतीय तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रुप में भोपाल से पधारे डॉ. राजेश यादव रहे. उन्होंने 'अनुदान एवं शोध प्रस्ताव हेतु विद्वत्तापूर्ण लेखन कौशल और वित्तपोषण स्रोतों की पहचान' विषय पर अपना व्याख्यान दिया. अनुदान हेतु अनुसंधान प्रस्ताव पर चर्चा करते हुए शोध के उद्देश्य, शोध के प्रकार (ऐतिहासिक, सर्वे और प्रयोगात्मक) तथा शोधकार्य की

प्रक्रिया की चर्चा की. उन्होंने अनुदान प्रस्ताव लेखन के उद्देश्य, और चरणबद्ध रूप से अनुदान प्रस्ताव लेखन की प्रकिया को सउदाहरण समझाते हुए अनुदान प्रस्ताव लेखन के 8 मुख्य बिंदुओं से भी अवगत कराया. अतिथि विद्वान् का स्वागत शिक्षाशास्त्र विभाग के सहायक आचार्य डॉ. प्रवीण कुमार टी. डी. जी ने किया. आतिथ्य परिचय प्रतिभागी श्री प्रदीप कुमार यादव, धन्यवाद ज्ञापन शिक्षाशास्त्र के शोधार्थी संदीप कुमार पाठक ने और सत्र का समन्वयन शोधार्थी शशांक नामदेव ने किया.अंतिम एवं चतुर्थ तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता सेवानिवृत्त प्रो. सुभाष अग्रवाल ने 'आंकड़ों के संग्रहण हेतु अनुसंधान उपकरणों का निर्माण' विषय पर वक्तव्य देते हुए चर, मापन, मात्रात्मक तथा गुणात्मक आंकड़ो के संग्रहण के बारे में विस्तृत व्याख्यान दिया. उन्होंने अनुसंधान उपकरण निर्माण के प्रकिया को सउदाहरण समझाते हुए उपकरण के वैधता तथा विश्वसनीयता ज्ञात करने के बारे में भी बताया. इस सत्र की अध्यक्षता शिक्षाशास्त्र विभाग के सहायक आचार्य डॉ. प्रवीण कुमार टी. डी. ने किया. धन्यवाद ज्ञापन प्रतिभागी डॉ. अभय कुमार ने किया.

रेडियो एक अंतरंग जनमाध्यम, भाषाई समझ और संप्रेषण कौशल के साथ बना सकते हैं कैरियर विवि के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में विश्व रेडियो दिवस पर व्याख्यान का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में विश्व रेडियो दिवस के अवसर पर रेडियो में रोजगार की संभावनाएं विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की शुरुआत विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. विवेक जायसवाल ने स्वागत वक्तव्य के साथ की. उन्होंने रेडियो की भूमिका और महत्त्व पर अपनी बात

रखते हुए मुख्य वक्ता आकाशवाणी सागर और छतरपुर के प्रोग्राम हेड दीपक निषाद का परिचय दिया. डॉ अलीम अहमद खान ने विषय प्रवर्तन करते हुए रेडियो की वर्तमान प्रासंगिकता तथा रेडियो में रोजगार के इच्छुक छात्रों के लिए विशेष रूप से उनकी भाषाई पकड़ तथा उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला.

मुख्य वक्ता दीपक निषाद ने कहा कि आकाशवाणी अपने शुरुआती दौर से अब तक मुख्यतः सूचना, शिक्षा तथा मनोरंजन पर केंद्रित रहा है किंतु वर्तमान समय में यह केवल सूचना व संचार पर केंद्रित न हो कर राजस्व उत्पन्न करने की राह पर भी अग्रसर है. आज आकाशवाणी समाज के हर आयाम को समृद्ध करते हुए संगीत, लोक कला, लोक गीत आदि के विकास पर निरंतर कार्यरत है. साथ ही आकाशवाणी ने राष्ट्र के कृषि विभाग के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. उन्होंने वर्तमान समय में उठ रहे अत्यंत ही मुख्य व ज्वलंत प्रश्न जैसे कि आजकल रेडियो आकाशवाणी सुनता ही कौन है? के उत्तर में अपनी

बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि जिसके मन में भी ये प्रश्न हो कि आजकल रेडियो कोई नहीं सुनता उसके लिए मेरा एक

ही उत्तर है कि आपको हमारे देश के डेमोग्राफी (जनसांख्यिकी) की जानकारी नहीं है. हमारा देश मात्र 2–3 प्रतिशत शहरी क्षेत्र पर ही सिमटा नहीं है. देश की सर्वाधिक आबादी अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में ही निवास करती है और वे ही एक प्रकार से हमारे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं. वर्तमान समय में रेडियो की प्रासंगिकता तथा उसकी महत्ता पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि रेडियो आज एक अत्यंत ही अंतरंग माध्यम है जिसको निरन्तर सुनने से आप मल्टी टास्कर (बहुकार्यक्षम) बनते हैं. आज भी ग्रामीण आबादी बड़ी संख्या में किसान वाणी कार्यकम को सुनती है तथा डेढ़ सौ से दो सौ पोस्ट कार्ड वर्तमान के डिजिटल युग में आज भी आकाशवाणी केंद्रों में भेजे जाते हैं.

रेडियो में रोजगार की संभावनाएं विषय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि वे युवा जो रेडियो में रोजगार की इच्छा रखते हैं वे अपने आधारभूत कौशल पर विशेष रूप से ध्यान दें तथा दैनिक रूप से अपनी संप्रेषण शक्ति व भाषा पर अपनी मजबूती बनाएं. अच्छा बोलें, अच्छा सुनें, अच्छा लिखें. समर्पण भाव से अपनी सृजनशीलता व रचनात्मकता का विकास करें तथा अभ्यास करें. रेडियो में तमाम रोजगार की संभावनाएं निहित हैं जिनमें मुख्य रूप से रेडियो जॉकी (आरजे), रेडियो प्रेजेंटर (उद्घोषक), वॉयस ओवर आर्टिस्ट, अनुवादक (ट्रांसलेटर) जैसे तमाम पदों पर प्रत्येक वर्ष क्षेत्रीय तथा केंद्रीय पदों पर भर्तियां निकाली जाती हैं. इच्छुक युवा लगन व समर्पण भाव से अभ्यास तथा परिश्रम कर अपना कौशल विकास कर रेडियो में अपनी सेवा दे सकते हैं. व्याख्यान के पश्चात विभाग के छात्रों ने प्रश्न रखे जिनका उन्होंने समाधान किया. कार्यक्रम का संचालन विभाग की शोधार्थी अनुष्का तिवारी और आभार ज्ञापन शोधार्थी सलोनी शर्मा ने किया.

समृद्ध परंपराओं एवं विरासत से परिचय के अद्भुत स्रोत हैं संग्रहालय

विश्वविद्यालय में दो दिवसीय म्यूजियोलॉजी कार्यशाला का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में दो दिवसीय म्यूजियोलॉजी पर कार्यशाला का शुभारंभ दिनांक 13 फरवरी, 2025 को किया गया. इस कार्यशाला का उद्देश्य विश्वविद्यालय के संग्रहालयों की शिक्षा और शोध में भूमिका को रेखांकित करना है. कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली के अंतर्गत संचालित नेशनल म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री की निदेशक नाज़ रिज़वी, नेशनल म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री के वैज्ञानिक डॉ. शक्ति कुमार सिंह और क्षेत्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय (आरएमएनएच), भोपाल की प्रमुख एवं वैज्ञानिक डॉ. बीनिश रफ़त उपस्थित थे.

कार्यशाला से पूर्व अतिथियों को विश्वविद्यालय में स्थित विभिन्न संग्रहालयों जिनमें प्राणीशास्त्र संग्रहालय, अनुप्रयुक्त भूविज्ञान संग्रहालय, नृविज्ञान संग्रहालय, प्राचीन भारतीय इतिहास संग्रहालय, अपराधशास्त्र और फॉरेंसिक विज्ञान संग्रहालय, तथा गौर संग्रहालय का परिचय एवं कार्यों से अवगत कराया गया. अतिथियों ने इन संग्रहालयों में संरक्षित विविध और समृद्ध संग्रह का अवलोकन भी किया.

विश्वविद्यालय द्वारा महत्वपूर्ण ज्ञान भंडारों को संजोने और विस्तारित करने के प्रयासों की सराहना करते हुए डॉ. नाज़ ने कहा कि आज के समय में अपनी विरासत को संजोना और संरक्षित रखना इसलिए आवश्यक है कि आने वाली पीढियां हमारी समृद्ध विरासत को जान सकें. दुनिया के कई देशों में संग्रहालय बनाने की काफी अच्छी परम्परा है. आम तौर पर संग्रहालय एक अलग स्पेस होते हैं जहाँ दुर्लभ एवं प्राचीन वस्तुओं को प्रदर्शन के लिए रखा जाता है लेकिन डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय द्वारा एक अकादमिक संस्थान के नाते विभिन्न संग्रहालयों की स्थापना और गौर संग्रहालय की संकल्पना बहुत दूरदृष्टि वाली संकल्पना है. संग्रहालय ज्ञान के अद्भुत साधन हैं. शोध एवं ज्ञान प्रसार में इनका बहुत ही महत्त्व है. उन्होंने कहा कि ये संग्रहालय न केवल शैक्षणिक अध्ययन को समृद्ध करते हैं बल्कि स्कूल के छात्रों और आम जनता के लिए भी महत्वपूर्ण ज्ञान स्रोत हैं. उन्होंने संकाय सदस्यों, शोधकर्ताओं और छात्रों द्वारा इन संग्रहालयों को संरक्षित और विकसित करने में दिए गए योगदान की प्रशंसा की. अतिथियों ने यह भी उल्लेख किया कि विश्वविद्यालय के कुछ संग्रहालय अपने आप में अनूठे हैं जो भारत ही नहीं, बल्कि पूरे एशिया में विशेष स्थान रखते हैं. विशेष रूप से, अपराधशास्त्र और फॉरेंसिक विज्ञान संग्रहालय को एक दुर्लभ और महत्वपूर्ण संस्थान के रूप में चिह्नित किया गया.

कार्यशाला के दौरान संबंधित विभागों के प्रमुखों ने अपने संग्रहालयों की समृद्ध विरासत और ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला. कार्यशाला की संयोजक प्रो. श्वेता यादव ने विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर के दानशील योगदान और उच्च शिक्षा व अनुसंधान के प्रति उनकी दूरदर्शिता पर चर्चा की. कार्यशाला के आयोजक डॉ. राजकुमार कोईरी ने भी वैज्ञानिक और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन में ऐसे आयोजनों की महत्ता को रेखांकित किया.

प्रो. श्वेता यादव ने बताया कि माननीय कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के नेतृत्व में विश्वविद्यालय नेशनल म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर करने की तैयारी कर रहा है. इस साझेदारी के माध्यम से विश्वविद्यालय के संग्रहालयों का और अधिक समृद्धिकरण होगा, जिससे शोध और सार्वजनिक भागीदारी के अवसर

विस्तारित होंगे. कुलपति की दूरदृष्टि विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित संग्रहालयों को नई ऊंचाइयों तक ले जा रही है, जिससे वे अकादमिक उत्कृष्टता और ज्ञान प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें.

कार्यशाला के पहले दिन का समापन संग्रहालय शिक्षा को सुदृढ़ करने और अकादमिक संस्थानों व राष्ट्रीय संग्रहालयों के बीच गहरे सहयोग को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता के साथ हुआ. यह आयोजन विश्वविद्यालय द्वारा अपने संग्रहालयों को ज्ञान और सांस्कृतिक धरोहर के केंद्र के रूप में संरक्षित, विस्तारित और उपयोग करने के निरंतर प्रयासों में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में चिह्नित किया गया.

शिक्षित भारत ही विकसित भारत का पथ प्रदर्शक - कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा 'उच्च शिक्षा में शिक्षण प्रशिक्षण एवं शोध' विषय पर भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित 4 फरवरी 2025 से 15 फरवरी 2025 तक चलने वाले क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के अंतिम दिवस कुल चार सत्रों का आयोजन किया गया.

कार्यक्रम के बारहवें दिन के प्रथम तकनीकी सत्र में प्रतिभागियों द्वारा अपने-अपने शोध पत्रों का प्रदर्शन किया गया. बारहवें दिन के प्रथम तकनीकी सत्र में नौ प्रतिभागियों ने अपने शोध पत्र का वाचन किया. इस सत्र में डॉ. प्रवीण कुमार टी.डी. ने प्रतिभागियों के प्रस्तुतिकरणों का अवलोकन किया और सत्र का समन्वयन शिक्षाशास्त्र विभाग की शोधार्थी विजय श्री जायसवाल ने

किया. द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रुप में विश्वविद्यालय के वित्त अधिकारी श्री कुलदीपक शर्मा ने 'शिक्षा में वित्तीय विचार" पर अपना उद्बोधन दिया. अपने वक्तव्य की शुरूआत टेंडर के 'सामान्य वित्त नियम' से करते हुए संस्थान में टेण्डर प्राप्ति एवं टेण्डर जारी करने की प्रक्रिया पर व्यवहारिक रूप से अवगत कराया. उन्होंने 5 आर 'राइट क़्वालिटी, राइट क्वांटिटी, राइट प्राइज, राइट टाइम एंड प्लेस, राइट सोर्सेज' का भी ज़िक्र किया, साथ ही उन्होंने प्रतिभागियों के

विभिन्न शंकाओं का समाधान किया. मुख्य अतिथि का स्वागत कार्यक्रम के सह निदेशक डॉ. धर्मेंद्र कुमार सर्राफ ने, आतिथ्य परिचय शोधार्थी समीर अहमद वानी तथा आभार ज्ञापन शोधार्थी श्री शशांक नामदेव ने किया. द्वितीय तकनीकी सत्र का समन्वयन शिक्षाशास्त्र विभाग के शोधार्थी संदीप कुमार पाठक ने किया.

तृतीय सत्र में समापन सत्र का आयोजन किया गया. समापन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. मुख्य अतिथि के रूप में जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से पधारे प्रो. बी.एस. बालाजी रहे. कार्यक्रम के समापन सत्र में विश्वविद्यालय के वित्त अधिकारी श्री कुलदीपक शर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे. क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के निदेशक प्रो. अनिल कुमार जैन ने अतिथियों का स्वागत किया. अपने अध्यक्षीय उदबोधन में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने सभी प्रतिभागियों से संवाद करते हुए कहा कि शिक्षित भारत से ही विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त होगा. उन्होंने प्रतिभागियों से सीखे गए ज्ञान को उनकी कक्षा में लागू करने की बात कही. उक्त अवसर पर पूरे कार्यक्रम की डाक्यूमेंट्री प्रस्तुत की गयी, जिसकी माननीय कुलपति महोदया ने तारीफ की. कार्यक्रम में भिलाई के प्रतिभागी डॉ. मोहन सुशांत पंडित एवं उत्तराखंड के प्रतिभागी डॉ. विपुल भट्ट ने कार्यक्रम से संबंधित अपने अनुभव साझा किए. इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. बी.एस. बालाजी ने कहा कि डॉक्टर हमारा जीवन स्वस्थ बनाते हैं और शिक्षक हमें शानदार जीवन जीना सिखाते हैं. कार्यक्रम में प्रतिवेदन वाचन कार्यक्रम के सह निदेशक डॉ. धर्मेंद्र कुमार सर्राफ ने, आभार ज्ञापन डॉ. प्रवीण कुमार टी.डी. ने और मंच संचालन कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अभिषेक कुमार प्रजापति जी ने किया. उक्त अवसर पर विभाग के शिक्षक डॉ रश्मि जैन, डॉ पुष्पिता राजावत, डॉ नवीन सिंह एवं शिक्षाशास्त्र विभाग के परास्नातक विद्यार्थी और समस्त शोधार्थी उपस्थित रहे.

कार्यक्रम के अंतिम दिन के अंतिम तकनीकी सत्र में क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के सभी प्रतिभागियों ने आबचंद गुफा क्षेत्र भ्रमण का अनुभव प्रस्तुत किया. इस सत्र की अध्यक्षता शिक्षाशास्त्र के सहायक आचार्य डॉ. प्रवीण कुमार टी.जी. ने और सत्र का समन्वयन शोधार्थी समीर अहमद वानी ने किया.

स्पेक्ट्रोस्कोपिक इलिप्सोमीटर पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में स्पेक्ट्रोस्कोपिक इलिप्सोमीटर पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 35 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया. उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी. उन्होंने विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाली आगामी कार्यशालाओं की भी जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं. व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता प्रो. रणवीर कुमार और डॉ. प्रशांत शुक्ला (प्रभारी शिक्षक, स्पेक्ट्रोस्कोपिक इलिप्सोमीटर) ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में स्पेक्ट्रोस्कोपिक इलिप्सोमीटर तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय जैसे कि पोलराइज्ड लाइट और उसके प्रकार, लाइट पोलराइजेशन के तरीके, सिद्धांत, सैम्पल तैयार करने और अनुप्रयोगों जैसे कि थिन फिल्म की थिकनेस निकालना, रेफ्रेक्टिव इंडेक्स निकालना

और स्पेक्ट्रोस्कोपिक इलिप्सोमीटर के सुरक्षा प्रोटोकॉल आदि के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी.

हैंड्स ऑन सत्र श्री शिवप्रकाश सोलंकी और श्री सौरभ साह, सीएआर द्वारा स्पेक्ट्रोस्कोपिक इलिप्सोमीटर उपकरण के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ. प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई. प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया गया एवं उनका उत्तर दिया गया. सैम्पल तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को समूहों में विभाजित किया गया था. प्रत्येक समूह ने सैम्पल तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया.

स्पेक्ट्रोस्कोपिक इलिप्सोमीटर पर संपूर्ण व्यावहारिक सत्र सीएआर तकनीकी टीम के डॉ. विवेक कुमार पांडे, श्री शिवप्रकाश सोलंकी, श्री सौरभ साह, श्री आशीष चढ़ार, श्री अरविन्द चडार, श्री अविनाश त्रिपाठी और श्री चंद्रप्रकाश सैनी की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया गया.

म्यूज़ियोलॉजी में डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम शुरू होंगे

डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा रंगनाथन भवन में म्यूज़ियोलॉजी कार्यशाला के दूसरे दिन प्रतिष्ठित अतिथियों, शिक्षकों और छात्रों ने भाग लिया और संग्रहालय विज्ञान के विविध पहलुओं पर चर्चा की.

इस कार्यशाला में वाह्य विशेषज्ञ राष्ट्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय (एनएमएनएच), नई दिल्ली की निदेशक डॉ. नाज़ रिज़वी, डॉ. शक्ति कुमार सिंह (एनएमएनएच, नई दिल्ली) और डॉ. बीनिश रफ़त (क्षेत्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, भोपाल) ने भाग लिया जिसमें विभिन्न सत्रों में इतिहास, संस्कृति, फोरेंसिक विज्ञान और पर्यावरणीय स्थिरता में संग्रहालयों की भूमिका पर विचार-विमर्श किया गया.

कार्यशाला के दौरान प्रो. सुबोध जैन, डॉ. पंकज सिंह, प्रो. अथोक्पम कृष्णकांता सिंह और प्रो. देवाशीष बोस ने महत्वपूर्ण व्याख्यान दिए. उन्होंने विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक विकास, भूवैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण, और संग्रहालयों में फोरेंसिक तकनीकों के उपयोग पर चर्चा की. विशेष रूप से, डॉ. शक्ति कुमार सिंह ने 'लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट-एलआईएफई' पहल पर व्याख्यान दिया, जिसमें पर्यावरणीय स्थिरता और ईको-फ्रेंडली जीवनशैली को बढ़ावा देने पर बल दिया गया.

समापन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. उन्होंने विश्वविद्यालय के संग्रहालयों को राष्ट्रीय स्तर के संस्थान के रूप में विकसित करने की प्रतिबद्धता दोहराई और इन्हें विश्वविद्यालय की 'पांच अनमोल धरोहरें' बताया. उन्होंने एनएमएनएच और ईएमआरसी के सहयोग से विश्वविद्यालय संग्रहालयों पर एक दस्तावेज़ी फिल्म (डॉक्यूमेंट्री) बनाने का सुझाव दिया और म्यूज़ियोलॉजी में डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम शुरू करने की घोषणा की, जिससे छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण और रोज़गार के अवसर मिल सकें. इस अवसर पर डॉ. नाज़ रिज़वी ने संग्रहालयों की शैक्षिक भूमिका पर प्रकाश डाला और संग्रहालयों में प्रदर्शनी प्रबंधन के लिए '80/20 नियम' की व्याख्या की. धन्यवाद ज्ञापन और अतिथियों के सम्मान के साथ कार्यशाला का समापन हुआ.

यह कार्यशाला वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण में संग्रहालयों की भूमिका को रेखांकित करने के साथ-साथ अंतरविषयक (इंटरडिसिप्लिनरी) सहयोग और शैक्षणिक संवाद को भी प्रोत्साहित करने में सफल रही. इस दौरान एनएमएनएच के साथ

समझौता ज्ञापन (एमओयू) स्थापित करने की योजना पर भी चर्चा की गई, जिससे संग्रहालय विज्ञान में दीर्घकालिक अकादमिक और शोध सहयोग को मजबूती मिलेगी.

गैस क्रोमैटोग्राफी मास स्पेक्ट्रोमेट्री पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में शोध की गुणवत्ता को बढ़ाने और वैश्विक पटल पर डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने के लिए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में 19 फरवरी 2025 को उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में गैस क्रोमैटोग्राफी मास स्पेक्ट्रोमेट्री पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन केमिस्ट्री विभाग में किया गया. जिसमें कुल 35 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया. उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव की पहल पर विभिन्न उपकरणों पर विश्वविद्यालय में समय-समय पर कार्यशाला का आयोजन निरंतर किया जा रहा है. डॉ. विवेक कुमार पांडे, सीएआर ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं. व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. कल्पतरु दास (प्रभारी शिक्षक) ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में गैस क्रोमैटोग्राफी मास स्पेक्ट्रोमेट्री और उन्नत उपकरणों के उपयोग की महत्ता को बताया और तकनीक के सामान्य परिचय और सिद्धांत की जानकारी दी. डॉ. कल्पतरु दास ने बताया की इस तकनीक का उपयोग चिकित्सा विज्ञान, दवाओं की खोज, वातावरण प्रदूषण, पेट्रोलियम उद्योग एवं विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थो में कीटनाशकों और हानिकारक रसायनो की उपस्थिति को जानने के लिए किया जाता है.

हैंड्स ऑन सत्र डॉ. विवेक कुमार पांडे द्वारा गैस क्रोमैटोग्राफी मास स्पेक्ट्रोमेट्री उपकरण के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ. उनके द्वारा सैम्पल तैयार करने और अनुप्रयोगों के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी गई. डॉ. कल्पतरु दास ने विभिन्न पृष्ठभूमि से सैम्पल तैयार करने पर विशेष जोर दिया. सैम्पल तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को 02 समूहों में विभाजित किया गया. प्रत्येक समूह ने सैम्पल तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया. प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने और उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई. प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया गया एवं उनका उत्तर दिया गया.

प्रतिभागियों द्वारा गैस क्रोमैटोग्राफी मास स्पेक्ट्रोमेट्री तकनीक पर संपूर्ण हैंड्स ऑन सत्र सीएआर तकनीकी टीम के डॉ. विवेक कुमार पांडे, श्री शिवप्रकाश सोलंकी, श्री सौरभ साह, श्री आशीष चढ़ार, श्री अरविंद चडार, श्री स्वतंत्र अग्रवाल, श्री पंकज लाल कलार, श्री अंशुल चौधरी और प्रियंका अहिरवार की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया गया.

अजीम प्रेमजी फाउंडेशन में 09 विद्यार्थियों का चयन, प्लेसमेंट एवं स्टार्ट-अप सेल द्वारा संवाद सत्र आयोजित

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट एवं स्टार्ट-अप सेल द्वारा 18 फरवरी 2025 को अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के संवाद सत्र का आयोजन विश्वविद्यालय के रंगनाथन भवन में किया गया. इस आयोजन में मुख्य वक्ता के रूप में सुब्रत कुमार मिश्रा, फील्ड प्लेसमेंट हेड, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा उनकी संस्था द्वारा चयनित विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के 09 विद्यार्थियों के साथ-साथ बड़ी संख्या में उपस्थित विद्यार्थियों के साथ संवाद सत्र में चर्चा की गई जिसमें उन्होंने फाउंडेशन के कार्य एवं भारतीय शिक्षा तथा उसके उत्थान हेतु किये जा रहे कार्यों के संबंध में बताया.

संस्था द्वारा सुश्री लवली बैद्य, सुश्री सुप्रिया पाठक, सैयद हाशिम, आकांक्षा सिंह, गौरव मिश्रा, राजवर्धन सिंह दांगी, वैष्णवी सावले, अपर्णा डोंगसरे एवं सुरभी मिश्रा का चयन छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड एवं मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों में एसोसिएट रिर्सोस पर्सन के पद पर साढ़े चार लाख से पाँच लाख वार्षिक के सी.टी.सी. पर किया गया है. साथ ही विजय रिछारिया का चयन ई-साफ बैंक में एक्जीक्यूटिव ट्रेनी - ग्रेड बी 1 के पद पर चार लाख से पाँच लाख वार्षिक सी.टी.सी. पर किया गया है.

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने छात्रों के विभिन्न कंपनियों में चयन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का लक्ष्य न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है, बल्कि छात्रों को उद्योग से भी जोड़ना है, ताकि उन्हें बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त हो सके. आयोजन में विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट कोऑर्डिनेटर डॉ. अभिषेक बंसल ने बताया कि प्लेसमेंट सेल की संरक्षक एवं विश्वविद्यालय की कुलपति के प्रयासों के कारण ही यह सब संभव हो सका है. उन्होंने कहा कि प्लेसमेंट सेल निरंतर अच्छे प्लेसमेंट के लिए तत्पर रहा है एवं इस दिशा में लगातार कार्य कर रहा है. इस अकादमिक वर्ष आउटलुक ग्रुप, टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज, इसाफ बैंक, कारवाले डॉट काम, टाटा ए आई जी आदि कंपनियों द्वारा इस प्रकार की ड्राइव आयोजित की गयी है जिसमें तकरीबन 40 से अधिक विद्यार्थियों का चयन हुआ है.

असिसटेंट प्लेसमेंट कोऑर्डिनेटर डॉ. शालिनी चौइथरानी ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को प्लेसमेंट एवं स्टार्टअप सेल द्वारा किये जा रहे प्रयासों की जानकारी दी तथा विभिन्न प्लेसमेंट ड्राइव में सम्मिलित हो रहे विद्यार्थियों की सराहना की तथा अन्य विद्यार्थियों से भी प्लेसमेंट एवं स्टार्टअप सेल से जुड़ने की अपील की. कार्यक्रम का सफल संचालन गुरू दामन, शोधार्थी, वाणिज्य विभाग द्वारा किया गया. डॉ. बंसल एवं डा. चोइथरानी ने प्लेसमेंट हेतु अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के सुब्रत कुमार मिश्रा एवं श्रीमती शिफा खान एवं प्लेसमेंट ड्राइव में पधारे प्रियंक श्रीवास्तव एवं अभिषेक झा के प्रति आभार ज्ञापित किया.

नेहरूवियन थॉट्स इन लिटरेचर एंड हिस्ट्री पर पुनश्चर्या कार्यक्रम का शुभारंभ

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के मालवीय शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र में नेहरूवियन थॉट्स इन लिटरेचर एन्ड हिस्ट्री पर पुनश्चर्या कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ. कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. पंकज सिंह ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत किया और बताया कि इस कार्यक्रम में हमारे मध्य भारत वर्ष के लगभग 20 राज्यों से प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया है. उन्होंने बताया कि इतिहास दर्शन के बिना अधूरा है. यह कार्यक्रम 20 फ़रवरी से 6 मार्च तक चलेगा जिसमें प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल, प्रो. हेरम चतुर्वेदी, हितेंद्र पटेल और अनिल दत्त मिश्र जैसे भारत वर्ष के महान विद्वान इस कार्यक्रम में प्रतिभाग करेंगें. उन्होंने कहा कि आज जो चंद्रयान जैसी उपलब्धियां भारत प्राप्त कर रहा है, यह वास्तविक रूप में नेहरू का स्वप्न साकार हो रहा. कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध दर्शन शास्त्री अंबिकादत्त शर्मा ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया और बताया कि आज हम उसी देश के आज़ादी का अमृतकाल मना रहें हैं, जिसके गठन की जिम्मेदारी पंडित जवाहर लाल नेहरू पर थी, और आज 75 वर्षों में जहां यह देश पहुंचा उस रास्ते का निर्माण पंडित नेहरू ने किया. अपने वक्तव्य के दौरान प्रो. शर्मा ने बताया कि 19वीं शताब्दी भारत सृजनात्मकता के पुनर्जागरण के चरम स्थिति पर था. नेहरू के लेखन कौशल पर बात करते हुए बताया कि नेहरू की डिस्कवरी ऑफ इंडिया दुनिया की सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली पुस्तकों में से एक है और इसे प्रत्येक अध्ययनशील व्यक्ति को पढ़ना चाहिए, और साथ ही नेहरू के जन्म का जिक्र करते हुए बताया कि नेहरू का जन्म एक संत के आशीर्वाद से हुआ था. उन्होंने बताया कि आइडिया ऑफ भारत नेहरू की संकल्पना थी, जो धर्म से पोषित विज्ञान के अनुप्रेरित था. उन्होंने बताया कि जिस समय नेहरू देश के प्रधानमंत्री बने इस समय देश में एक बहुत बड़ी आबादी को कफ़न तक नसीब नहीं होता था, और नेहरू ने अपने कौशल एवं साहस का परिचय देते हुए इस देश को संवारा है. अपने वक्तव्य का समापन इस वाक्य के साथ किया कि नेहरू के प्रति हमें समालोचनात्मक होना चाहिए और यह अधिकार स्वयं हमें नेहरू प्रदान करते है.इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार ने अपने वक्तव्य के माध्यम से बताया कि नेहरू ने इस देश की नींव रखी और दिशा को तय करने के साथ देश के सभी वर्ग एवं विचारों का नेतृत्व किया. अपने वक्तव्य के दौरान प्रो. अहिरवार ने नेहरू और सरदार पटेल के रिश्तों और विचारों की एकरूपता पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला और बताया कि जो आज भी भारत में लोकतंत्र इतना मजबूज है, यह नेहरू की देन है. प्रो. अहिरवार ने बताया कि हमें देश के नायकों को याद रखना चाहिए नहीं तो आज़ादी कब गुलामी में तब्दील हो जाती है, पता नहीं चलता. कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति के प्रतिनिधि के तौर पर प्रो. बी.के. श्रीवास्तव ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सर्व प्रथम इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. पंकज सिंह की सराहना की एवं बधाई दी. उन्होंने कहा कि नेहरू के योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है.

आज के भारत का साकार रूप जो दिख रहा वह नेहरू के स्वप्न का साकार होना है. प्रो. आर.टी. बेंद्रे ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों के प्रति आभार प्रकट कर कार्यक्रम का समापन किया गया. इस कार्यक्रम में इतिहास विभाग के सहायक आचार्य संजय बारोलिया एवं इतिहास विभाग के शोधार्थी अदिति बुंदेला, आशू अहिरवार, अभिलाषा, अखिलेश सेन, अतुल सिंह चंदेल, करुणा सिंह राजपूत, अम्बुज कुमार श्रीवास्तव, विशेष जोठे, अभय सिंह

चौहान, विजय प्रकाश और शिवानी प्रजापति उपस्तिथ रहे. इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन उर्दू विभाग के सहायक आचार्य डॉ. वसीम अनवर ने किया.

आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस एण्ड इट्स एप्लीकेशन विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग द्वारा विशेष व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत 'आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस एण्ड इट्स एप्लीकेशन' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन दिनांक 20.02.2025 को किया गया. इस व्याख्यान में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. अतुल एम. गोंसाई, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात उपस्थित थे.कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि अतुल एम. गोंसाई, प्रो. आर. के. गंगेले अधिष्ठाता, गणितीय एवं भौतिकी विज्ञान और कार्यक्रम के आयोजक डॉ. अभिषेक बॅसल, विभागाध्यक्ष कम्प्यूटर विज्ञान एवं

अनुप्रयोग ने द्वीप प्रज्वलित कर किया. कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में विभागाध्यक्ष डॉ. बॅसल ने एआई के दैनिक उपयोग में होने वाले विभिन्न अनुप्रयोग पहलुओं पर चर्चा की. उन्होंने बताया कि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के प्रयासो से एआई में स्नातकोत्तर डिग्री (एमएससी इन एआई एण्ड बीडीए) जुलाई 2025 सत्र से कम्प्यूटर विभाग में शुरू किया जा रहा है. जिसका रजिस्ट्रेशन सीयूईटी–पीजी से प्रारम्भ हो चुका है. प्रो. आर.के. गंगेले ने इस कोर्स की सराहना करते हुए बताया कि एआई टेक्नोलॉजी में दक्षता हासिल कर विद्यार्थी आगामी समय में अच्छे पैकेज पर प्लेसमेंट के अवसर प्राप्त कर सकेंगे. प्रो. गोंसाई ने अपने व्याख्यान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस) एवं मशीन लर्निंग के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की. उन्होने बताया कि एआई केवल एक तकनीकी अवधारणा नहीं है, बल्कि यह आधुनिक जीवन के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है. उन्होंने एआई के स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यापार, साइबर सुरक्षा, कृषि, वित्तीय सेवाओं और औद्योगिक स्वचालन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे व्यापक प्रयोग पर प्रकाश डाला. उन्होने बताया कि मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग के माध्यम से कैसे डेटा से नई संभावनाएं उत्पन्न की जा रही हैं और इनका उपयोग भविष्य

में निर्णय लेने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने में किया जाएगा.व्याख्यान में कम्प्यूटर एप्लीकेशन विभाग के विद्यार्थी, शिक्षक और अन्य पाठ्यक्रम के शोधार्थी एवं संकाय के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित रहे. छात्रों ने प्रो. गोसाई से एआई में अनुसंधान और कैरियर के अवसरों को लेकर प्रश्न पूछे, जिनका उन्होनें विस्तृत उत्तर दिया. उन्होंने एआई में कैरियर निर्माण के लिए आवश्यक कौशल, शोध के नवीनतम रूझान और उद्योगों में एआई की मांग के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी साझा की. कार्यक्रम के अंत में श्री कमल कांत ने धन्यवाद ज्ञापित किया.

आर्थिक, सामाजिक सशक्तिकरण से ही विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त होगा - डॉ. वीरेंद्र कुमार

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली से प्राप्त निर्देशों के अनुपालन में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर म.प्र. में संचालित योजनाओं की समीक्षा कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में आयोजित किया गया. इस समीक्षा बैठक में डॉ. वीरेन्द्र कुमार जी, माननीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली एवं अध्यक्ष, डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, नई दिल्ली उपस्थित रहे. कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि सागर सांसद डॉ. लता वानखेड़े एवं विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति रही.

समीक्षा बैठक में डॉ. अम्बेडकर उत्कृष्टता केंद्र की समन्वयक प्रो. चंदा ने स्वागत वक्तव्य देते हुए केंद्र की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी साझा की. प्रो. राजेश गौतम ने डॉ. अम्बेडकर चेयर द्वारा की जा रही गतिविधियों एवं उल्लेखनीय कार्यक्रमों की विस्तारपूर्वक जानकारी दी.

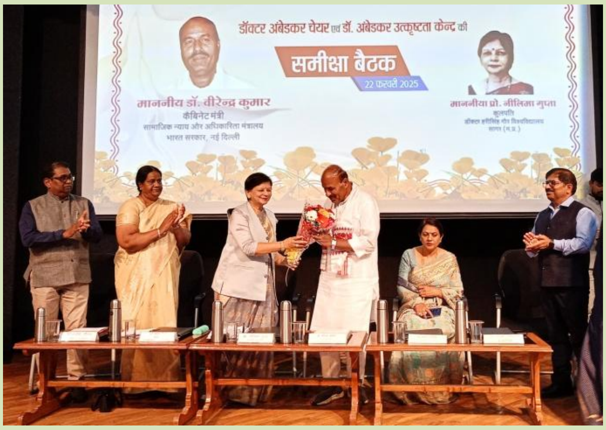

इसी क्रम में छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. डी.के. नेमा ने नशा मुक्त भारत अभियान का विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए विश्वविद्यालय के द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों एवं जागरूकता कार्यक्रमों की जानकारी दी.

सागर सांसद डॉ. लता वानखेड़े ने विश्वविद्यालय की गतिविधियों की सराहना करते हुए कहा कि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की योजनाओं एवं विभिन्न गतिविधियों के संचालन में आगे बढ़कर अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहा है. उन्होंने कहा कि नशा जैसी कुरीतियों को दूर करने के लिए बहुत व्यापक स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में इस कुरीति को दूर करके ही हम विकसित भारत के निर्माण में सहयोग कर सकते हैं.

इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि माननीय मंत्री डॉ. वीरेन्द्र सिंह जी का बुंदेलखंड और इस विश्वविद्यालय से विशेष लगाव है जिसके कारण हमें सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय से लगातार सहयोग मिल रहा है. मंत्रालय के सहयोग से ही हमने डॉ. अम्बेडकर उत्कृष्टता केंद्र, डॉ. अम्बेडकर चेयर जैसे दो केन्द्रों को शुरू किया तथा छात्रावासों के निर्माण कार्य को पूरा किया. विश्वविद्यालय ने बाबू जगजीवन राम छात्रावास योजना एवं अन्य कई योजनाओं के तहत विभिन्न प्रस्ताव मंत्रालय को भेजे हैं जिनमें पूरा सहयोग

हमें प्राप्त होगा. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विशेष आग्रह करते हुए कहा कि मंत्रालय द्वारा यूजीसी नेट हेतु कोचिंग की

स्कीम को फिर से शुरू की जाए ताकि इस अंचल के विद्यार्थियों को नेट परीक्षा में ज्यादा से ज्यादा सफलता मिल सके और साथ ही शोध पाठ्यक्रमों में उनका अधिक संख्या में प्रवेश हो सके क्योंकि अब पी-एचडी पाठ्यक्रमों में प्रवेश नेट परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर प्रारम्भ हो गया है.

विश्वविद्यालय समाज के सभी वंचित वर्गों के उत्थान के लिए लगातार कार्य कर रहा है. नशा मुक्त भारत और विकसित भारत की दिशा में ठोस ढंग से कार्य कर रहा है और हम मंत्रालय और सांसद महोदया के सहयोग से और आगे बढ़कर विकसित भारत की दिशा में योगदान कर पायेंगे.

केंद्रीय मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार जी ने कहा कि मुझे सागर शहर और इस विश्वविद्यालय में आना सबसे ज्यादा सुकून देता है. यहाँ आने पर अतीत की स्मृतियाँ ताजा हो जाती हैं. अपनी माटी से ही अपनी पहचान है. आत्मीयता की अनुभूति सबसे अधिक अपनी मिट्टी और अपनी धरती पर ही होती है. उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रगति और उपलब्धियों की सराहना की. उन्होंने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आपके भीतर बहुत ऊर्जा और क्षमता है. अपनी प्रतिभा को निखारिये और देश के काम में स्वयं को संलग्न कीजिये. उन्होंने कहा कि नशा मुक्त भारत अभियान को और आगे बढ़ाने के लिए ऐसे गावों और क्षेत्रों को चिन्हित कीजिये जहां जागरूकता और विकास की सबसे ज्यादा आवश्यकता है.

उन्होंने सागर सांसद रहते हुए अपने कई कार्यक्षेत्रों और जैसे राजघाट परियोजना, लाखा बंजारा झील को राष्ट्रीय संवर्धन योजना में शामिल कराना, राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजना में सागर को शामिल करना, सागर विश्वविद्यालय को केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में अपग्रेड करने जैसे कई महत्त्वपूर्ण कार्यों में संलग्नता को स्मरण किया. उन्होंने कहा कि सागर में एक समय पानी की बहुत कमी थी. पानी के मूल्य को समझना हम सबका कर्तव्य है. इससे वर्तमान एवं भविष्य दोनों जुड़ा है. उन्होंने विश्वविद्यालय में स्थापित डॉ. गौर संग्रहालय को विकसित करने हेतु सुझाव देते हुए कहा कि संग्रहालय अतीत से भविष्य को जोड़ता है इसलिए इसे भव्य रूप में बनाएं और विकसित करें. उन्होंने सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की कई योजनाओं की चर्चा की और कहा कि मंत्रालय की विभिन्न योजनायें कई आयामों पर कार्य करती हैं. सभी को इससे परिचित और जागरूक होना चाहिए. आर्थिक, सामाजिक सशक्तिकरण से ही विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त होगा. उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की विकसित भारत निर्माण की संकल्पना को साकार करने में युवाओं की भूमिका को महत्त्वपूर्ण बताया और कहा कि जब तक योजनाओं का क्रियान्वयन सफलतापूर्वक नहीं होगा तक तक समाज सशक्त नहीं हो सकता.

पुरा छात्र केन्द्रीय मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार एवं सांसद लता वानखेड़े का शिक्षकों ने किया स्वागत

इस अवसर पर पुरा छात्र केन्द्रीय मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार एवं सांसद डॉ. लता वानखेड़े का विश्वविद्यालय के प्रो.वाय. एस. ठाकुर, प्रो. डी. के. नेमा, प्रो अजीत जायसवाल, डॉ पंकज तिवारी, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. राजेन्द्र

यादव, प्रो. कालीनाथ झा, प्रो. यू. के. पाटिल, प्रो. उत्सव आनंद, प्रो. कासव, डॉ. टेकाम, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. रानी दुबे, डॉ.रश्मि जैन, डॉ. विवेक जायसवाल आदि विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, शोधार्थी एवं कर्मचारियों ने पुष्प गुच्छ एवं मालाओं से भव्य स्वागत किया.

कार्यक्रम का संचालन डॉ. शालिनी चोइथरानी ने किया और आभार ज्ञापन कुलसचिव डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय ने किया.

एनसीसी कैडेट्स ने दिया गार्ड ऑफ़ ऑनर, गौर समाधि पर अतिथियों ने दी पुष्पांजलि

विश्वविद्यालय में डॉ. वीरेंद्र कुमार, कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता एवं अतिथियों के आगमन पर विश्वविद्यालय के एनसीसी कैडेट्स ने गार्ड ऑफ़ ऑनर दिया. सभी अतिथियों ने गौर समाधि स्थल पहुँचकर विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. गौर को पुष्प अर्पित कर नमन किया.

नशा मुक्त भारत पर आधारित नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति

विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा नशा मुक्त भारत पर आधारित नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति दी.

गौर संग्रहालय का किया अवलोकन

कैबिनेट मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार, कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता एवं अन्य अतिथियों ने गौर संग्रहालय का अवलोकन किया. प्रो. श्वेता यादव, प्रो. नवीन कानगो एवं डॉ. गौतम प्रसाद ने संग्रहालय के विभिन्न प्रभागों के बारे में जानकारी दी.

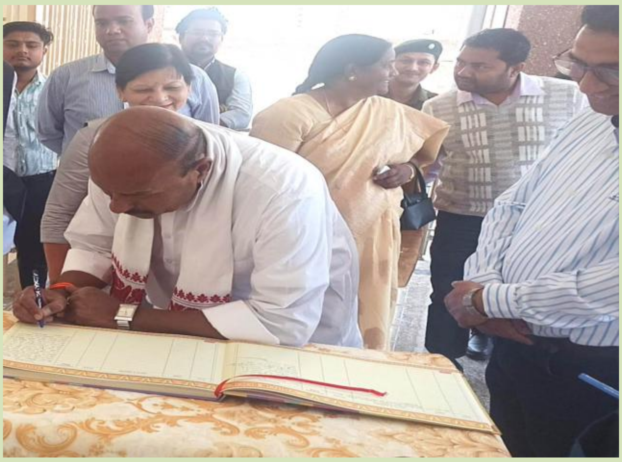

वैदिक अध्ययन विभाग के जीतेन्द्र ने पहले प्रयास में नेट परीक्षा उत्तीर्ण की

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की दूरदर्शी कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन हेतु कुछ नवीन विभागों का प्रारम्भ पिछले अकादमिक सत्र में प्रारम्भ किया था। उन विभागों ने एक ही वर्ष में फल देना प्रारंभ कर दिया। वैदिक अध्ययन विभाग के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चल रहा है, जिसका अभी केवल एक ही सेमेस्टर समाप्त हुआ। प्रथम सेमेस्टर के छात्र जीतेन्द्र सिंह दांगी ने पहले ही प्रयास में नेट की परीक्षा उत्तीर्ण कर विश्वविद्यालय में अध्यापन हेतु असिस्टेंट प्रोफेसर की योग्यता प्राप्त कर ली है।

विभागाध्यक्ष प्रो. दिवाकर शुक्ला ने जीतेन्द्र को बधाई देते हुए बताया कि इस विभाग की स्थापना के बाद से ही विश्वविद्यालय की कुलपति महोदया इस नवीन विभाग के प्रति आशान्वित थीं। विभाग के शिक्षकों डॉ. आयुष गुप्ता एवं डॉ. शिवानी खरे ने भी जीतेन्द्र को उनकी इस उपलब्धि हेतु बधाइयां दीं।

जीतेन्द्र ने कहा कि अध्यापकों की लगन और माता पिता के आशीर्वाद से उन्होंने यह सफलता अर्जित की। उन्होंने बताया कि भारतीय ज्ञान परम्परा को पढ़ना अपने आप में एक गौरव का विषय है। संस्कृत और भारतीय दर्शन हमारी धरोहर है। अध्यापकों ने वेदों, प्राचीन शास्त्रों, दर्शन में निहित विज्ञान, अर्थव्यवस्था, गणित भारतीय ज्ञान प्रणाली को इतने स्पष्ट रूप से समझाया कि यह विश्वास हुआ कि हमारे प्राचीन भारतीय ऋषियों ने इतने अद्भुत ज्ञान का सृजन किया। हम केवल पाश्चात्य अंधानुकरण के कारण अपने ऋषियों के योगदान को देख नहीं सके। भारतीय ज्ञान परम्परा में स्नातकोत्तर करने का निर्णय मेरे जीवन का एक उत्तम निर्णय है।

मातृभाषा हमारे रक्त की भाषा है - प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग और राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में आचार्य नंददुलारे वाजपेई सभागार में 'मातृभाषा: सांस्कृतिक पहचान एवं ऐतिहासिक महत्व' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती और डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुई। प्रो. राजेन्द्र यादव ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने भाषा के महत्व और उसकी उपयोगिता को लक्षित करते हुए अपने विचार सभी से साझा किए। विषय प्रवर्तन डॉ. संजय नाइनवाड ने किया। कार्यक्रम में गरिमा यादव, कंचन सोनी, तनु झा, अंकित सिंह, अभय सिंह, दीपाली, आशीष, गोलू सेन इत्यादि विद्यार्थियों ने भी अपनी अपनी मातृभाषाओं जैसे कि अवधी, बुंदेली, भोजपुरी, बघेली, मैथिली तथा बंगाली में गायन, हास्य गीत एवं भाषण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो.आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने विभाग में बुंदेली पीठ और ईसुरी पत्रिका द्वारा हो रहे कार्यों पर ध्यान आकर्षित किया और उन्होंने कहा कि अपनी मातृभाषा पर हमें गर्व करना चाहिए क्योंकि मातृभाषा हमारे रक्त की भाषा है। मातृभाषा मनुष्य की सहज अभिव्यक्ति का सबसे बड़ा माध्यम है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के राजभाषा अधिकारी

श्री संतोष सोहगौरा ने सभी को अपनी शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम का संयोजन और संचालन डॉ. हिमांशु कुमार ने किया। विभाग के प्राध्यापकों में डॉ अरविन्द कुमार, डॉ अफ़रोज़ बेगम, डॉ लक्ष्मी पाण्डेय तथा डॉ अवधेश कुमार ने भी अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम में हिंदी और अन्य विभागों के शोधार्थी और विद्यार्थी बड़ी संख्या में मौजूद रहे। कार्यक्रम में तकनीकी सहयोग शोधार्थी-सूर्यकांत प्रजापति, अंकित भारद्वाज, गोविंद सिंह, सुरेंद्र तिवारी, सृष्टि सिंह, शुभांगी और प्रतिभा ने किया। राजभाषा प्रकोष्ठ के अभिषेक सक्सेना ने सबका आभार ज्ञापन किया।

विश्वविद्यालय इतिहास विभाग के पारस को जेआरएफ एवं विजय प्रकाश को नेट में मिली सफलता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के इतिहास विभाग के शोधार्थी पारस चौरसिया ने यूजीसी जेआरएफ एवं पीजी छात्र विजय प्रकाश सिंह ने यूजीसी नेट परीक्षा में सफलता प्राप्त की. नेट की परीक्षा में सफलता प्राप्त करने पर सहायक प्राध्यापक हेतु योग्यता प्राप्त कर ली है. छात्रों की इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सफल छात्रों को बधाई प्रेषित की है. विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. बी.के. श्रीवास्तव, डॉ. संजय बरोलिया, डॉ. पंकज सिंह सहित सभी शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने बधाई दी. विभागाध्यक्ष ने कहा कि छात्रों ने सार्थक प्रयास किया और यह उपलब्धि विभाग के लिए महत्वपूर्ण है. अन्य विद्यार्थी भी इससे प्रेरित होकर आने वाली परीक्षाओं में ज्यादा से ज्यादा संख्या में सफलता आर्जित करेंगे.

समकालिक थर्मल विश्लेषण (एसटीए) और थर्मोग्रैविमेट्रिक विश्लेषण (टीजीए) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में समकालिक थर्मल विश्लेषण (एसटीए) और थर्मोग्रैविमेट्रिक विश्लेषण (टीजीए) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया. जिसमें 35 प्रतिभागियों ने सहभागिता की. डॉ. विवेक कुमार पांडे ने सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी. उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को बताया. उन्होंने विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाली आगामी कार्यशालाओं की भी जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं. व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता प्रो. रणवीर कुमार (प्रभारी शिक्षक) ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में थर्मोग्रैविमेट्रिक

विश्लेषण (टीजीए) तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत, सैम्पल तैयार करने और सुरक्षा प्रोटोकॉल आदि के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी. थर्मोग्रैविमेट्रिक विश्लेषण एक उल्लेखनीय तकनीक है जिसका उपयोग विभिन्न फार्मास्यूटिकल, खाद्य, पर्यावरण और पेट्रोकेमिकल अनुप्रयोगों में उपयोग की जाने वाली सामग्रियों की विशेषता के लिए किया जाता है. थर्मोग्रैविमेट्रिक विश्लेषण आपके उत्पादों की संरचना, शुद्धता, अपघटन प्रतिक्रियाओं, अपघटन तापमान और अवशोषित नमी की मात्रा को मापता है. समकालिक थर्मल विश्लेषण (एसटीए) के साथ आपको अपने नमूने के बारे में अधिक संपूर्ण थर्मल जानकारी मिलती है, जिसमें एक्जोथिर्मिक और एंडोथर्मिक घटनाएं शामिल हैं.हैंड्स ऑन सत्र श्री शिवप्रकाश सोलंकी और श्री सौरभ साह, सीएआर द्वारा समकालिक थर्मल विश्लेषण (एसटीए) के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ. विभिन्न पृष्ठभूमि से सैम्पल तैयार करने पर विशेष जोर दिया गया. प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई. प्रो. रणवीर कुमार ने प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया एवं उनका उत्तर दिया. सैम्पल तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को समूहों में विभाजित किया गया था. प्रत्येक समूह ने सैम्पल तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया.

प्रतिभागियों द्वारा समकालिक थर्मल विश्लेषण (एसटीए) पर संपूर्ण व्यावहारिक सत्र सीएआर तकनीकी टीम के डॉ. विवेक कुमार पांडे, श्री शिवप्रकाश सोलंकी, श्री सौरभ साह, श्री आशीष चढ़ार, श्री अरविंद चडार और श्री चंद्रप्रकाश सैनी की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया गया.

भारतीय ज्ञान परम्परा में संगीत का स्थान केंद्र में हैं – प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का प्रारंभ हुआ. संगोष्ठी का प्रारंभ वैदिक गान एवं सरस्वती वंदना से हुआ तत्पश्चात सभी अतिथियों का सम्मान किया गया। उद्घाटन सत्र में डॉ अवधेश प्रताप सिंह तोमर जी ने संगोष्ठी के मूल उद्देश्य पर प्रकाश डाला, तत्पश्चात संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहीं विश्वविधालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने भारतीय ज्ञान परंपरा में संगीत के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि वैदिक संगीत और ध्वनि विज्ञान से प्रेरणा पाकर आज गर्भ में पल रहे बच्चे के लिए संगीत रचा जा रहा है जैसे कि पहले गर्भ चिन्तामणियों को गाया जाता था। राजा मान सिंह तोमर विश्वविद्यालय ग्वालियर की कुलगुरु डॉ स्मिता सहस्रबुद्धे जी ने अपना बीज वक्तव्य दिया। एमएसयू बड़ोदा से पधारे डा. राजेश केलकर ने भारतीय संगीत के ग्रंथों के महत्व पर प्रकाश डाला। संगीत विभाग के अध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार ने संगीत को अपने व्यक्तिगत अनुभवों से जोड़कर सभा

को संबोधित किया। सत्र के अंत में डॉ राहुल स्वर्णकार ने सभी विद्वानों का आभार प्रदर्शित किया। सत्र का संचालन अनुकृति रावत और मानवी श्रीवास्तव ने किया। संगोष्ठी के तकनीकी सत्र में राजा मानसिंह तोमर विश्वविद्यालय की कुलगुरू प्रो. स्मिता सहस्त्रबुद्धे जी ने व्याख्यान सह प्रदर्शन किया। अपने व्याख्यान में उन्होने राग के अनेको गुणों का बखान किया। उन्होने इतने सीमित समय में अनेक रागों को स्पष्ट किया। तबले पर संगत श्री शैलेन्द्र सिंह राजपूत एवं हारमोनियम पर संगत स्तुति खम्परिया ने की।

द्वितीय तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता डॉ देवाशीष बैनर्जी रहे जिन्होंने सितार पर अपना व्याख्यान दिया। श्री लोकेन्द्र सिंह जी ने ख़्याल गायकी की विकास यात्रा पर विस्तार से प्रकाश डाला। तत् पश्चात अर्पित तिवारी जी ने अपने शोध पत्र का वचन किया। छिन्दवाड़ा महाविद्यालय से डॉ. श्री पाद आरुणकर ने व्याख्यान सह प्रदर्शन प्रस्तुत किया, जिसमे राग यमन को अनेक रूपों में प्रस्तुत किया। हारमोनियम पर संगत अतुल पथरोल ने की। संचालन आकाश जैन द्वारा किया गया। इस सत्र में डॉ. हरीओम सोनी, डॉ देवाशीष बनर्जी, श्री लोकेंद्र सिंह एवं डॉ श्रीपाद आरुणकर जी का सम्मान डॉ अवधेश प्रताप सिंह तोमर एवं डॉ राहुल स्वर्णकार जी के द्वारा किया गया।

सायंकालीन संगीत संध्या में डॉ मोनिका वर्मा सोनीजी ने अपनी प्रस्तुति राग मधुवंती दी। हारमोनियम पर संगत यशगोपाल श्रीवास्तव ने की। तत्पश्चात देवाशीष चक्रवती जी ने गिटार पर भारतीय शैली में राग मारू बिहाग का आलाप जोड़ झाला सहित युगल वादन की प्रस्तुति दी जिसमें आपके पुत्र देवादित्य जी साथ दिया। सायंकाल में अतिथि के रूप में अधिष्ठाता संकाय मामले डॉ अजित जयसवाल, निदेशक अकादमिक गतिविधि प्रो नवीन कांगो एव रजिस्ट्रार सत्यप्रकाश उपाध्याय जी ने कार्यक्रम की गरिमा प्रदान की। इस अवसर पर डॉ. नागेश दुबे, प्रो चंदा बेन, डॉ भुवनेश्वर तिवारी, डॉ सिद्धांत शंकर शुक्ला, श्री अविनाश देसाई, श्री मोहन शृंगिऋषि साहित विश्वविद्यालय एवं शहर के गणमान्य नागरिक मौजूद थे। आज पुनः संगोष्ठी प्रातः10:30 बजे डॉ राजेश केलकर एवं प्रो अनिल बिहारी व्योहार जी का व्याख्यान होगा।

विश्वविद्यालय के कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के छात्रों ने यूजीसी-नेट में लहराया परचम

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के छात्रों ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की दिसम्बर 2024 में आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (यूजीसी नेट) में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विश्वविद्यालय और विभाग का गौरव बढ़ाया है. विभाग के एमसीए पाठ्यक्रम के चार छात्रों प्रियंका मिश्रा, राकेश राणा, विद्या मास्कोले और अमन सिंह ने सहायक प्रोफेसर और पीएचडी पात्रता दोनों के लिए परीक्षा उत्तीर्ण की है. इसके अतिरिक्त साक्षी मिश्रा, नीलेश जैन, शुभम मौर्य, अखिलेश कुमार पांडे, रेहान गौहर, संचिता अग्रवाल, अनिकेत शर्मा और अनुभा प्रजापति सहित अन्य छात्रों ने पीएचडी प्रवेश के लिए पात्रता परीक्षा में सफलता प्राप्त की है.

गौरतलब है कि पिछले सत्र जून-2024 में भी कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के पांच छात्रों अमन सिंह, साक्षी पांडे, राकेश राणा, रुचि जैन और धनंजय त्रिपाठी ने यूजीसी नेट परीक्षा में सहायक प्रोफेसर और पीएचडी प्रवेश दोनों के लिए योग्यता हासिल की थी. विभागाध्यक्ष ने बताया कि आदरणीय कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की प्रेरणा से विभाग के

विद्यार्थियों को नई दिशा मिली है और वे लगातार राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं में बड़ी संख्या में उपलब्धियां हासिल कर रहे हैं. विश्वविद्यालय के संकायाध्यक्ष और विभागाध्यक्ष ने सफल छात्रों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है. उन्होंने छात्रों को निरंतर अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित किया और विभाग के सभी शिक्षकों के प्रयासों की सराहना की. यह लगातार सफलता विभाग के छात्रों और शिक्षकों की कड़ी मेहनत और समर्पण का प्रमाण है.

विश्वविद्यालय में स्थापित गौर पीठ हेतु प्रो. कठल ने दी एक लाख की राशि

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के सेवानिवृत प्रो. पी. के. कठल ने विश्वविद्यालय की गौर पीठ को एक लाख रूपये की राशि प्रदान की है. उन्होंने चेक के माध्यम से यह राशि विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को सौंपी. इस अवसर पर

कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय डॉ. गौर के महान स्वप्नों को साकार करने की दिशा में लगातार प्रयासरत है. गौर पीठ के माध्यम से प्रबुद्ध समाज और आम जनमानस से भी लगातार अपार सहयोग मिल रहा है. प्रो. कठल ने इस अवसर पर कहा कि डॉ. गौर द्वारा स्थापित इस महान संस्था का उनके जीवन में सबसे बड़ा योगदान है. मैं कृतज्ञ हूँ कि उनके द्वारा स्थापित शिक्षा के मंदिर में अध्ययन और अध्यापन का अवसर मिला. इस अवसर पर गौर पीठ के समन्वयक प्रो. नवीन कानगो उपस्थित थे. प्रो. कानगो ने बताया कि शीघ्र ही कुलपति महोदया की अध्यक्षता में गौर पीठ के समस्त दानदाताओं की एक बैठक आयोजित की जायेगी जिसमें गौर पीठ के उद्देश्यों को आगे बढाने हेतु दान से प्राप्त राशि के उपयोग पर चर्चा की जायेगी.

श्रेष्ठ कलाकार बनने के लिए देखने और सुनने की दृष्टि और समझ आवश्यक - प्रो. देवेंद्र राज अंकुर

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के ललित कला एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग द्वारा प्रदर्शनकारी कला एवं ललितकला : समकालीन विमर्श, प्रवृत्तियां एवं नवाचार विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारम्भ विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण के साथ किया गया. उद्घाटन सत्र में देश की ख्यातिलब्ध रंगनिर्देशक, रंग चिंतक एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक प्रो. देवेन्द्र राज अंकुर एवं उ. प्र. राज्य ललित कला अकादमी के अध्यक्ष एवं प्रख्यात चित्रकार डॉ. सुनील विश्वकर्मा उपस्थित रहे विशिष्ट अतिथि थे. प्रदर्शनकारी कला एवं ललित कला विभाग के अधिष्ठाता डॉ. बलवंत सिंह भदौरिया ने स्वागत वक्तव्य दिया. संगोष्ठी के संयोजक डॉ. नीरज उपाध्याय ने संगोष्ठी का परिचय एवं प्रारूप को विस्तारपूर्वक बताया.

विशिष्ट अतिथि प्रो. देवेन्द्र राज अंकुर ने वक्तव्य देते हुए कहा कि सारी कलाएं देखने एवं सुनने से संबंधित हैं। उन्होंने 'देखने का स्वाद' लेख को साझा करते हुए बताया कि चित्र, मूर्तिशिल्प सभी को ठहर कर देखना चाहिए। कलाकृति को विभिन्न दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता होती है जिसमें समय महत्त्वपूर्ण है. उन्होंने कहा कि हर दर्शक, श्रोता चाहे तो वह एक कलाकार हो सकता है. उन्होंने कहा कि कलाकार की रचना में रचना प्रक्रिया सबसे आवश्यक तत्व है जिसको समझा जाना चाहिए. देश-विदेश के विभिन्न संग्रहालयों में ऐसी अनमोल कलाकृतियाँ हैं जिनको देखना और समझना ही अपने आप में बड़ा कार्य है. आधुनिक और पुरानी रचना विधियों को वर्तमान के प्ररिप्रेक्ष्य में तभी समझा जा सकता है जब हम देखने के आनंद की अनुभूति करें. कलाकार होने के लिए दृष्टि और समझ बहुत आवश्यक तत्व है.

विशिष्ट अतिथि डॉ. सुनील विश्वकर्मा ने कहा कि आज हम कला के विषय-वस्तु पर चर्चा एवं विमर्श करने हेतु उपस्थित हुए है. हमारे वेदों में 64 कलाओं के संवर्धन के बारे में उल्लेख मिलता है. इनमें बाल बनाने, भोजन परोसने से लेकर चोरी को भी एक कला के रूप में बताया गया है. पद्मश्री राजेश्वरा आचार्य के एक वक्तव्य का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि चोरी को भी एक कला के रूप में कैसे गिना जाता है. भारतीय संस्कृति में कई कलाएं हैं जो हमारी सभ्यता अपने साथ में लेकर चल रही है. उन्होंने कहा कि कला को आध्यात्मिक रूप से लिया जाना चाहिए न कि सिर्फ मनोरंजन के रूप में. कला का स्वाभाविक गुण मनोरजंन है पर इसका मूल्य उद्देश्य लोक कल्याण है. प्रदर्शनकारी कला देखने के बाद लोग अपने जीवन प्रक्रिया को

बदल लेते हैं. महात्मा गांधी इसके सर्वोत्तम उदाहरण हैं. उन्होंने प्रेस, प्रिंटिंग से लेकर ए-आई का ज़िक्र करते हुए तकनीकी बदलाव को अपने अनुसार उपयोग करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि तकनीक को कलाओं का विस्तार करने के लिए उपयोग करें न कि इसको चुनौती मानकर हताश हों। रंगमंच की कला जो तीन घंटे तक चलती थी, सिनेमा के रूप में परिवर्तित होकर आज 15 सेंकड की रील तक आ गई है. यह सभी बदलाव हमारे ही बीच से आ रहे हैं. कलाकार अपनी सोच के अनुसार समाज को विकसित करने में सक्षम होते हैं। यह हमारी जिम्मेदारी है कि समाज को कल्याणकारी दिशा में ले जाएँ.

इसी सत्र में ग्वालियर से पधारे जयंत सिंह तोमर ने वक्तव्य देते हुए कहा कि आधुनिकता के समय में हमें अपनी जड़ों को नहीं भूलना चाहिए. विनोद बिहारी मिश्र जो दृष्टिहीन थे, भक्ति कालीन संतों के चित्र बनाए। हमें अपनी कला पर विश्वास रखना चाहिए। हम कैसे अपनी कला को आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करें यह क्षमता हमें विकसित करनी चाहिए. अपनी कला एवं रचना के प्रति आत्मविश्वास एवं सम्मान ही हमारी रचना एवं कला की ताकत है.

दो दिविसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के अलग-अलग राज्यों से रंगकर्मियों, रंगचिंतको, एवं कलाकर्मियों का व्याख्यान होगा जिनमें राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के एसोसिएट प्रो. राम जी बाली, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, वाराणसी केन्द्र के निदेशक श्री प्रवीण कुमार गुंजन, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वाविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र के रंगमंच विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ सतीश पावडे, राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वाविद्यालय के रंगमंच विभागध्यक्ष डॉ हिमांशु द्विवेदी, दिल्ली विश्वाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ आशुतोष, इग्नू नई दिल्ली के ललित कला विभाग के अध्यक्ष प्रो. लक्ष्मण प्रसाद, प्रख्यात कला समीक्षक जयंत तोमर एवं सुमन कुमार सिंह, साँची विश्वाविद्यालय से डॉ सुष्मिता नंदी, बुंदेलखंड विश्वाविद्यालय झाँसी से डॉ श्वेता पाण्डेय सहित प्रख्यात सेरेमिक कलाकार सुश्री कोपल सेठ, विभाग के विद्यार्थी, विवि के शिक्षक एवं शोधार्थी उपस्थित रहे. राष्ट्रीय संगोष्ठी के चार सत्रों में कलाओं में समसामयिक विमर्श, प्रवृत्तियां एवं नवाचार विषय पर चर्चा हो रही है. जिसमें देश भर के लगभग 40 प्रतिभागी एवं विभाग के 80 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे है. सेमिनार के समापन समारोह में प्रदर्शनकारी कला विभाग के छात्र गिरीश करनाड द्वारा लिखित नाटक हयवदन एवं नृत्य तथा विभोर बैंड की प्रस्तुति भी होगी.

कार्यक्रम में शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया. आभार डॉ. राकेश सोनी द्वारा किया गया. संचालन डॉ. नीरज उपाध्याय ने किया.

शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पर्यावरण विषय पर सात दिवसीय सामुदायिक कार्य का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा प्रतिवर्ष की भांति ही इस वर्ष भी सात दिवसीय सामुदायिक कार्य का आयोजन 22 फरवरी से 01 मार्च, 2025 तक किया जा रहा है. उक्त सात दिवसीय सामुदायिक कार्य में बी.ए. बी.एड./बी.एससी. बी.एड. (4 वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम) अष्टम सेमेस्टर के सभी छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पर्यावरण जागरूकता संबंधी विभिन्न कार्यों को विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए विभिन्न गाँवों यथा पथरिया जाट, सिरोंजा, बरारू, पटकुई और मैनपानी में संपन्न किया जा रहा है. उक्त सात दिवसीय सामुदायिक कार्य के चौथे दिन यथा 27 फरवरी, 2025 को बी.ए. बी.एड./ बी.एससी. बी.एड. (4 वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम) के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं द्वारा बरारू ग्राम में नशा मुक्ति हेतु रैली का आयोजन किया गया. वहीं ग्राम मैनपानी में घरेलू हिंसा एवं अन्धविश्वास विषय पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया. ग्राम पथरिया जाट में साइबर जागरुकता विषय पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया. ग्राम सिरोंजा में जल संरक्षण विषय पर रैली निकाली गयी. ग्राम पटकुई में छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु सार्वजानिक स्थानों पर वृक्षारोपण सम्बंधित गाँव के सरपंच के नेतृत्त्व में किया गया. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा शुरू किये गए इस कार्यों की सराहना की और छात्राध्यापक/ छात्राध्यापिकाओं को उनकी बेहतरीन प्रस्तुति हेतु उन्हें बधाई दी. उक्त सभी कार्य सात दिवसीय सामुदायिक कार्य के समन्वयक शिक्षाशास्त्र विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अभिषेक कुमार प्रजापति के मार्गदर्शन में किया गया.

स्पेनिश भाषा में शुरू होगा आरंभिक पाठ्यक्रम, विद्यार्थी एवं शिक्षक अभिरुचि के अनुसार चुन सकेंगे पाठ्यक्रम

स्पेन के जेन विश्वविद्यालय से हुई सार्थक चर्चा, अप्रैल से पाठ्यक्रम आरंभ करने की तैयारी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में शीघ्र ही स्पेनिश भाषा की पढ़ाई प्रारम्भ होगी. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में स्पेन स्थित जेन विश्वविद्यालय से हुई ऑनलाइन बैठक में स्पेनिश भाषा के ऑनलाइन प्रारंभिक पाठ्यक्रम शुरू करने को लेकर सार्थक चर्चा हुई. इसमें दो तरह के पाठ्यक्रम होंगे जिन्हें विद्यार्थी अपनी आवश्यकता और सुविधानुसार चुन सकते हैं. शुरुआती तौर पर 30 घंटे और 60 घंटे शिक्षण अवधि वाले पाठ्यक्रमों को

शुरू करने पर सहमती बनी है जिसे विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय प्रकोष्ठ और अंग्रेजी एवं अन्य यूरोपियन भाषा विभाग के संयुक्त प्रयास से संचालित किया जाएगा. पाठ्यक्रम में विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों ही प्रवेश ले सकेंगे. 30 घंटे शिक्षण अवधि वाले पाठ्यक्रम की फीस लगभग 20000 रुपये एवं 60 घंटे अवधि के पाठ्यक्रम का शुल्क लगभग 40000 रुपये होगा. शीघ्र ही पाठ्यक्रम चयन को लेकर एक अभिरुचि फॉर्म विश्वविद्यालय द्वारा जारी किया जाएगा जिसके आधार पर पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाएगा. सभी विवरण विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर उपलब्ध कराये जायेंगे. बैठक में दोनों विश्वविद्यालयों का परिचय भी साझा किया गया.

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण की दिशा में विश्वविद्यालय आगे बढ़े इसके लिए दुनिया की अनेक भाषाओं को सीखना विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है. उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के साथ कई देशों के विश्वविद्यालयों के साथ अकादमिक साझेदारी पहले से है. कई अन्य देशों की संस्थाओं के साथ अकादमिक एवं शोध साझेदारी के प्रयास किये जा रहे हैं ताकि विदेशी विद्यार्थियों को भी हम अपने विश्वविद्यालय में अध्ययन के प्रति आकर्षित कर सकें. बैठक में इंटरनेशनल सेल के प्रभारी डॉ. वी. रेड्डी, प्रो. बी. आई. गुरु, प्रो. यू. के. पाटिल, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. श्वेता यादव, प्रो. वंदना सोनी, मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल उपस्थित थे.

गौर पीठ की समृद्धि को शिखर तक ले जाने के लिए जनभागीदारी आवश्यक- कुलपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में स्थापित गौर पीठ के दानदाताओं एवं गौर पीठ संचालन समिति की एक संयुक्त बैठक कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में गौर समिति कक्ष में आयोजित की गई. बैठक में गौर पीठ की गतिविधियों को आगे बढ़ाने, गौर पीठ के हेतु दान के लिए ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ने और गौर पीठ के लिए प्राप्त राशि के बेहतर सदुपयोग जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई और महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए.

इस अवसर पर सागर लोकसभा के पूर्व सांसद डॉ. लक्ष्मीनारायण यादव ने कहा कि डॉ. गौर ने अपने स्वयं के प्रयास और राशि से इस विश्वाविद्यालय की स्थापना की. उनके नाम पर स्थापित पीठ के संचालन हेतु सागर शहर

के प्रबुद्ध नागरिक, व्यवसायी, जन प्रतिनिधि सभी इसमें सहयोग करें ताकि डॉ. गौर को स्मृति में रखते हुए उनके संकल्पों एवं उनके सामाजिक और साहित्यिक योगदानों का व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार किया जा सके. उन्होंने कहा कि प्रत्येक सक्षम नागरिक जो डॉ. गौर को भारत रत्न जैसे सम्मान दिलाने की आकांक्षा रखते हैं उन सबको मिलकर एक साथ आगे आना चाहिए और इस अभियान में सहयोग करना चाहिए.

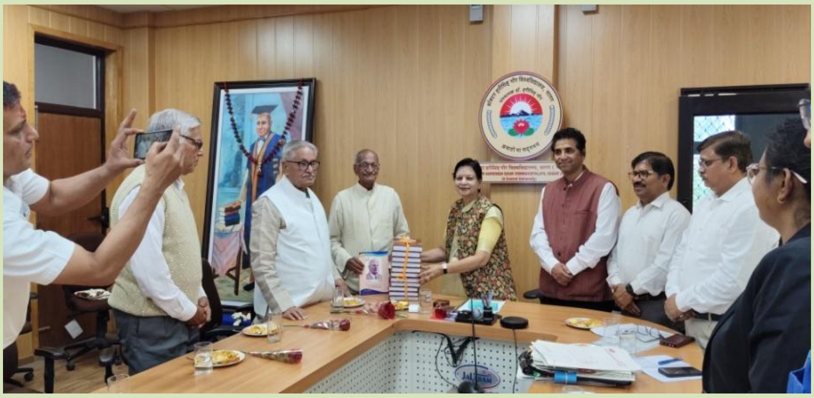

सरस्वती वाचनालय के संरक्षक डॉ. शुकदेव तिवारी ने डॉ. गौर के भाषण का अंश का पाठ करते हुए गौर पीठ को समृद्ध बनाने की अपील की और कई बहुमूल्य सुझाव दिए. समाजसेवी डॉ. वंदना गुप्ता ने गौर गौरव पत्रिका प्रकाशित कर डॉ. गौर के योगदानों का प्रचार-प्रसार करने का सुझाव दिया.

इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर के संकल्पों को पूरा करने और उनको भारत रत्न सम्मान दिलाने की दिशा में विश्वविद्यालय अपनी भूमिका निभा रहा है. गौर पीठ को और अधिक समृद्ध करने के लिए जन-जन के बीच आवाह्न के लिए कई समितियों का गठन किया जाएगा ताकि लोग प्रेरित होकर गौर पीठ से जुड़कर अधिक से अधिक सहयोग करें. उन्होंने भी अपील की कि गौर पीठ हेतु दान के लिए विश्वविद्यालय का मंच सदैव खुला है. डॉ. गौर के प्रति आस्था रखने वाले सभी नागरिकों का स्वागत है. उन्होंने बताया कि डॉ. गौर की स्मृति को सृजनात्मक तरीके से प्रस्तुत करने के लिए विश्वविद्यालय में गौर संग्रहालय का निर्माण किया गया है. यह एक ऐसा संग्रहालय है जहाँ डॉ. गौर के साहित्य, उनके लेखन, उनकी पुस्तकों, उनके योगदान सहित सभी सामग्रियों को प्रदर्शनी के लिए रखा गया है. उन पर बनी फिल्म को भी गौर संग्रहालय में देखा जा सकता है. पीठ के माध्यम से विविध कार्यक्रमों के आयोजन की तैयारी चल रही है. इसी के साथ उन्होंने संग्रहालय के शौर्य प्रभाग, आदिवासी संस्कृति और कला प्रभाग, बुंदेलखंड के महापुरुषों पर केन्द्रित प्रभागों के बारे में भी जानकारी दी.

गौर पीठ की राशि से मेधावी छात्रों को मिलेगी छात्रवृत्ति, डॉ. गौर के योगदान पर केंद्रित कार्यक्रमों का होगा आयोजन

बैठक में उपस्थित सभी दानदाताओं ने कुलपति महोदया के इस प्रस्ताव पर सहमति व्यक्त की कि गौर पीठ में संचित राशि से होने वाली आय से विश्वविद्यालय में प्रथम वर्ष में अध्ययनरत मेधावी छात्र-छात्राओं को एक मुश्त छात्रवृत्ति प्रदान की जायेगी ताकि वे शेष वर्षों में अपने अध्ययन को बिना किसी आर्थिक बाधा के जारी रख सकें. यह छात्रवृत्ति सिंगल गर्ल चाइल्ड और दिव्यांग छात्र-छात्राओं को प्रदान किया जाएगा. इनके चयन में कई अन्य मानकों को भी शामिल किया जाएगा. इसके लिए समिति का गठन किया जाएगा ताकि यह छात्रवृत्ति प्रारम्भ की जा सके.

बैठक में शहर के समाज सेवी मुकुल पुरोहित, प्रो. आर.के. नामदेव, प्रो. पी.के. कठल, प्रो. जे.के. जैन , मुनीन्द्र कुमार प्रजापति, डॉ. अक्षय जैन, प्रो. यू. के. पाटिल ने गौर पीठ की समृद्धि और विधिवत संचालन के लिए कई महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए. बैठक में स्वागत वक्तव्य गौर पीठ के समन्वयक प्रो. नवीन कानगो ने दिया और आभार प्रो. यू. के. पाटिल ने दिया.

विश्वविद्यालय में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम हेतु उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम विस्तार के आलोक में स्नातक अंतिम सेमेस्टर के विद्यार्थियों हेतु उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में किया गया. कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि यह विद्यार्थियों के लिए एक विकल्प की तरह है जिसमें वे चौथे वर्ष में प्रवेश ले सकते हैं. इससे उनके सामने वैश्विक मानकों के आधार पर डिग्री होगी और वे वैश्विक मानक पर संचालित किसी भी संस्थान में आगे के अध्ययन एवं शोध के लिए योग्य होंगे. चौथे वर्ष के पाठ्यक्रम के संचालन का उद्देश्य विद्यार्थियों को शोध के लिए तैयार करना और उन्हें निरंतरता में गहन एवं विशेषज्ञता आधारित अध्ययन के लिए प्रेरित करना है.

कार्यक्रम में अकादमिक अफेयर्स के निदेशक प्रो. नवीन कानगो ने स्वागत वक्तव्य देते हुए विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन से सभी को अवगत कराया तथा नीति के निर्देश के आलोक में शामिल किये गये प्रत्येक आयामों जैसे कौशल आधारित पाठ्यक्रम, मूल्य आधारित पाठ्यक्रम, दक्षता आधारित पाठ्यक्रम आदि के बारे में बताया.

आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. अनिल कुमार जैन ने स्नातक चतुर्थ वर्ष की रूपरेखा से विद्यार्थियों को अवगत कराते हुए शोध संभावनाओं, विशेषज्ञता, वैश्विक परिदृश्य में चतुर्थ वर्ष के पाठ्यक्रम की महत्ता, क्रेडिट निर्धारण, पाठ्यचर्या का स्वरुप आदि सहित कई आयामों पर चर्चा की. उन्होंने चतुर्थ वर्ष में प्रवेश की अर्हताओं के बारे में और भविष्य में शैक्षणिक कैरियर एवं अन्य रोजगार संभावनाओं पर भी चर्चा की.

छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. डी. के. नेमा, प्रो. अनिल जैन एवं प्रो. नवीन कानगो ने विद्यार्थियों के सभी सवालों का समाधान भी किया.

कार्यक्रम में प्रो. राजेन्द्र यादव, प्रो. चंदा बेन, प्रो. एम एल खान, प्रो. रणवीर कुमार, डॉ. ऋतु यादव, डॉ. रजनीश, डॉ. नवीन सिंह सहित विवि के कई विभागों के शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे.

विकसित एवं स्वर्णिम भारत की संकल्पना तभी साकार होगी जब भारत आत्मनिर्भर बनेगा: प्रो. एसपी बंसल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सागर

प्रादेशिक

विवि में उच्च शिक्षा में शिक्षण, प्रशिक्षण एवं शोध पर क्षमता संवर्धन कार्यक्रम

विकसित एवं स्वर्णिम भारत की संकल्पना होगी जब भारत आत्मनिर्भर बनेगा- प्रो. एस.

» जीवन में समस्याओं का आना 'पार्ट ऑफ लाइफ' है और उन सामना करना 'आर्ट ऑफ लाइफ' है- प्रो. नीलिमा गुप्ता कु

प्रदेश

विकसित एवं स्वर्णिम भारत की संकल्पना तभी साकार होगी जब भारत आत्मनिर्भर बनेगा- प्रो. एस.पी. बंसल

विवि में उच्च शिक्षा में शिक्षण, प्रशिक्षण एवं शोध पर क्षमता संवर्धन कार्यक्रम का उदघाटन सत्र संपन्न

डॉ. गौर विवि एवं सीयूएचपी के बीच अकादमिक साझेदारी से होगी एक नए अध्याय की शुरुआत

● दोनों विश्वविद्यालय मिलकर संचालित करेंगे वैदिक अध्ययन, योग एवं पर्यावरण जागरूकता में सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम, रिसर्च जर्नल भी प्रकाशित करेंगे

आचरण संवाददाता

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर, विश्वविद्यालय, सागर एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के मध्य शैक्षिक अनुसंधान, कौशल विकास, गुणवत्ता उन्नयन, सामाजिक सरोकार से संबंधित विभिन्न विषयों को लेकर किये गए एमओयू को क्रियान्वित करने की रणनीतियों को लेकर विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता एवं सीयूएचपी के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल के नेतृत्व में दोनों विश्वविद्यालयों की समितियों के साथ संयुक्त बैठक का आयोजन विश्वविद्यालय के ... कक्ष में किया गया. एमओयू ...

... सामग्री निर्माण, पाठ्यक्रम ... के लिए भी सहमति बनी। बैठक में विश्वविद्यालय के अकादमिक अफेयर्स ... प्रो. श्वेता यादव, प्रो.

दैनिक भास्कर

दोनों विश्वविद्यालयों की समितियों की संयुक्त बैठक में एमओयू को क्रियान्वित करने पर चर्चा

उच्च शिक्षा • सागर

डॉ. गौर विवि एवं सीयूएचपी मिलकर चलाएंगे वैदिक अध्ययन, योग एवं पर्यावरण जागरूकता में सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों से वित्त पोषण के लिए भी प्रयास होंगे: प्रो. गुप्ता

भास्कर संवाददाता | सागर

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की मौजूदगी में गौर समिति कक्ष में बैठक हुई।

भारतीय ज्ञान परंपरा और कौशल विकास पर शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा उच्च शिक्षा में शिक्षण, प्रशिक्षण एवं शोध विषय पर दो सप्ताह तक चलने वाले क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के द्वितीय दिवस पर विभिन्न महत्वपूर्ण व्याख्यानों का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित है। दूसरे दिन के प्रथम तकनीकी सत्र में भोपाल से पधारे प्रो. नीलाभ तिवारी ने भारतीय ज्ञान परंपरा और उच्च शिक्षा में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने प्राचीन भारतीय 16 संस्कारों के वैज्ञानिक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुये बालक के समग्र विकास पर जोर दिया। प्रो. तिवारी ने पंचकोशात्मक विकास अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय कोश की व्याख्या करते हुये भारतीय ... सिद्धांतों की तुलनात्म... का समन्वयन शोधार्थी ... किया, अध्यक्षता डॉ. ... की और धन्यवाद ज्ञापन ... पंडित ने दिया। द्वितीय ... शिक्षाशास्त्र विभाग के ... अनिल कुमार जैन ने गुरु ... विश्वविद्यालय के मूर्धन्य ... परिचय कराया। प्रो. मिश्रा ने ... टीचिंग फॉर कंपेटेंसीज विषय ... देते हुये शिक्षण में नैनो एक्शन शि... की आवश्यकता पर बल दिया। उन... प्रक्रिया को प्रभावी बनाने हेतु ... अनुभवपरक और विद्यार्थियों से जुड़े ... के महत्व को रेखांकित किया। इस ... समन्वयन शोधार्थी शशांक ...

क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के द्वितीय दिवस पर महत्वपूर्ण व्याख्यानों का किया आयोजन

भारतीय ज्ञान परंपरा जीवन का आधार और कौशल शिक्षा जीवनोपयोगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सागर

शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर द्वारा उच्च शिक्षा में शिक्षण प्रशिक्षण एवं शोध विषय पर भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित दो सप्ताह तक चलने वाले क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के द्वितीय दिवस पर महत्वपूर्ण व्याख्यानों का आयोजन विभिन्न तकनीकी सत्रों में किया गया।

क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के दूसरे दिन प्रथम तकनीकी सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में भोपाल से पधारे प्रो. नीलाभ तिवारी ने भारतीय ज्ञान परंपरा और उच्च शिक्षा में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया विषय पर व्याख्यान दिया। जिसमें अपने वक्तव्य में ...

... चरण अधिति, बोध, अभ्यास, प्रयोग, एवं प्रसार को व्यवहारिक जगत के उदाहरण से जोड़ते हुए ...

... टीचिंग फ़ॉर कंपेटेंसीज' विषय पर रुचिपूर्ण एवं विस्तृत व्याख्यान दिया. प्रो. मिश्रा ने शिक्षक ...

... ज्ञापन प्रतिभागी शैलेंद्र विश्वकर्मा ने किया। तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रवीण कुमार टी. डी. ने की जिसमें शिक्षाशास्त्र विभाग की शोधार्थी विजयश्री जयसवाल ने मुख्य वक्ता के रूप में आई. ई. एच. ई. पधारे डॉ. महीपाल सिंह के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। विषय विशेषज्ञ ने 'एन. ई. पी. 2020 और अधिगमकर्ताओं के कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण' शीर्षक पर वक्तव्य दिया. डॉ. महिपाल ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कौशल विकास के पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए तकनीकी कौशल, व्यावसायिक कौशल और मृदु (सॉफ्ट) कौशल के विकास पर परिचर्चा की और इस तरह के विभिन्न सरकारी कौशल कार्यक्रमों ... इस तकनीकी ... विभाग की ... एवं धन्यवाद ... जयसवाल ने ...

... प्रतिभागियों ने ... प्रशिक्षणार्थियों द्वारा ... अवलोकन किया ... डॉ. धर्मेंद्र ... विभाग के ... और विभाग की ... कराया।

विश्वविद्यालय: भाषा शिक्षण एवं लेखन की बारीकियों से ही सक्रिय पाठकों का निर्माण संभव

... जी एवं सत्र का समन्वयन डॉ. प्रवीण कुमार टी. डी. ने किया।

आचरण संवाददाता

और उड़ीसा के प्रतिभागी तपन कुमार डुंगरी ने मुख्य अतिथि के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला व आभार ज्ञापन किया।

द्वितीय व्याख्यान सत्र का समन्वयन शिक्षाशास्त्र विभाग के शोधार्थी दुष्यंत कुमार मार्को ने किया। तृतीय तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में पधारी शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की सेवानिवृत्त प्रो. शोभा सिन्हा ने 'उच्च शिक्षा में विषय-वस्तु क्षेत्र के पठन' शीर्षक पर अपना वक्तव्य दिया। आपने भाषा शिक्षण, लेखन की बारीकियों पर चर्चा करते हुए सक्रिय पाठक वर्ग बनने और भाषा के महत्व को व्यावहारिक जीवन से जोड़ने के लिए प्रतिभागियों को अखबार के खबर की प्रतिकृति वितरित कर समझाया, साथ ही साहित्य की विधाओं की चर्चा की और पाठ्य बोध टेक्स्ट मोनिटरिंग, पुस्तकों के पढ़ने पर जोर देते हुए कहा कि सिर्फ पाठ्यक्रम केन्द्रित पुस्तक अध्ययन के अलावा व्यवहारिक जगत पर आधारित साहित्य भी पढ़ना चाहिए एवं समृद्ध पुस्तकालय की उपलब्धता पर बल दिया. आपने प्रतिभागियों को सत्र के दौरान कुछ पठन गतिविधियों के माध्यम से अनुभवात्मक क्रिया-कलाप भी कराया। इस सत्र में सह निर्देशक डॉ. धर्मेंद्र कुमार सर्राफ ने अतिथि का स्वागत किया और शिक्षाशास्त्र विभाग की सहायक आचार्या डॉ. सावन कुमारी ने मुख्य वक्ता के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला. इस तकनीकी सत्र का समन्वयन शिक्षाशास्त्र विभाग की शोधार्थी भावना तिवारी एवं धन्यवाद ... जम्मू एवं कश्मीर राज्य के प्रतिभागी डॉ. ...

विश्वविद्यालय में अश्वगंधा उपयोग के लिए जागरुकता अभियान कार्यक्रम का आयोजन

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग ने जिला आयुष चिकित्सालय, सागर के साथ मिलकर अश्वगंधा के औषधीय गुणों से शिक्षकों और विद्यार्थियों को अवगत कराने के लिए एक जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया। राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, भारत सरकार, नई दिल्ली के अन्तर्गत अश्वगंधा कैंपेन के तहत जिला आयुष चिकित्सालय, सागर के चिकित्सक डॉ. आशीष पटेल एवं डॉ. कीर्ति पटेल ने अश्वगंधा के औषधीय गुणों एवं उसके उपयोग पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों के बीच अश्वगंधा पर चित्रकला एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कराई गई एवं विजेताओं को ... विभाग, सागर की ओर से पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किये ... अश्वगंधा के ...

विश्वविद्यालय में बताए अश्वगंधा के उपयोग, चित्रकला स्पर्धा में विजेताओं को दिए पुरस्कार

सागर | दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय ने जिला आयुष चिकित्सालय, सागर के साथ मिलकर अश्वगंधा के औषधीय गुणों पर व्याख्यान कराया। शिक्षकों और विद्यार्थियों को अश्वगंधा के उपयोग और इसके फायदों की जानकारी दी गई।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा चलाए जा रहे अश्वगंधा अभियान के तहत जिला आयुष चिकित्सालय, सागर के चिकित्सक डॉ. आशीष पटेल एवं डॉ. कीर्ति पटेल ने अश्वगंधा के औषधीय महत्व एवं उसके उपयोग पर व्याख्यान दिया। जरूरी जानकारी दी। कार्यक्रम में विद्यार्थियों के बीच अश्वगंधा पर चित्रकला एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कराई। विजेताओं को आयुष विभाग, सागर की ओर से पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र दिए गए। साथ ही सभी उपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को अश्वगंधा के पौधे देकर घर पर जाकर लगाने व इसका उपयोग करने कहा गया।

कार्यक्रम में आयुष विभाग, सागर की ओर से राकेश यादव, स्टाफ नर्स एवं छत्रसाल शर्मा, योग सहायक का भी सहयोग रहा। अश्वगंधा के उपयोग एवं आर्थिक उपार्जन को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार के आयुष विभाग की तरफ से एक मुहिम चल रही है। इसी के तहत इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में अलग-अलग विभागों के शिक्षक और विद्यार्थी भी शामिल हुए। अश्वगंधा के उपयोग और फायदों के संबंध में जाना।

छात्राओं में आत्मविश्वास एवं मनोबल सम्वर्धन सशक्त राष्ट्र की आधारशिला: प्रो. नीलिमा गुप्ता

सागर, देशबन्धु। शोध एवं स्नातकोत्तर छात्राओं में आत्मविश्वास सम्बलन, अकादमिक प्रोत्साहन, मार्गदर्शन, बेहतर स्वास्थ्य, करियर गाइडेंस, इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी आधारित दक्षता तथा रोजगारपरक क्षमता विकास हेतु डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविध्यालय के भूगोल विभाग द्वारा एक नया कार्यक्रम ग्लैड यग्रोइंग, लर्निंग एंड अचीविंग ड्रीम्स आरम्भ किया गया है। कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता के द्वारा इस कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन किया गया। कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने भूगोल विभाग द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों की सराहना की और अपने बहुमूल्य सुझाव दिये। उन्होंने विभाग द्वारा किये जा रहे शोध, नवाचार और शैक्षणिक गतिविधियों की प्रशंसा की तथा इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिये आवश्यक दिशा निर्देश भी प्रदान किये। कुलपति ने ग्लैड यग्रोइंग लर्निंग एंड अचीविंग ड्रीम्स कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुये कहा कि यह पहल छात्राओं के ज्ञान, अधिगम और उनके सपनों को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस कार्यक्रम के तहत छात्राओं को आधुनिक शैक्षणिक संसाधनों, व्यावहारिक प्रशिक्षण और शोध के अवसर प्रदान किये जाएंगे, जिससे वे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकें। उन्होंने यह भी कहा छात्राओं के सपनों को साकार करने के लिये आवश्यक है कि उन्हें सही मार्गदर्शन, आवश्यक संसाधन और बेहतर सीखने का वातावरण मिले। ग्लैड कार्यक्रम इस दिशा में बेहतरीन प्रयास है, जो विद्यार्थियों को उनके लक्ष्यों की ओर प्रेरित करेगा और उन्हें आत्मनिर्भर बनने में मदद करेगा। उन्होंने कहा कि बड़े पैमाने पर महिला छात्राओं को लाभ पहुंचाने के लिये इस पहल को विश्वविद्यालय के अन्य विभागों तक बढ़ाया जाना चाहिये। इसी क्रम में भूगोल विभाग के अध्यक्ष प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज ने कुलगुरु का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। भूगोल विभाग के अध्यक्ष प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज के द्वारा की जाने वाली गुणात्मक वृद्धि और सुधार की दिशा में लगातार काम करने के लिये उनके उत्साही प्रयासों, समर्पण और जुनून की सराहना की। कार्यक्रम को शिवानी मीनाने, प्रो. डॉ.हेमन्त पाटीदार, डॉ. दीपिका वशिष्ठ, डॉ. आरबी, अनुरागी, ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम के मेंटर डॉ. आरबी अनुरागी एवं डॉ. सथीश सी सहित विभाग की शोधार्थी छात्रायें भी इस अवसर पर उपस्थित थीं।

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति आत्मनि... बनाने का एक महत्वपूर्ण कद...

सागर. बीटी इन्स्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस महाविद्यालय एवं आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अवसर एवं चुनौती विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस मौके पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति विद्यार्थियों के समग्र विकास एवं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रो. अनिल कुमार जैन ने कहा कि...

राष्ट्रीय शिक्षा नीति विद्यार्थियों के समग्र विकास और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में एक महत्वपूर्ण कदमः प्रो. गुप्ता

विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग द्वारा एक नया कार्यक्रम प्रारंभ

छात्राओं में आत्मविश्वास एवं मनोबल संवर्धन सशक्त राष्ट्र की आधारशिलाः कुलपति

डॉ. गौर केंद्रीय विवि द्वारा प्रकाशित गौर ज्ञान संगम श्रृंखला की चार नवीनतम पुस्तकों का विमोचन

ज्ञान महाकुम्भः डॉ. गौर केंद्रीय विवि द्वारा प्रकाशित

गौर ज्ञान संगम श्रृंखला की चार नवीनतम पुस्तकों का विमोचन

ज्ञान महाकुम्भ : गौर ज्ञान संगम श्रृंखला की चार नवीनतम पुस्तकों का विमोचन हुआ

विवि में एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

अल्ट्रा परफॉरमेंस लिक्विड क्रोमैटोग्राफी (यूपीएलसी) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

विश्वविद्यालय में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के द्वारा स्वास्थ्य पर कार्यशाला आयोजित*

देश, काल एवं परिस्थिति के अनुरूप हो अनुसंधान

सागर(एसबीन्यूज)। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा 'उच्च शिक्षा में शिक्षण प्रशिक्षण एवं शोध' विषय पर भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित 4 से 15 फरवरी 2025 तक चलने वाले क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के नवम दिवस पर कुल चार तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया।

नौवें दिवस के प्रथम तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, अर्थशास्त्र विभाग के सह-आचार्य डॉ. वी.एम. रेड्डी का स्वागत कार्यक्रम के सह निर्देशक डॉ. धर्मेंद्र कुमार सर्राफ ने किया. विषय-विशेषज्ञ ने अपने उद्बोधन में 'गुणात्मक और मात्रात्मक शोधों हेतु ओपन सोर्स विश्लेषणात्मक उपकरणों' विषय पर वक्तव्य देते हुए शोधों में सान्खिकीय अनुप्रयोग तथा विभिन्न विश्वलेषण उपकरणों का उपयोग किस प्रकार किया जाय, इसका अनुभवजन्य अभ्यास भी कराया. विद्वान अतिथि का परिचय शोधार्थी शशांक नामदेव एवं आभार ज्ञापन प्रतिभागी श्री अखिलेश सिंघल ने किया. प्रथम सत्र का समन्वयन शिक्षाशास्त्र विभाग की शोधार्थी विजय श्री जायसवाल ने किया। द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में कानपुर से पधारे सेवानिवृत्त प्रो. सुभाष चन्द्र अग्रवाल का स्वागत कार्यक्रम के सह निर्देशक डॉ. धर्मेंद्र कुमार सर्राफ ने किया. प्रतिभागी तबस्सुम रसूल ने मुख्य वक्ता के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। तृतीय तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रुप में भोपाल से पधारे डॉ. राजेश यादव रहे. उन्होंने 'अनुदान एवं शोध प्रस्ताव हेतु विद्वत्तापूर्ण लेखन कौशल और वित्तपोषण स्त्रोतों की पहचान' विषय पर अपना व्याख्यान दिय। अंतिम एवं चतुर्थ तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता सेवानिवृत्त प्रो. सुभाष अग्रवाल ने 'आंकड़ों के संग्रहण हेतु अनुसंधान उपकरणों का निर्माण' विषय पर वक्तव्य देते हुए चर, मापन, मात्रात्मक तथा गुणात्मक आंकड़ो के संग्रहण के बारे में विस्तृत व्याख्यान दिया. उन्होंने अनुसंधान उपकरण निर्माण के प्रकिया को सउदाहरण समझाते हुए उपकरण के वैधता तथा विश्वसनीयता ज्ञात करने के बारे में भी बताया. इस सत्र की अध्यक्षता शिक्षाशास्त्र विभाग के सहायक आचार्य डॉ. प्रवीण कुमार टी. डी. ने किया. धन्यवाद ज्ञापन प्रतिभागी डॉ. अभय कुमार ने किया।

विश्वविद्यालय : ऋषि विद्या और कृषि विद्या का प्रभावी एवं सामयिक उपयोग आवश्यक : यादव

सागर(एसबीन्यूज)। ऋषि विद्या और कृषि विद्या आधारित हमारी पारंपरिक प्रणाली ... उर्वरकों के अँधाधुँध प्रयोग ... हमारी ...

जीवन जीकर चला जाना हैं ऐसे में योग विद्या और भारतीय ज्ञान परंपरा की व्यापक प्रचार प्रसार की आवश्यकता बढ़ जाती है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. नितिन कोरपाल ने कहा कि प्राचीन काल से ऋषियों द्वारा अनुभूत प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर अध्यात्म योग तथा आयुर्वेद की जो जीवन पद्धति विकसित की गई उसका ...

ललित कला विभाग के विद्यार्थियों ने दिल्ली के इंडिया आर्ट फेयर का किया शैक्षणिक भ्रमण

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग के विद्यार्थियों का एक दल दो दिवसीय नई दिल्ली के शैक्षणिक भ्रमण पर रहा। विद्यार्थियों ने दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय ...

विवि के विद्यार्थियों ने नई दिल्ली का भ्रमण किया। ● नवदुनिया

समकालीन कलाकार गुलाम मोहम्मद शेख की कृतियों का अवलोकन ... छात्रों से मुलाकात की व उन्हें कला के माध्यम और नवाचार के बारे में विस्तार से बताया। समूह में कुल 20 ...

शोध की गुणवत्ता बढ़ाने पर जोर, विश्वविद्यालयों को देश काल के अनुरूप अनुसंधान करने की जरूरत

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित उच्च शिक्षा में शिक्षण प्रशिक्षण एवं शोध विषयक क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के नवम दिवस पर चार तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित यह कार्यक्रम 4 से 15 फरवरी 2025 तक चलेगा। नवम दिवस के प्रथम तकनीकी सत्र में अर्थशास्त्र विभाग के सह आचार्य डॉ. वीएम् रेड्डी ने गुणात्मक और मात्रात्मक शोधों हेतु ओपन सोर्स विश्लेषणात्मक उपकरणों विषय पर वक्तव्य दिया। उन्होंने शोधों में सांख्यिकीय अनुप्रयोग तथा विश्लेषण ...

एवं प्रतिदर्श चयन विधि पर विस्तार से चर्चा की। इस सत्र ... का सम ...

रेडियो एक अंतरंग जनमाध्यम, भाषाई समझ और संप्रेषण कौशल के साथ बना सकते हैं कैरियर

■ विवि के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में विश्व रेडियो दिवस पर व्याख्यान का आयोजन

दबंग बुन्देलखण्ड

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में विश्व रेडियो दिवस के अवसर पर रेडियो में रोजगार की संभावनाएं विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. विवेक जायसवाल ने स्वागत वक्तव्य के साथ ...

... रहा है किंतु वर्तमान समय में यह केवल सूचना व संचार पर केंद्रित न हो कर राजस्व उत्पन्न करने की राह पर भी अग्रसर है। आज आकाशवाणी समाज के हर आयाम को समृद्ध करते हुए ...

... है कि आपको हमारे देश के डेमोग्राफी (जनसाख्यिकी) की जानकारी नहीं है. हमारा देश मात्र 2-3 प्रतिशत शहरी क्षेत्र पर ही सिमटा नहीं है. देश की सर्वाधिक आबादी अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और वे ही एक ...

वर्तमान के डिजिटल युग में आज भी आकाशवाणी केंद्रों में भेजे जाते हैं.

रेडियो में रोजगार की संभावनाएं विषय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि वे युवा जो रेडियो में रोजगार की इच्छा रखते हैं वे अपने आधारभूत कौशल पर विशेष रूप से ध्यान दें तथा दैनिक रूप से अपनी संप्रेषण शक्ति व भाषा पर अपनी मजबूती बनाएं। अच्छा बोलें, अच्छा सुनें, अच्छा लिखें। समर्पण भाव से अपनी सृजनशीलता व रचनात्मकता का विकास करें तथा अभ्यास करें। रेडियो में तमाम रोजगार की संभावनाएं निहित हैं जिनमें मुख्य रूप से रेडियो जॉकी (आरजे), रेडियो प्रेजेंटर (उद्घोषक), वॉयस ओवर आर्टिस्ट, अनुवादक (ट्रांसलेटर) जैसे तमाम पदों पर प्रत्येक वर्ष क्षेत्रीय तथा केंद्रीय पदों पर भर्तियां निकाली जाती हैं। इच्छुक ...

विवि के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में विश्व रेडियो दिवस पर व्याख्यान का आयोजन

रेडियो एक अंतरंग जनमाध्यम, भाषाई समझ और संप्रेषण कौशल के साथ बना सकते हैं कैरियर

● **नवसिन्धु समाचार** सागर. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में विश्व रेडियो दिवस के अवसर पर रेडियो में रोजगार की ... विशेष व्याख्यान का ...

आकाशवाणी अपने शुरुआती दौर से अब तक मुख्यत: सूचना, शिक्षा तथा मनोरंजन पर केंद्रित रहा है किंतु वर्तमान समय में यह केवल सूचना व संचार पर केंद्रित न हो कर राजस्व उत्पन्न करने की राह पर भी अग्रसर है. आज आकाशवाणी समाज के हर आयाम ... करते हुए संगीत, लोक कला, लोक ... के विकास पर निरंतर कार्यरत है. ... आकाशवाणी ने राष्ट्र के कृषि विभाग ... में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. ... वर्तमान समय में उठ रहे अत्यंत ही ... व ज्वलंत प्रश्न जैसे कि आजकल ... आकाशवाणी सुनता ही कौन है? के ...

क्षेत्र पर ही सिमटा नहीं है. देश की सर्वाधिक आबादी अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में ही निवास करती है और वे ही एक प्रकार से हमारे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं. वर्तमान समय में रेडियो की प्रासंगिकता तथा उसकी महत्ता पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि रेडियो आज एक अत्यंत ही अंतरंग माध्यम है जिसको निरन्तर सुनने से आप मल्टी टास्कर (बहुकार्यक्षम) बनते हैं. आज भी ग्रामीण आबादी बड़ी संख्या में किसान वाणी कार्यकम को सुनती है तथा डेढ़ सौ से दो सौ पोस्ट कार्ड वर्तमान के डिजिटल युग में आज भी आकाशवाणी केंद्रों में भेजे जाते हैं.

अच्छा सुनें, अच्छा लिखें. समर्पण भाव से अपनी सृजनशीलता व रचनात्मकता का विकास करें तथा अभ्यास करें. रेडियो में तमाम रोजगार की संभावनाएं निहित हैं जिनमें मुख्य रूप से रेडियो जॉकी (आरजे), रेडियो प्रेजेंटर (उद्घोषक), वॉयस ओवर आर्टिस्ट, अनुवादक (ट्रांसलेटर) जैसे तमाम पदों पर प्रत्येक वर्ष क्षेत्रीय तथा केंद्रीय पदों पर भर्तियां निकाली जाती हैं. इच्छुक युवा लगन व समर्पण भाव से अभ्यास तथा परिश्रम कर अपना कौशल विकास कर रेडियो में अपनी सेवा दे सकते हैं. व्याख्यान के पश्चात विभाग के छात्रों ने प्रश्न रखे ...

कवायद | विवि में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा ने समग्र स्वास्थ्य पर की कार्यशाला

ऋषि विद्या-कृषि विद्या का प्रभावी उपयोग आवश्यक : डॉ.यादव

जागरण, सागर। ऋषि विद्या और कृषि विद्या आधारित हमारी पारंपरिक प्रणाली के विकास एवं पुनर्जीवन से हम एक स्वस्थ मनुष्य, समाज और राष्ट्र की संकल्पना को साकार कर सकते हैं। उक्त उद्गार डॉ.सत्यनारायण यादव योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ, अर्चना योगायतन नई दिल्ली ने डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के योग शिक्षा विभाग में आयोजित योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा समग्र स्वास्थ्य पर एक दिवसीय कार्यशाला में व्यक्त किए। डॉ.यादव ने कहा कि एलोपैथी से क्षणिक उपचार एवं लाभ मिलता है जबकि शरीर का निर्माण करने वाले प्राकृतिक तत्वों एवं प्रकृति से प्राप्त जड़ी-बूटियों ...

मनुष्य के निर्माण का प्रयास करना होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए दर्शनशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ.अनिल कुमार तिवारी ने कहा कि योग व सांख्य का दर्शन ...

जीकर चला जाना है। ऐसे में योग विद्या और भारतीय ज्ञान परंपरा की व्यापक प्रचार प्रसार की आवश्यकता बढ़ जाती है। ...

और प्रा... ध्यान ब...

दैनिक सागर दिनकर www.sagardinkar.com सागर। शनिवार । 15.02.2025

उच्च शिक्षा में महिलाओं को नेतृत्त्वकारी भूमिका से बनेगा विकसित भारत: कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

सागर दिनकर

सागर। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई ...

सागर/बांदा छतरपुर, शनिवार 15 फ...

उच्च शिक्षा में महिलाओं को नेतृत्त्वकारी भूमिका से बनेगा विकसित भारत: कुलपति

सागर(एसबीन्यूज)। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली और राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रयागराज में आयोजित ज्ञान महाकुंभ का आयोजन 10 जनवरी से 10 फरवरी तक किया गया जिसका उद्घाटन उत्तर प्रदेश के उप-मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने किया. ज्ञान महाकुंभ में ही दिनांक 05-10 फरवरी तक हरित महाकुम्भ और 'भारतीय शिक्षा राष्ट्रीय संकल्पना' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी ने ज्ञान महाकुंभ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि, इस अलौकिक महाकुंभ में ज्ञान महाकुंभ का आयोजन अपने आप में ही अद्भुत संयोग है. इस कार्यक्रम से पूरे देश की शिक्षा व्यवस्था को एक नई ऊर्जा और भारतीय ज्ञान परंपरा से युक्त दिशा मिलेगी. मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह-सरकार्यवाह डॉ कृष्ण गोपाल ने कहा कि हमारी ज्ञान परंपरा में एकांगी शिक्षा नहीं दी जाती थी, परंतु आज संपूर्ण विश्व एकांगी शिक्षा व्यवस्था से ग्रसित है. हमें समाज में एक बार फिर भारतीय ज्ञान परंपरा की चेतना का जागरण करना होगा. विशिष्ट अतिथि यूजीसी के पूर्व अध्यक्ष प्रो. डी. पी. सिंह ने कहा कि आध्यात्म विद्या सभी विधाओं में सर्वश्रेष्ठ है. भारतीय ज्ञान परंपरा आध्यात्म और शिक्षा का अद्भुत मिश्रण कर रही है और हमें इस परंपरा को एक बार फिर बल देना होगा। इस आयोजन में उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, विश्व जागृति फाउंडेशन के वागीश स्वरूप, विनय सहस्त्रबुद्धे, साध्वी ऋतंभरा, राष्ट्रीय सेविका समिति की सीता अक्का, एनआईटी प्रयागराज के निदेशक प्रो आर.एस. शर्मा, म. प्र. राज्य निर्वाचन आयोग के आयुक्त मनोज श्रीवास्तव, राजस्थान उच्च शिक्षा विभाग के आयुक्त ओमप्रकाश बैरवा, हरियाणा उच्च शिक्षा आयोग के अध्यक्ष प्रो कैलाश शर्मा, इंदौर के महापौर पुष्यमित्र भार्गव, नीति आयोग के शिक्षा निदेशक डॉ. शसीमशाह, पद्मश्री आनंद कुमार आदि गणमान्य अतिथि विशेष रही।

विश्वविद्यालय द्वारा प्रक... संगम श्रृंखला की चार नवीन... विमोचन

ज्ञान महाकुम्भ में 09 फ... डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय... सागर मध्य प्रदेश द्वारा प्रक... श्रृंखला के अंतर्गत चार न... मूल्य आधारित शिक्षा- चि... संस्कार, भारतीय भाषालोक... वैशिष्ट्य, शिक्षा एवं आत्मनिर्भ... निर्मिति, भारतीय ज्ञान परम... विमर्श का विमोचन अतिथि... गया।

ज्ञान महाकुम्भ शिविर मे... का स्टॉल लगाया गया जि... आगंतुकों, विद्यार्थियों को वि... संचालित पाठ्यक्रमों, गौ... उपलब्धियों की जानकारी प्रद... अवसर पर विश्वविद्यालय क... नीलिमा गुप्ता एवं विश्ववि... प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय में दो दिवसीय म्यूजियोलॉजी कार्यशाला का आयोजन

दबंग बुन्देलखण्ड

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में दो दिवसीय म्यूजियोलॉजी पर कार्यशाला का शुभारंभ दिनांक 13 फरवरी, 2025 को किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य विश्वविद्यालय के संग्रहालयों की शिक्षा और शोध में भूमिका को रेखांकित करना है। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली के अंतर्गत संचालित नेशनल म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री की निदेशक नाज रिजवी, नेशनल म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री के वैज्ञानिक डॉ. शक्ति कुमार सिंह और क्षेत्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय (आरएमएनएच), भोपाल की प्रमुख एवं वैज्ञानिक डॉ. बीनिश रफत उपस्थित थे।

कार्यशाला से पूर्व अतिथियों को विश्वविद्यालय में स्थित विभिन्न

संग्रहालयों जिनमें प्राणीशास्त्र संग्रहालय, अनुप्रयुक्त भूविज्ञान संग्रहालय, नृविज्ञान संग्रहालय, प्राचीन भारतीय इतिहास संग्रहालय, अपराधशास्त्र और फॉरेंसिक विज्ञान संग्रहालय, तथा गौर संग्रहालय का परिचय एवं कार्यों से अवगत कराया गया। अतिथियों ने इन संग्रहालयों में संरक्षित विविध और समृद्ध संग्रह का अवलोकन भी किया। विश्वविद्यालय द्वारा महत्वपूर्ण ज्ञान भंडारों को संजोने और विस्तारित करने के प्रयासों की सराहना करते हुए डॉ. नाज ने कहा कि आज के समय में अपनी विरासत को संजोना और संरक्षित रखना इसलिए आवश्यक है कि आने वाली पीढियां हमारी समृद्ध विरासत को जान सकें। दुनिया के कई देशों में संग्रहालय बनाने की काफी अच्छी परम्परा है। आम तौर पर संग्रहालय एक अलग स्पेस होते हैं जहाँ दुर्लभ एवं प्राचीन वस्तुओं को प्रदर्शन के लिए रखा जाता है लेकिन डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय द्वारा एक अकादमिक संस्थान के नाते विभिन्न संग्रहालयों की स्थापना और गौर संग्रहालय की संकल्पना बहुत दूरदृष्टि वाली संकल्पना है। संग्रहालय ज्ञान के अद्भुत साधन हैं. शोध एवं ज्ञान प्रसार में इनका बहुत ही महत्त्व है. उन्होंने कहा कि ये संग्रहालय न केवल शैक्षणिक अध्ययन को समृद्ध करते हैं बल्कि स्कूल के छात्रों और आम जनता के लिए भी महत्वपूर्ण ज्ञान स्त्रोत हैं।

उच्च शिक्षा में महिलाओं की नेतृत्त्वकारी भूमिका से बनेगा विकसित भारत- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

दबंग बुन्देलखण्ड

सागर। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली और राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रयागराज परिसर के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रयागराज में आयोजित ज्ञान महाकुंभ का आयोजन 10 जनवरी से 10 फरवरी तक किया गया। जिसका उद्घाटन उत्तर प्रदेश के उप-मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने किया। ज्ञान महाकुंभ में ही दिनांक 05-10 फरवरी तक हरित महाकुम्भ और भारतीय शिक्षा राष्ट्रीय संकल्पना विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी ने ज्ञान महाकुंभ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस अलौकिक महाकुंभ में ज्ञान महाकुंभ का आयोजन अपने आप में ही अद्भुत संयोग है। इस कार्यक्रम से पूरे देश की शिक्षा व्यवस्था को एक नई ऊर्जा और भारतीय ज्ञान परंपरा से युक्त दिशा मिलेगी ...

फिर बल देना होगा. इस आयोजन में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शिक्षा में शासन-प्रशासन की भूमिका विषय पर वक्तव्य देते हुए कहा कि हम यदि हम विकसित भारत की बात करते हैं तो हमें माननीय प्रधानमंत्री श्री मोदी की बात को स्मरण करना चाहिए जिसमें वे कहते हैं कि अगर हमें अपने भारत को विकसित भारत बनाना है तो हमारा शासन और प्रशासन बहुत ही चुस्त होना चाहिए ...

लेकिन उन मुश्किलों का सामना करने के साथ ही त्वरित निर्णय लेना चाहिए। नियमों के मौजूद होने के बावजूद कई ऐसे प्रश्न आ जाते हैं जिनके लिए नीतियाँ बनानी पड़ती हैं. कुछ केंद्रीकृत मॉडल हमें मंत्रालय उपलब्ध कराती है लेकिन संस्था या विश्वविद्यालय के स्तर पर भी हमें कुछ मॉडल्स बनाने पड़ते हैं. यही अच्छे गवर्नेंस की पहचान है। उन्होंने कहा कि आज हम ...

'भारतीय शिक्षा, राष्ट्रीय संकल्पना' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

आचरण संवाददाता

सागर। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली और राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रयागराज में आयोजित ज्ञान महाकुंभ का आयोजन 10 जनवरी से 10 फरवरी तक किया गया जिसका उद्घाटन उत्तर प्रदेश के उप-मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने किया. ज्ञान महाकुंभ में ही दिनांक 05-10 फरवरी तक हरित महाकुम्भ और 'भारतीय शिक्षा = राष्ट्रीय संकल्पना' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के ...

सर्वश्रेष्ठ है। भारतीय ज्ञान परंपरा आध्यात्म और शिक्षा का अद्भुत मिश्रण कर रही है और हमें इस परंपरा को एक बार फिर बल देना होगा। इस आयोजन में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शिक्षा में शासन-प्रशासन की भूमिका विषय पर वक्तव्य दिया।

समापन सत्र में इसरो के अध्यक्ष वी नारायण ने कहा कि मनुष्यता को प्राचीन भारत की देन अद्भुत है, समापन सत्र के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय दत्तात्रेय होसबाले ने कहा कि देश के शिक्षा क्षेत्र में ऐसा बदलाव चाहिए, जिससे भारत में भविष्य निर्माता, विद्यार्थियों में ज्ञान और ... को स्थापित कर सकें। ... मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह ...

विश्वविद्यालय में क्षमता संवर्धन कार्यक्रम का हुआ समापन

शिक्षा से ही विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त होगा

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विवि शिक्षा शास्त्र विभाग और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित क्षमता संवर्धन कार्यक्रम का समापन शनिवार को हुआ। समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि शिक्षित भारत से ही विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त होगा।

उन्होंने प्रतिभागियों से सीखे गए ज्ञान का उनकी ... की बात कही। ... जवाहर लाल ...

ने विचार रखे। क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के निदेशक प्रो. अनिल कुमार जैन ने ...

आभार डॉ. प्रवीण कुमार ने माना। मंच संचालन संयोजक डॉ. अभिषेक कुमार ... अवसर पर ... जैन, डॉ. ... प्रवीन सिंह ...

व्याख्यान
विश्वविद्यालय में दो दिवसीय म्यूजियोलाजी कार्यशाला का आयोजन, संग्रहालयों की शिक्षा और शोध में भूमिका

समृद्ध परंपराओं एवं विरासत से परिचय के अदभुत स्रोत हैं

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में दो दिवसीय म्यूजियोलाजी पर कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य विश्वविद्यालय के संग्रहालयों की शिक्षा और शोध में भूमिका को रेखांकित करना है।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय नई दिल्ली के अंतर्गत संचालित नेशनल म्यूजियम आफ नेचुरल ... की निदेशक नाज रिजवी, नेचुरल ... कुमार इतिहास ... भोपाल ... बीनिश ... से पू... विभि... संग्रह... संग्रह... भारत ...

अपराधशास्त्र और फारेंसिक विज्ञान संग्रहालय व गौर संग्रहालय का परिचय एवं कार्यों से अवगत कराया गया।

दुनिया के कई देशों में संग्रहालय बनाने की काफी अच्छी परंपरा है

अतिथियों ने इन संग्रहालयों में संरक्षित विविध और समृद्ध संग्रह का अवलोकन भी किया। विवि द्वारा महत्वपूर्ण ज्ञान भंडारों को संजोने और विस्तारित करने के प्रयासों की सराहना ...

कार्यशाला के दौरान अतिथियों द्वारा संग्रहालयों का निरीक्षण किया गया। • नवदुनिया

स्पेक्ट्रोस्कोपिक इलिप्सोमीटर पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में उन्नत अनुसंधान ...एआर में स्पेक्ट्रोस्कोपिक इलिप्सोमीटर पर एक दिवसीय हैंड्स ... प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 35 प्रतिभागियों ने ... रूप से भाग लिया। उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक ...श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की ... ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी। ... वक्ता प्रो. रणवीर कुमार और डॉ. प्रशांत शुक्ला प्रभारी शिक्षक, ... स्पेक्ट्रोस्कोपिक इलिप्सोमीटर ने प्रतिभागियों को एप्लाइड ... स्पेक्ट्रोस्कोपिक इलिप्सोमीटर ... विविध क्षेत्र में स्पेक्ट्रोस्कोपिक ... सामान्य परिचय जैसे कि ... पोलराइजेशन ...

विश्वविद्यालय: शिक्षित भारत ही विकसित भारत का पथ प्रदर्शक : कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

दै.जनचिंगारी-9302303212

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा 'उच्च शिक्षा में शिक्षण प्रशिक्षण एवं शोध' विषय पर भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित 4 फरवरी 2025 से 15 फरवरी 2025 तक चलने वाले क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के अंतिम दिवस कुल चार सत्रों का आयोजन किया गया.

कार्यक्रम के बारहवें दिन के प्रथम तकनीकी सत्र में प्रतिभागियों द्वारा अपने-अपने शोध पत्रों का प्रदर्शन किया गया. बारहवें दिन के प्रथम तकनीकी सत्र में ...

और सत्र का समन्वयन शिक्षाशास्त्र विभाग की शोधार्थी विजय श्री जायसवाल ने किया.

द्वितीय तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रुप में विश्वविद्यालय के वित्त अधिकारी श्री कुलदीपक शर्मा ने 'शिक्षा में वित्तीय विचार' पर ...

अवगत कराया. उन्होंने 5 आर 'राइट क्वालिटी, राइट क्वांटिटी, राइट प्राइज, राइट टाइम एंड प्लेस, राइट सोर्सेज' का भी ज़िक्र किया, साथ ही उन्होंने प्रतिभागियों के विभिन्न शंकाओं का समाधान किया. मुख्य ...

शिक्षाशास्त्र विभाग के शोधार्थी संदीप कुमार पाठक ने किया.

तृतीय सत्र में समापन सत्र का आयोजन किया गया. समापन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. मुख्य अतिथि के रूप में जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से पधारे प्रो. बी.एस. बालाजी रहे. कार्यक्रम के समापन ... विश्वविद्यालय के ...

स्पेक्ट्रोस्कोपिक इलिप्सोमीटर पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का आयोजन

सागर दिनकर

...सिंह गौर विश्वविद्यालय ... प्रो. नीलिमा गुप्ता के ... उन्नत अनुसंधान केंद्र ... स्पेक्ट्रोस्कोपिक ...

कार्यशालाओं की भी जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं। ... व्याख्यान सत्र में मुख्य ...

... तैयार करने और अनुप्रयोगों जैसे ... निकालना, ...

विश्वविद्यालय: म्यूज़ियोलॉजी में डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम शुरू होंगे

आचरण संवाददाता

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा रंगनाथन भवन में म्यूज़ियोलॉजी कार्यशाला के दूसरे दिन प्रतिष्ठित अतिथियों, शिक्षकों और छात्रों ने भाग लिया और संग्रहालय विज्ञान के विविध पहलुओं पर चर्चा की। इस कार्यशाला में वाह्य विशेषज्ञ राष्ट्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय (एनएमएनएच), नई दिल्ली की निदेशक डॉ. नाज़ रिज़वी, डॉ. शक्ति कुमार सिंह (एनएमएनएच, नई दिल्ली) और डॉ. बीनिश रफ़त (क्षेत्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, भोपाल) ने भाग लिया जिसमें विभिन्न सत्रों में इतिहास, संस्कृति, फोरेंसिक विज्ञान और पर्यावरणीय स्थिरता में संग्रहालयों की भूमिका पर विचार-विमर्श किया गया। कार्यशाला के दौरान प्रो. सुबोध जैन, डॉ. पंकज सिंह, प्रो. अथोक्पम कृष्णकांता सिंह और प्रो. देवाशीष बोस ने महत्वपूर्ण व्याख्यान दिए. उन्होंने विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक विकास, भूवैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण, और संग्रहालयों में फोरेंसिक तकनीकों के उपयोग पर चर्चा की. विशेष रूप से, डॉ. शक्ति कुमार सिंह ने 'लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट- एलआईएफई' पहल पर व्याख्यान दिया, जिसमें पर्यावरणीय स्थिरता और ईको-फ्रेंडली जीवनशैली को बढ़ावा देने पर बल दिया गया। समापन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. उन्होंने विश्वविद्यालय के संग्रहालयों को राष्ट्रीय स्तर के संस्थान के रूप में विकसित करने की प्रतिबद्धता दोहराई और इन्हें विश्वविद्यालय की 'पांच अनमोल धरोहरें' बताया. उन्होंने एनएमएनएच और ईएमआरसी के सहयोग से विश्वविद्यालय संग्रहालयों पर एक दस्तावेज़ी फिल्म (डॉक्यूमेंट्री) बनाने का सुझाव दिया और म्यूज़ियोलॉजी में डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम शुरू करने की घोषणा की, जिससे छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण और रोज़गार के अवसर मिल सकें. इस अवसर पर डॉ. नाज रिज़वी ने संग्रहालयों की शैक्षिक भूमिका पर प्रकाश डाला और संग्रहालयों में प्रदर्शनी प्रबंधन के लिए '80/20 नियम' की व्याख्या की. धन्यवाद ज्ञापन और अतिथियों के सम्मान के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

यह कार्यशाला वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण में संग्रहालयों की भूमिका को रेखांकित करने के साथ-साथ अंतरविषयक (इंटरडिसिप्लिनरी) सहयोग और शैक्षणिक संवाद को भी प्रोत्साहित करने में सफल रही. इस दौरान एनएमएनएच के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) स्थापित करने की योजना पर भी चर्चा की गई, जिससे संग्रहालय विज्ञान में दीर्घकालिक अकादमिक और शोध सहयोग को मजबूती मिलेगी।

रंगनाथन भवन में म्यूज़ियोलॉजी कार्यशाला

विश्वविद्यालय: म्यूज़ियोलॉजी में डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम शुरू होंगे

नवसिन्धु समाचार सागर. डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा रंगनाथन भवन में म्यूज़ियोलॉजी कार्यशाला के दूसरे दिन प्रतिष्ठित अतिथियों, शिक्षकों और छात्रों ने भाग लिया और संग्रहालय विज्ञान के विविध पहलुओं पर चर्चा की.

इस कार्यशाला में वाह्य विशेषज्ञ राष्ट्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय (एनएमएनएच), नई दिल्ली की निदेशक डॉ. नाज़ रिज़वी, डॉ. शक्ति कुमार सिंह (एनएमएनएच, नई दिल्ली) और डॉ. बीनिश रफ़त (क्षेत्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, भोपाल) ने भाग लिया जिसमें विभिन्न सत्रों में इतिहास, संस्कृति, फोरेंसिक विज्ञान और पर्यावरणीय स्थिरता में संग्रहालयों की भूमिका पर विचार-विमर्श किया गया.

कार्यशाला के दौरान प्रो. सुबोध जैन, डॉ. पंकज सिंह, प्रो. अथोक्पम कृष्णकांता सिंह और प्रो. देवाशीष बोस ने महत्वपूर्ण व्याख्यान दिए. उन्होंने विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक विकास, भूवैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण, और संग्रहालयों में फोरेंसिक तकनीकों के उपयोग पर चर्चा की. विशेष रूप से, डॉ. शक्ति कुमार सिंह ने 'लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट- एलआईएफई' पहल पर व्याख्यान दिया, जिसमें पर्यावरणीय स्थिरता और ईको-फ्रेंडली जीवनशैली को बढ़ावा देने पर बल दिया गया.

समापन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. उन्होंने विश्वविद्यालय के संग्रहालयों को राष्ट्रीय स्तर के संस्थान के रूप में विकसित करने की प्रतिबद्धता दोहराई और इन्हें विश्वविद्यालय की 'पांच अनमोल धरोहरें' बताया. उन्होंने एनएमएनएच और ईएमआरसी के सहयोग से विश्वविद्यालय संग्रहालयों पर एक दस्तावेज़ी फिल्म (डॉक्यूमेंट्री) बनाने का सुझाव दिया और म्यूज़ियोलॉजी में डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम शुरू करने की घोषणा की, जिससे छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण और रोज़गार के अवसर मिल सकें. इस अवसर पर डॉ. नाज़ रिज़वी ने संग्रहालयों की शैक्षिक भूमिका पर प्रकाश डाला और संग्रहालयों में प्रदर्शनी प्रबंधन के लिए '80/20 नियम' की व्याख्या की. धन्यवाद ज्ञापन और अतिथियों के सम्मान के साथ कार्यशाला का समापन हुआ.

यह कार्यशाला वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण में संग्रहालयों की भूमिका को रेखांकित करने के साथ-साथ अंतरविषयक (इंटरडिसिप्लिनरी) सहयोग और शैक्षणिक संवाद को भी प्रोत्साहित करने में सफल रही. इस दौरान एनएमएनएच के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) स्थापित करने की योजना पर भी चर्चा की गई, जिससे संग्रहालय विज्ञान में दीर्घकालिक अकादमिक और शोध सहयोग को मजबूती मिलेगी.

मध्यप्रदेश

टीकमगढ़, गुरुवार 20 फरवरी, 2025

विश्वविद्यालय : अजीम प्रेमजी फाउंडेशन में 09 विद्यार्थियों का चयन, प्लेसमेंट एवं स्टार्ट-अप सेल द्वारा संवाद सत्र का आयोजन

दबंग बुन्देलखण्ड

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट एवं स्टार्ट-अप सेल द्वारा 18 फरवरी 2025 को अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के संवाद सत्र का आयोजन विश्वविद्यालय के रंगनाथन भवन में किया गया। इस आयोजन में मुख्य वक्ता के रूप में सुब्रत कुमार मिश्रा, फील्ड प्लेसमेंट हेड, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा उनकी संस्था द्वारा चयनित विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के 09 विद्यार्थियों के साथ-साथ बड़ी संख्या में उपस्थित विद्यार्थियों के साथ संवाद सत्र में चर्चा की गई। जिसमें उन्होंने फाउंडेशन के कार्य एवं भारतीय ...

एसोसिएट रिसोर्स पर्सन के पद पर साढ़े चार लाख से पाँच लाख वार्षिक के सी.टी.सी. पर ...

... प्रदान करना है, बल्कि छात्रों को उद्योग से भी जोड़ना है, ताकि उन्हें ...

है। इस अकादमिक वर्ष आउटलुक ग्रुप, टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज, इसाफ बैंक, कारवाले डॉट काम, टाटा ए आई जी आदि कंपनियों द्वारा इस प्रकार की ड्राइव आयोजित की गयी है जिसमें तकरीबन 40 से अधिक विद्यार्थियों का चयन हुआ है। असिसटेंट प्लेसमेंट कोऑर्डिनेटर डॉ. शालिनी चौइथरानी ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को प्लेसमेंट एवं स्टार्टअप सेल द्वारा किये जा रहे प्रयासों की जानकारी दी तथा विभिन्न प्लेसमेंट ड्राइव में सम्मिलित हो रहे विद्यार्थियों की सराहना की तथा ...

विश्वविद्यालय- अजीम प्रेमजी फाउंडेशन में 09 विद्यार्थियों का चयन, प्लेसमेंट एवं स्टार्ट-अप सेल द्वारा संवाद सत्र का आयोजन

परिहार गर्जना न्यूज। सागर. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट एवं स्टार्ट-अप सेल द्वारा 18 फरवरी 2025 को अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के संवाद सत्र का आयोजन विश्वविद्यालय के रंगनाथन भवन में किया गया. इस आयोजन में मुख्य वक्ता के रूप में सुब्रत कुमार मिश्रा, फील्ड प्लेसमेंट हेड, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा उनकी संस्था द्वारा चयनित विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के 09 विद्यार्थियों के साथ-साथ बड़ी संख्या में उपस्थित विद्यार्थियों के साथ ... जिसमें उन्होंने फाउंडेशन के कार्य ... संवाद ... एवं भा... के संब...

छात्रों के विभिन्न कंपनियों में चयन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का लक्ष्य न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है, बल्कि छात्रों को उद्योग से भी जोड़ना है, ताकि उन्हें बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त हो सके. आयोजन में विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट कोऑर्डिनेटर डॉ. अभिषेक बंसल ने बताया कि प्लेसमेंट सेल की संरक्षक एवं विश्वविद्यालय की कुलपति के प्रयासों के कारण ही यह सब संभव हो सका है. उन्होंने कहा कि प्लेसमेंट सेल निरंतर अच्छे प्लेसमेंट के लिए तत्पर रहा है एवं इस दिशा में लगातार कार्य कर रहा है. इस अकादमिक वर्ष आउटलुक ग्रुप, टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज, इसाफ बैंक, कारवाले डॉट काम, टाटा ए आई जी आदि सर्विसेज ... की ड्राइव आयोजित की गयी है जिसमें ...

दैनिक भास्कर

विवि का लक्ष्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ विद्यार्थियों को उद्योग से जोड़ना: कुलपति

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट एवं स्टार्टअप सेल द्वारा अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के संवाद सत्र का आयोजन विश्वविद्यालय के रंगनाथन भवन में किया गया। इस आयोजन में मुख्य वक्ता के रूप में सुब्रत कुमार मिश्रा, फील्ड प्लेसमेंट हेड अजीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा उनकी संस्था द्वारा चयनित विश्वविद्यालय के विभिन्न ...

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विद्यार्थियों के विभिन्न कंपनियों में चयन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का लक्ष्य न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है, बल्कि छात्रों को उद्योग से भी जोड़ना है, ताकि उन्हें बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकें। विवि के प्लेसमेंट कोऑर्डिनेटर डॉ. अभिषेक बंसल ने बताया कि प्लेसमेंट सेल की संरक्षक एवं विश्वविद्यालय की कुलपति ...

गैस क्रोमैटोग्राफी मास स्पेक्ट्रोमेट्री पर एक दिवसीय कार्यशाला का हुआ आयोजन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में उन्नत अनुसंधान केंद्र सीएआर में गैस क्रोमैटोग्राफी मास स्पेक्ट्रोमेट्री पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य शोध की गुणवत्ता को बढ़ाना और विवि को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाना था। कार्यशाला का आयोजन केमिस्ट्री विभाग द्वारा किया गया। जिसमें 35 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रो. श्वेता यादव की पहल पर विवि में समय-समय पर इस तरह की कार्यशालायें आयोजित की जाती हैं। कार्यशाला की शुरुआत डॉ. विवेक कुमार पांडे सीएआर ने उन्नत अनुसंधान केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ की। उन्होंने इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के महत्व पर प्रकाश डालते हुये प्रतिभागियों को शुभकामनायें दीं। मुख्य वक्ता डॉ. कल्पतरु दास प्रभारी शिक्षक ने गैस क्रोमैटोग्राफी मास स्पेक्ट्रोमेट्री तकनीक की महत्ता, सिद्धांत और अनुप्रयोगों पर विस्तृत जानकारी दी। बताया कि यह तकनीक चिकित्सा विज्ञान, दवाओं की खोज, पर्यावरण प्रदूषण, पेट्रोलियम उद्योग और खाद्य पदार्थों में कीटनाशकों व हानिकारक रसायनों की पहचान में उपयोगी होती है। ...

विश्वविद्यालय : नेहरूवियन थॉट्स इन लिटरेचर एंड हिस्ट्री पर पुनश्चर्या कार्यक्रम का शुभारंभ

दबंग बुन्देलखण्ड

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के मालवीय शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र में नेहरूवियन थॉट्स इन लिटरेचर एन्ड हिस्ट्री पर पुनश्चर्या कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. पंकज सिंह ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत किया और बताया कि इस कार्यक्रम में हमारे मध्य भारत वर्ष के लगभग 20 राज्यों से प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया है। उन्होंने बताया कि इतिहास दर्शन के बिना अधूरा है। यह कार्यक्रम 20 फरवरी से 6 मार्च तक चलेगा। जिसमें प्रो. ... प्रो. हेरम चतुर्वेदी, अनिल दत्त मिश्र जैसे ... विद्वान इस कार्यक्रम ... उन्होंने कहा कि ... उपलब्धियां भारत ... वास्तविक रूप ... साकार हो रहा। ... के रूप में ... अंबिकादत्त शर्मा ... प्रस्तुत किया ... उसी देश के ... मना रहे हैं, जि...

पंडित जवाहर लाल नेहरू पर थी और आज 75 वर्षों में जहां यह देश पहुंचा उस रास्ते का निर्माण पंडित नेहरू ने ...

ऑफ भारत नेहरू की संकल्पना थी जो धर्म से पोषित विज्ञान के अनुप्रेरित था। उन्होंने बताया कि जिस समय नेहरू देश के प्रधानमंत्री बने इस समय देश में एक ...

की नींव रखी और दिशा को तय करने के साथ देश के सभी वर्ग एवं विचारों का नेतृत्व किया। अपने वक्तव्य के दौरान प्रो. अहिरवार ने नेहरू और सरदार पटेल के रिश्तों और विचारों की एकरूपता पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला और बताया कि जो आज भी भारत में लोकतंत्र इतना मजबूत है, यह नेहरू की देन है। प्रो. अहिरवार ने बताया कि हमें देश के नायकों को याद रखना चाहिए नहीं तो आजादी कब गुलामी में तब्दील हो जाती है, पता नहीं चलता। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति के प्रतिनिधि के तौर पर प्रो. बी.के. श्रीवास्तव ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सर्व प्रथम इस ... डॉ. पंकज ...

विश्वविद्यालयः आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस एण्ड इट्स एप्लीकेशन विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭ सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग द्वारा विशेष व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत 'आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस एण्ड इट्स एप्लीकेशन' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. अतुल एम. गोंसाई, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात उपस्थित थे।

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि अतुल एम. गोंसाई, प्रो. आर. के. गंगेले अधिष्ठाता, गणितीय एवं ... और कार्यक्रम के ... अभिषेक बॅसल, ... म्प्यूटर विज्ञान ...

है. प्रो. आर.के. गंगेले ने इस कोर्स की सराहना करते हुए बताया कि एआई टेक्नोलॉजी में दक्षता हासिल कर विद्यार्थी आगामी समय में अच्छे पैकेज पर प्लेसमेंट के अवसर प्राप्त कर सकेंगे।

प्रो. गोंसाई ने ...

और डीप लर्निंग के माध्यम से कैसे डेटा से नई संभावनाएं उत्पन्न की जा रही हैं और इनका उपयोग भविष्य में निर्णय लेने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने में किया जाएगा। ... में कम्प्यूटर ... के विद्यार्थी, ... पाठ्यक्रम के ... के सदस्य बड़ी ... है। छात्रों ने प्रो. ... अनुसंधान और ... को लेकर प्रश्न ... विस्तृत उत्तर ... में कैरियर ... क कौशल, ... ज्ञान और ... के बारे में ... साझा की। ... कांत ने ...

विश्वविद्यालयः आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस एण्ड इट्स एप्लीकेशन विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

दै.जनचिंगारी

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग द्वारा विशेष व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत 'आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस एण्ड इट्स एप्लीकेशन' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन दिनांक 20.02.2025 को किया गया. इस व्याख्यान में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. अतुल एम. गोंसाई, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात उपस्थित थे.

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि अतुल एम. गोंसाई, प्रो. आर. के. गंगेले अधिष्ठाता, गणितीय एवं भौतिकी विज्ञान और कार्यक्रम के आयोजक डॉ. अभिषेक बॅसल, विभागाध्यक्ष कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग ने द्वीप प्रज्वलित कर किया. कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में विभागाध्यक्ष डॉ. बॅसल ने एआई के दैनिक उपयोग में होने वाले विभिन्न अनुप्रयोग पहलुओं पर चर्चा की. उन्होंने बताया कि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के प्रयासो से एआई में स्नातकोत्तर डिग्री (एमएससी इन एआई एण्ड बीडीए) जुलाई 2025 सत्र से कम्प्यूटर विभाग में शुरू किया जा रहा है. जिसका रजिस्ट्रेशन सीयूईटीक्कपीजी से प्रारम्भ हो चुका है. प्रो. आर.के. गंगेले ने इस कोर्स की सराहना करते हुए बताया कि एआई टेक्नोलॉजी में दक्षता हासिल कर विद्यार्थी आगामी समय में अच्छे पैकेज पर प्लेसमेंट के अवसर प्राप्त कर सकेंगे.

प्रो. गोंसाई ने अपने व्याख्यान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस) एवं मशीन लर्निंग के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की. उन्होने बताया कि एआई केवल एक तकनीकी अवधारणा नहीं है, बल्कि यह आधुनिक जीवन के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है. उन्होंने एआई के स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यापार, साइबर सुरक्षा, कृषि, वित्तीय सेवाओं और औद्योगिक स्वचालन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे व्यापक प्रयोग पर प्रकाश डाला. उन्होने बताया कि मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग के माध्यम से कैसे डेटा से नई संभावनाएं उत्पन्न की जा रही हैं और इनका उपयोग भविष्य में निर्णय लेने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने में किया जाएगा।

व्याख्यान में कम्प्यूटर एप्लीकेशन विभाग के विद्यार्थी, शिक्षक और अन्य पाठ्यक्रम के शोधार्थी एवं संकाय के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित रहे. छात्रों ने प्रो. गोसाई से एआई में अनुसंधान और कैरियर के अवसरों को लेकर प्रश्न पूछे, जिनका उन्होनें विस्तृत उत्तर दिया. उन्होंने एआई में कैरियर निर्माण के लिए आवश्यक कौशल, शोध के नवीनतम रूझान और उद्योगों में एआई की मांग के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी साझा की. कार्यक्रम के अंत में श्री कमल कांत ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

दैनिक भास्कर

आज विद्यार्थियों के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सोमवार को शाम 4 बजे स्वर्ण जयंती सभागार में उन्मुखीकरण कार्यक्रम होगा। बीएससी, बीए, बीकॉम एवं बीसीए पाठ्यक्रमों के छठवें सेमेस्टर के विद्यार्थियों के लिए फोर ईयर अंडर ग्रेजुएट प्रोग्राम के लिए यह कार्यक्रम होगा। इसमें विवि के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षक एवं विद्यार्थियों को फोर ईयर अंडर ग्रेजुएट प्रोग्राम के बारे में विषय वस्तु, पाठ्यक्रम संरचना एवं विषय चयन को लेकर विस्तार से जानकारी दी जाएगी।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में संचालित योजनाओं की समीक्षा कार्यक्रम का आयोजन

आर्थिक, सामाजिक सशक्तीकरण से ही विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त होगा : डॉ. वीरेंद्र कुमार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सागर

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली से प्राप्त निर्देशों के अनुपालन में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर म.प्र. में संचालित योजनाओं की समीक्षा कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में आयोजित किया गया। इस समीक्षा बैठक में डॉ. वीरेन्द्र कुमार सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री, भारत सरकार,नई दिल्ली एवं अध्यक्ष, डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, नई दिल्ली उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि सागर सांसद डॉ. लता वानखेड़े एवं विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति रही।

समीक्षा बैठक में डॉ. अम्बेडकर उत्कृष्टता केंद्र की समन्वयक प्रो. चंदा ने स्वागत वक्तव्य देते हुए केंद्र की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी साझा की। प्रो. राजेश गौतम ने डॉ. अम्बेडकर चेयर द्वारा की जा रही गतिविधियों एवं उल्लेखनीय कार्यक्रमों ... जानकारी दी। ... अधिष्ठाता प्रो. ... अभियान का वि... विश्वविद्यालय ... गतिविधियों एव... जानकारी दी।

इस अवसर प... कहा कि मंत्री डॉ. ... इस विश्वविद्यालय ... कारण हमें सामाजि... मंत्रालय से लगात... मंत्रालय के सहयोग ... उत्कृष्टता केंद्र, डॉ. अ... को शुरू किया तथा ... को पूरा किया। विश्व...

...राम छात्रावास योजना एवं अन्य कई योजनाओं के तहत विभिन्न प्रस्ताव मंत्रालय को भेजे हैं जिनमें पूरा सहयोग हमें प्राप्त होगा। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विशेष आग्रह करते हुए कहा कि मंत्रालय द्वारा यूजीसी नेट हेतु कोचिंग की स्कीम को फिर से शुरू की ...

नशा मुक्त भारत अभियान को और आगे बढ़ाने के लिए ऐसे गावों और क्षेत्रों को चिन्हित कीजिये जहां जागरूकता और विकास की सबसे ज्यादा आवश्यकता है। ...

आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण से बनेगा विकसित भारत: डॉ. वीरेंद्र कुमार

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की योजनाओं की समीक्षा

भास्कर संवाददाता | सागर

कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय मंत्री, सांसद सहित अन्य प्रतिनिधि।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की योजनाओं की समीक्षा बैठक हुई। केंद्रीय मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार बैठक में शामिल हुए। सागर सांसद डॉ. लता वानखेड़े और ... प्रो. नीलिमा गुप्ता भी ...

... से विशेष लगाव है। मंत्रालय के सहयोग से डॉ. अंबेडकर उत्कृष्टता केंद्र और डॉ. अंबेडकर चेयर की स्थापना हुई। छात्रावासों का निर्माण पूरा हुआ। विश्वविद्यालय ने बाबू जगजीवन राम छात्रावास योजना समेत कई प्रस्ताव मंत्रालय को भेजे हैं। उन्होंने यूजीसी नेट कोचिंग स्कीम फिर से शुरू करने का आग्रह किया। केंद्रीय मंत्री और सांसद का प्रो. वायएस ठकुर, प्रो. डीके नेमा, प्रो. अजीत जायसवाल, डॉ. पंकज तिवारी, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. अशोक अहिरवार समेत शिक्षकों ने ... भेंट कर सम्मान किया। ... शालिनी चोइथरानी ... डॉ. सत्यप्रकाश ...

...डेट्स ने दिया गार्ड ... गौर समाधि पर ... केंद्रीय मंत्री और ... के आने पर एनसीसी ... गार्ड ऑफ ऑनर दिया। ...

आर्थिक, सामाजिक सशक्तिकरण से ही विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त होगा: डॉ. वीरेंद्र कुमार

सागर(एसबीन्यूज)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली से प्राप्त निर्देशों के अनुपालन में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर म.प्र. में संचालित योजनाओं की समीक्षा कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में आयोजित किया गया. इस समीक्षा बैठक में डॉ. वीरेन्द्र कुमार जी, माननीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली एवं अध्यक्ष, डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, नई दिल्ली उपस्थित रहे. कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि सागर सांसद डॉ. लता वानखेड़े एवं विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति रही।

समीक्षा बैठक में डॉ. अम्बेडकर उत्कृष्टता केंद्र की समन्वयक प्रो. चंदा ने स्वागत वक्तव्य देते हुए केंद्र की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी साझा की. प्रो. राजेश गौतम ने ... की जा रही ...

विस्तारपूर्वक जानकारी दी. इसी क्रम में छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. डी.के. नेमा ने नशा मुक्त भारत अभियान का प्रस्तुत करते हुए विश्व...

आयोजित विभिन्न गतिविधियों एवं जागरूकता कार्यक्रमों की जानकारी दी। सागर सांसद डॉ. लता वानखेड़े ने विश्वविद्यालय की गतिविधियों की सराहना करते हुए कहा कि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की योजनाओं एवं विभिन्न गतिविधियों के संचालन में आगे बढ़कर अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहा है. उन्होंने कहा कि नशा जैसी कुरीतियों को दूर करने के लिए बहुत व्यापक स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में इस कुरीति को दूर करके ही हम विकसित भारत के निर्माण में सहयोग कर सकते हैं। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि माननीय मंत्री डॉ. वीरेन्द्र सिंह जी का बुंदेलखंड और इस विश्वविद्यालय से विशेष लगाव है जिसके ...

केन्द्रों को शुरू किया तथा छात्रावासों के निर्माण कार्य को पूरा किया. विश्वविद्यालय ने बाबू जगजीवन राम छात्रावास योजना एवं अन्य कई योजनाओं के तहत विभिन्न प्रस्ताव मंत्रालय को भेजे हैं जिनमें पूरा सहयोग हमें प्राप्त होगा। इस अवसर पर पुरा छात्र केन्द्रीय मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार एवं सांसद डॉ. लता वानखेड़े का विश्वविद्यालय के प्रो.वाय. एस. ठाकुर, प्रो. डी. के. नेमा, प्रो अजीत जायसवाल, डॉ पंकज तिवारी, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. राजेन्द्र यादव, प्रो. कालीनाथ झा, प्रो. यू. के. पाटिल, प्रो. उत्सव आनंद, प्रो. कासव, डॉ. टेकाम, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. रानी दुबे, डॉ.रश्मि जैन, डॉ. विवेक जायसवाल आदि विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, शोधार्थी एवं कर्मचारियों ने ...

डॉ. हरिसिंह गौर विवि के अभिमंच सभागार में समीक्षा बैठक का आयोजन

विवि में अतीत की स्मृतियां ताजा हो जाती हैं

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के निर्देश अनुसार संचालित योजनाओं के समीक्षा कार्यक्रम का आयोजन शनिवार को किया। बैठक में मुख्य अतिथि सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने कहा कि मुझे सागर शहर और इस विश्वविद्यालय में आना सबसे ज्यादा सु...

एवं विभिन्न गतिविधियों के संचालन में आगे बढ़कर अपनी भूमिका का निर्वाहन कर रहा है।

उत्कृष्टता केंद्र की समन्वयक प्रो. चंदा ने स्वागत भाषण दिया। प्रो. राजेश गौतम ने डॉ. अंबेडकर ...

आर्थिक, सामाजिक सशक्तीकरण से ही विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त होगा

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर: डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में शासन द्वारा संचालित योजनाओं की समीक्षा कार्यक्रम का आयोजन अभिमंच सभागार में किया गया। समीक्षा बैठक में सामाजिक न्याय और अधिकारिता के केंद्रीय मंत्री डा. वीरेंद्र कुमार उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि सागर सांसद डा. लता वानखेड़े एवं विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति रही। समीक्षा बैठक में डा. आंबेडकर उत्कृष्टता केंद्र की समंवयक प्रो. चंदा ने केंद्र की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी दी। प्रो. राजेश गौतम ने डा. आंबेडकर चेयर द्वारा की जा रही गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की जानकारी दी। इसी क्रम में छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. डीके नेमा ने नशा मुक्त भारत अभियान का विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और विवि द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों एवं जागरूकता कार्यक्रमों की जानकारी दी।

सागर सांसद डा. लता वानखेड़े ने कहा कि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की योजनाओं एवं विभिन्न गेतिविधियों के संचालन में आगे बढ़कर अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहा है। उन्होंने कहा कि नशा जैसी कुरीतियों को दूर करने के

कैबिनेट मंत्री डा. वीरेंद्र कुमार गौर संग्रहालय का अवलोकन करते हुए। • नवदुनिया

लिए बहुत व्यापक स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में इस कुरीति को दूर करके ही हम विकसित भारत के निर्माण में सहयोग कर सकते हैं।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मंत्री डा. वीरेंद्र कुमार का बुंदेलखंड और इस विवि से विशेष लगाव ...

कहा कि मंत्रालय द्वारा यूजीसी नेट के लिए कोचिंग की स्कीम को फिर से शुरू की जाए। केंद्रीय मंत्री डा. वीरेंद्र कुमार ने कहा कि मुझे सागर शहर और इस विवि में आना सबसे ज्यादा सुकून देता है। यहां आने पर अतीत की स्मृतियां ताजा हो जाती हैं। उन्होंने ... करते हुए कहा ... ऊर्जा और ... पर मंत्री व ... प्रो. वायएस ... प्रो अजीत ... तिवारी, प्रो. ... अहिरवार, ...लीनाथ झा, ...व आनंद, ... डा. संजय ...श्मि जैन, ... आदि ... ने

वैदिक अध्ययन विभाग के जीतेन्द्र ने पहले प्रयास में नेट परीक्षा उत्तीर्ण की

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि की दूरदर्शी कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन हेतु कुछ नवीन विभागों का प्रारंभ पिछले अकादमिक सत्र में प्रारंभ किया था। उन विभागों ने एक ही वर्ष में फल देना प्रारंभ कर दिया। वैदिक अध्ययन विभाग के अन्तर्गत भारतीय ... पाठ्यक्रम चल रहा है, ... सेमेस्टर समाप्त हुआ। ...न्द्र सिंह दांगी ने पहले ... उत्तीर्ण कर विवि में ... फेसर की योग्यता प्राप्त ... प्रो. दिवाकर शुक्ला ने ... बताया कि इस विभाग ... ही कुलपति इस नवीन ... थी। विभाग के शिक्षकों ... शिवानी खरे ने भी जीतेन्द्र ... हेतु बधाइयां दीं। जीतेन्द्र ... की लगन और माता-पिता ... यह सफलता अर्जित की। ... पढ़ना अपने आप में एक ... संस्कृत और भारतीय दर्शन ... पकों ने वेदों, प्राचीन शास्त्रों, ... ज्ञान, अर्थव्यवस्था, गणित ... इतने स्पष्ट रूप से समझाया ... कि हमारे प्राचीन भारतीय ... ज्ञान का सृजन किया। हम ... करण के कारण अपने ऋषियों ... नहीं सके। भारतीय ज्ञान परंपरा ... का निर्णय मेरे जीवन का एक ...

मातृभाषा हमारे रक्त की भाषा है - प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी

परिहार गर्जना न्यूज। सागर। दिनांक 21 फरवरी 2025 को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दि... के उपलक्ष्य में आचार्य नंददुलारे वाजपेई सभागार में ... प्रकोष्ठ द्वारा %मातृभाषा- सांस्कृतिक पहचान एवं ऐतिहासिक ... का आयोजन किया गया ।

कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती और डॉ गौ... के साथ हुई ।प्रो. राजेन्द्र यादव ने स्वागत वक्तव्य दिया। ... उसकी उपयोगिता को लक्षित करते हुए अपने विचार सभी ... डॉ. संजय नाइनवाड ने किया ।कार्यक्रम में गरिमा यादव, क... सिंह, अभय सिंह, दीपाली, आशीष, गोलू सेन इत्यादि विद्... मातृभाषाओं जैसे कि अवधी ,बुंदेली,भोजपुरी, बघेली,मैथि... ,हास्य गीत एवं भाषण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हिंदी विभाग के ... त्रिपाठी ने विभाग में बुंदेली पीठ और ईसुरी पत्रिका द्वार... आकर्षित किया और उन्होंने कहा कि अपनी मातृभाषा प... क्योंकि मातृभाषा हमारे रक्त की भाषा है ।मातृभाषा मनुष्य ... सबसे बड़ा माध्यम है ।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में वि... अधिकारी श्री संतोष सोहगौरा ने सभी को अपनी शुभका... संयोजन और संचालन डॉ हिमांशु कुमार ने किया। विभा... अरविन्द कुमार, डॉ अफ़रोज़ बेगम, डॉ लक्ष्मी पाण्डेय तथा ... अपने विचार साझा किए ।कार्यक्रम में हिंदी और अन्य वि... विद्यार्थी बड़ी संख्या में मौजूद रहे ।कार्यक्रम में तकनीकी सह... प्रजापति,अंकित भारद्वाज, गोविंद सिंह, सुरेंद्र तिवारी, सृष्टि सि... ने किया। राजभाषा प्रकोष्ठ के अभिषेक सक्सेना ने सबका आ...

मातृभाषा हमारे रक्त की भाषा है - प्रो. त्रिपाठी

मुकेश हरयानी जिला ब्यूरो चीफ सागर

सागर। अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में आचार्य नंददुलारे वाजपेई सभागार में हिंदी विभाग और राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा मातृभाषाः सांस्कृतिक पहचान एवं ऐतिहासिक महत्व विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।

कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती और डॉ गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुई ।प्रो. राजेन्द्र यादव ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने भाषा के महत्व और उसकी उपयोगिता को लक्षित करते हुए अपने विचार सभी से साझा किए ।विषय प्रवर्तन डॉ. संजय नाइनवाड ने किया ।कार्यक्रम में गरिमा यादव, कंचन सोनी, तनु झा, अंकित सिंह, अभय सिंह, दीपाली, आशीष, गोलू सेन इत्यादि विद्यार्थियों ने भी अपनी अपनी मातृभाषाओं जैसे कि अवधी ,बुंदेली,भोजपुरी, बघेली,मैथिली तथा बंगाली में गायन ,हास्य गीत एवं भाषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो.आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने विभाग में बुंदेली पीठ

और ईसुरी पत्रिका द्वारा हो रहे कार्यों पर ध्यान आकर्षित किया और उन्होंने कहा कि अपनी मातृभाषा पर हमें गर्व करना चाहिए क्योंकि मातृभाषा हमारे रक्त की भाषा है ।मातृभाषा मनुष्य की सहज अभिव्यक्ति का सबसे बड़ा माध्यम है ।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के राजभाषा अधिकारी श्री संतोष सोहगौरा ने सभी को अपनी शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम का संयोजन और संचालन डॉ हिमांशु कुमार ने किया। विभाग के प्राध्यापकों में डॉ अरविन्द कुमार, डॉ अफ़रोज़ बेगम, डॉ लक्ष्मी पाण्डेय तथा डॉ अवधेश कुमार ने भी अपने विचार साझा किए ।कार्यक्रम में हिंदी और अन्य विभागों के शोधार्थी और विद्यार्थी बड़ी संख्या में मौजूद रहे ।कार्यक्रम में तकनीकी सहयोग शोधार्थी -सूर्यकांत प्रजापति,अंकित भारद्वाज, गोविंद सिंह, सुरेंद्र तिवारी, सृष्टि सिंह, शुभांगी और प्रतिभा ने किया। राजभाषा प्रकोष्ठ के अभिषेक सक्सेना ने सबका आभार ज्ञापन किया।

भारतीय ज्ञान परंपरा में संगीत का महत्व पर हुआ राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के संगीत विभाग में दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी का शुभारंभ वैदिक गान एवं सरस्वती वंदना से किया गया, जिसके पश्चात अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान हुआ। उद्घाटन सत्र में डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर ने संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने भारतीय ज्ञान परंपरा में संगीत की भूमिका को

संगीत ग्रंथों की महत्ता पर प्रकाश डाला ... अध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार ... अनुभव साझा किये ... मानवी श्रीवास्तव ... ने व्यक्त किया। त... रागों के विविध गुणों ... से समझाया। उनकी प्र... और हारमोनियम पर स्तु... तकनीकी सत्र के मुख्य ... जिन्होंने सितार पर व्याख्या... गायकी के विकास पर प्रकाश ... ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत कि... के डॉ. श्रीपाद आरुणकर ने राग... प्रस्तुत किया, जिसमें हारमोनिय... संगत की। इस सत्र का संचालन ... सायंकालीन संगीत संध्या में डॉ. मो... मधुवंती की प्रस्तुति दी, जिसमें हारमो...

समकालिक थर्मल विश्लेषण (एसटीए) और थर्मोग्रैविमेट्रिक विश्लेषण (टीजीए) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

खबर बुन्देलखण्ड

सागर। डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में समकालिक थर्मल विश्लेषण (एसटीए) और थर्मोग्रैविमेट्रिक विश्लेषण (टीजीए) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 35 प्रतिभागियों ने सहभागिता की. डॉ. विवेक कुमार पांडे ने सत्र की शुरूआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी. उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्... ...यादव ने केंद्र के ...

साइंसेज के विविध क्षेत्र में थर्मोग्रैविमेट्रिक विश्लेषण (टीजीए) तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत, सैम्पल तैयार करने और सुरक्षा ... के बारे में बहुत ही ...

की संरचना, शुद्धता, अपघटन प्रतिक्रियाओं, अपघटन तापमान और अवशोषित नमी की मात्रा को मापता है. समकालिक थर्मल विश्लेषण (एसटीए) के साथ आपको अपने नमूने के बारे में अधिक संपूर्ण थर्मल जानकारी मिलती ... एक्जोथर्मिक और ...

संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ. विभिन्न पृष्ठभूमि से सैम्पल तैयार करने पर विशेष जोर दिया गया. प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई. प्रो. रणवीर कुमार ने प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया एवं उनका उत्तर दिया. सैम्पल तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को समूहों में विभाजित किया गया था. प्रत्येक समूह ने सैम्पल का तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया. प्रतिभागियों द्वारा समकालिक थर्मल विश्लेषण (एसटीए) पर संपूर्ण व्यावहारिक सत्र सीएआर तकनीकी टीम के डॉ. विवेक कुमार पांडे, श्री शिवप्रकाश ... सौरभ साह, श्री आशीष ... और श्री ... देखरेख

इतिहास विभाग के पारस को जेआरएफ व विजय प्रकाश को नेट में मिली सफलता

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के इतिहास विभाग के शोधार्थी पारस चौरसिया ने यूजीसी जेआरएफ एवं पीजी छात्र विजय प्रकाश सिंह ने यूजीसी नेट परीक्षा में सफलता प्राप्त की। नेट की परीक्षा में सफलता प्राप्त करने पर सहा. प्राध्यापक हेतु योग्यता प्राप्त कर ली है। छात्रों की इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने प्रसन्नता व्यक्त करते हये सफल छात्रों को बधाई प्रेषित की। विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. बीके श्रीवास्तव, डॉ.

प्रवृत्तियों एवं नवाचार विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आज से

सागर, प्रदेश टाईम्स। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के ललित कला एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है जिसका विषय है- प्रदर्शनकारी कला एवं ललितकला = समकालीन विमर्श, प्रवृत्तियां एवं नवाचार है. संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में आयोजित किया जा रहा है जिसमें देश की ख्यातिलब्ध रंगनिर्देशक, रंग चिंतक एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक प्रो. देवेन्द्र राज अंकुर एवं ख्यातिलब्ध चित्रकार एवं उ. प्र. राज्य ललित कला अकादमी के अध्यक्ष डॉ. सुनील विश्वकर्मा उपस्थित रहेंगे. कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता करेंगी. विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता डॉ. बलवंत सिंह भदौरिया ने बताया कि इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के दो दिनों के चार सत्रों में कलाओं में समसामयिक विमर्श, प्रवृत्तियां एवं नवाचार विषय पर चर्चा होगी. जिसमें देश भर के लगभग 40 प्रतिभागी एवं स्थानीय लगभग 80 प्रतिभागी हिस्सा लेंगे. सेमिनार के समापन समारोह में प्रदर्शनकारी कला विभाग के छात्र गिरीश करनाड द्वारा लिखित नाटक हयवदन एवं नृत्य तथा विभोर बैंड की प्रस्तुति भी होगी. राष्ट्रीय संगोष्ठी के समन्वयक डॉ. नीरज उपाध्याय ने बताया कि दो दिनों तक चलने वाली इस राष्ट्रीय संगोष्ठी ... रंगकर्मियों, रंगचिंतको, एवं कलाकर्मियों का व्याख्यान होगा जिनमें राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के एसोसिएट ... महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा,

वैदिक संगीत और ध्वनि विज्ञान से गर्भ में पल रहे बच्चे के लिए रचा जा रहा संगीत

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विवि के संगीत विभाग में राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी आयोजित हुई। भारतीय ज्ञान परंपरा एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में नवाचार पर आधारित सेमिनार में देश के विभिन्न स्थानों से आए संगीत के ...

जाता था। राजा मान सिंह तोमर विश्वविद्यालय ग्वालियर की ...

डॉ राहुल स्वर्णकार ने आभार माना। सत्र का संचालन अनुकृति रावत और मानवी श्रीवास्तव ने किया। उद्घाटन सत्र में डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर ने संगोष्ठी के मूल उद्देश्य ...

महर्षि अगस्त्य उत्तर व दक्षिण भारत के संस्कृति के समन्वयक थे

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय ...

... के संस्कृति के समन्वयक के रूप में बतलाया, जिन्होंने ज्ञान-विज्ञान एवं ...

गौर पीठ के लिए प्रो. कठल ने दी एक लाख की राशि

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के सेवानिवृत प्रो. पीके कठल ने विश्वविद्यालय की गौर पीठ को एक लाख रूपये की राशि प्रदान की है। उन्होंने चेक के माध्यम से यह राशि विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को सौंपी। इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि विवि डॉ. गौर के महान स्वप्नों को साकार करने की दिशा में लगातार प्रयासरत है। गौर पीठ के माध्यम से प्रबुद्ध समाज और आम जनमानस से भी लगातार अपार सहयोग मिल रहा है। प्रो. कठल ने इस अवसर पर कहा कि डॉ. गौर द्वारा स्थापित इस महान संस्था का उनके जीवन में सबसे बड़ा योगदान है। मैं कृतज्ञ हूं कि उनके द्वारा स्थापित शिक्षा के मंदिर में अध्ययन और अध्यापन का अवसर मिला। इस अवसर पर गौर पीठ के समन्वयक प्रो. नवीन कानगो उपस्थित थे। प्रो. कानगो ने बताया कि शीघ्र ही कुलपति की अध्यक्षता में गौर पीठ के समस्त दानदाताओं की एक बैठक आयोजित की जायेगी। जिसमें गौर पीठ के उद्देश्यों को आगे बढाने हेतु दान से प्राप्त राशि के उपयोग पर चर्चा की जायेगी।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारम्भ

श्रेष्ठ कलाकार बनने के लिए देखने और सुनने की दृष्टि और समझ आवश्यकः प्रो. देवेंद्र राज

आचरण संवाददाता

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के ललित कला एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग द्वारा प्रदर्शनकारी कला एवं ललितकला = समकालीन विमर्श, प्रवृत्तियां एवं नवाचार विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारम्भ विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण के साथ किया गया. उद्घाटन सत्र में देश की ख्यातिलब्ध रंगनिर्देशक, रंग चिंतक एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक प्रो. देवेन्द्र राज अंकुर एवं उ.प्र. राज्य ललित कला अकादमी के अध्यक्ष एवं प्रख्यात चित्रकार डॉ. सुनील विश्वकर्मा उपस्थित रहे विशिष्ट अतिथि थे. प्रदर्शनकारी कला एवं ललित कला विभाग के अधिष्ठाता डॉ. बलवंत सिंह भदौरिया ने स्वागत वक्तव्य दिया. संगोष्ठी के संयोजक डॉ. नीरज उपाध्याय ने संगोष्ठी का परिचय एवं प्रारूप को विस्तारपूर्वक बताया।

विशिष्ट अतिथि प्रो. देवेन्द्र राज अंकुर ने वक्तव्य देते हुए कहा कि सारी कलाएं देखने एवं सुनने से संबंधित हैं। उन्होंने 'देखने का स्वाद' लेख को साझा करते हुए बताया कि चित्र, मूर्तिशिल्प सभी को ठहर कर देखना चाहिए। कलाकृति को विभिन्न दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता होती है जिसमें समय महत्त्वपूर्ण है. उन्होंने कहा कि हर दर्शक, श्रोता चाहे तो वह एक कलाकार हो सकता है. उन्होंने कहा कि कलाकार की रचना में रचना प्रक्रिया सबसे आवश्यक तत्व है जिसको समझा जाना चाहिए. देश-विदेश के विभिन्न संग्रहालयों में ऐसी अनमोल कलाकृतियाँ हैं जिनको देखना और समझना ही अपने आप में बड़ा कार्य है. आधुनिक और पुरानी रचना विधियों को वर्तमान के प्ररिप्रेक्ष्य में तभी समझा जा सकता है जब हम देखने के आनंद की अनुभूति करें. कलाकार होने के लिए दृष्टि और समझ बहुत आवश्यक तत्व है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. सुनील विश्वकर्मा ने कहा कि आज हम कला के विषय-वस्तु पर चर्चा एवं विमर्श करने हेतु उपस्थित हुए है. हमारे वेदों में 64 कलाओं के संवर्धन के बारे में उल्लेख मिलता है. इनमें बाल बनाने, भोजन परोसने से लेकर

चोरी को भी एक कला के रूप में बताया गया है।

इसी सत्र में ग्वालियर से पधारे जयंत सिंह तोमर ने वक्तव्य देते हुए कहा कि आधुनिकता के समय में हमें अपनी जड़ों को नहीं भूलना चाहिए।

दो दिविसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के अलग-अलग राज्यों से रंगकर्मियों, रंगचिंतकों, एवं कलाकर्मियों का व्याख्यान होगा जिनमें राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के एसोसिएट प्रो. राम जी बाली, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, वाराणसी केन्द्र के निदेशक प्रवीण कुमार गुंजन, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वाविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र के रंगमंच विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ सतीश पावडे, राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वाविद्यालय के रंगमंच विभागध्यक्ष डॉ हिमांशु द्विवेदी, दिल्ली विश्वाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ आशुतोष, इग्नू नई दिल्ली के ललित कला विभाग के अध्यक्ष प्रो. लक्ष्मण प्रसाद, प्रख्यात कला समीक्षक जयंत तोमर एवं सुमन कुमार सिंह, साँची विश्वाविद्यालय से डॉ सुष्मिता नंदी, बुंदेलखंड विश्वाविद्यालय झाँसी से डॉ श्वेता पाण्डेय सहित प्रख्यात सेरेमिक कलाकार सुश्री कोपल सेठ, विभाग के विद्यार्थी, विवि के शिक्षक एवं शोधार्थी उपस्थित रहे. राष्ट्रीय संगोष्ठी के चार सत्रों में कलाओं में समसामयिक विमर्श, प्रवृत्तियां एवं नवाचार विषय पर चर्चा हो रही है. जिसमें देश भर के लगभग 40 प्रतिभागी एवं विभाग के 80 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे है. सेमिनार के समापन समारोह में प्रदर्शनकारी कला विभाग के छात्र गिरीश करनाड द्वारा लिखित नाटक हयवदन एवं नृत्य तथा विभोर बैंड की प्रस्तुति भी होगी। कार्यक्रम में शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया. आभार डॉ. राकेश सोनी द्वारा किया गया. संचालन डॉ. नीरज उपाध्याय ने किया।

विद्यार्थी एवं शिक्षक अभिरुचि के अनुसार चुन सकेंगे पाठ्यक्रम

विश्वविद्यालय में स्पेनिश भाषा में शुरू होगा पाठ्यक्रम

आचरण संवाददाता

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में शीघ्र ही स्पेनिश भाषा की पढ़ाई प्रारम्भ होगी. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में स्पेन स्थित जेन विश्वविद्यालय से हुई ऑनलाइन बैठक में स्पेनिश भाषा के ऑनलाइन प्रारंभिक पाठ्यक्रम शुरू करने को लेकर सार्थक चर्चा हुई. इसमें दो तरह के पाठ्यक्रम होंगे जिन्हें विद्यार्थी अपनी आवश्यकता और सुविधानुसार चुन सकते हैं. शुरुआती तौर पर 30 घंटे और 60 घंटे शिक्षण अवधि वाले पाठ्यक्रमों ...

नशा मुक्ति के लिए निकाली रैली

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के शिक्षा शास्त्र विभाग ने सात दिवसीय सामुदायिक कार्य का आयोजन किया। जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं स्वच्छता ... संबंधी विभिन्न कार्यों ... विद्यार्थियों ने बरारू ग्राम में नशा मुक्ति के लिए रैली निकाली। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शिक्षा शास्त्र विभाग के कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम आचार्य डॉ. अभिषेक कुमार प्रजापति के मार्गदर्शन में ...

आयोजन प्रदर्शनकारी कला एवं ललितकला समकालीन विमर्श, प्रवृत्तियां एवं नवाचार विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी

'हर दर्शक, श्रोता चाहे तो वह एक कलाकार हो सकता है'

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के ललित कला एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग द्वारा प्रदर्शनकारी कला एवं ललितकला समकालीन विमर्श, प्रवृत्तियां एवं नवाचार विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण के साथ किया गया। उद्घाटन सत्र में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नई दिल्ली के पूर्व निदेशक प्रो. देवेन्द्र राज अंकुर एवं उप्र राज्य ललित कला अकादम... प्रख्यात चित्रकार ... विश्वकर्मा उपस्थित ...

प्रदर्शनकारी कला ... विभाग के अधिष्ठा... सिंह भदौरिया ने ... दिया। संगोष्ठी के सं... उपाध्याय ने संगोष्ठी ... प्रारूप को विस्ता... विशिष्ट अतिथि प्रो. ... ने कहा कि सारी ...

वेदों में 64 कलाओं के संवर्धन के बारे में उल्लेख

विशिष्ट अतिथि डा. सुनील विश्वकर्मा ... ने कहा कि आज हम कला के ... वस्तु पर चर्चा ... उपस्थित हुए है। ... कलाओं के संवर्ध... मिलता है। इनमें ... परोसने से लेकर ... कला के रूप में बता... भारतीय संस्कृति में ... हमारी सभ्यता अपने ... चल रही है।

विश्वविद्यालय में स्पेनिश भाषा में शुरू होगा पाठ्यक्रम, अप्रैल से ही होगी शुरुआत

...संवाददाता | सागर

... और सुविधानुसार चुन सकते हैं। शुरुआती तौर पर 30 घंटे और 60 घंटे की शिक्षण अवधि वाले ... शुरू करने पर सहमति ... आधार पर पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाएगा। सभी विवरण विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध कराए जाएंगे। बैठक में दोनों विश्वविद्यालयों का परिचय भी सांझा किया गया। कुलपति प्रो. गुप्ता ने कहा शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण की दिशा में विवि आगे बढ़े इसके लिए दुनिया की अनेक भाषाओं को सीखना विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है। उन्होंने बताया विवि की कई देशों के विश्वविद्यालयों के साथ अकादमिक साझेदारी पहले से है।

विश्वविद्यालयः स्पेनिश भाषा में शुरू होगा आरंभिक पाठ्यक्रम, विद्यार्थी एवं शिक्षक अभिरुचि के अनुसार चुन सकेंगे पाठ्यक्रम

- स्पेन के जेन विश्वविद्यालय से हुई सार्थक चर्चा, अप्रैल से पाठ्यक्रम आरंभ करने की तैयारी

दबंग बुन्देलखण्ड

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में शीघ्र ही स्पेनिश भाषा की पढ़ाई प्रारम्भ होगी। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में स्पेन स्थित जेन विश्वविद्यालय से हुई ऑनलाइन बैठक में स्पेनिश भाषा के ऑनलाइन प्रारंभिक पाठ्यक्रम शुरू करने को लेकर सार्थक चर्चा हुई। इसमें दो तरह के पाठ्यक्रम होंगे जिन्हें विद्यार्थी अपनी आवश्यकता और सुविधानुसार चुन सकते हैं। शुरूआती तौर पर 30 घंटे और 60 घंटे शिक्षण अवधि वाले पाठ्यक्रमों को शुरू करने पर सहमती बनी है जिसे विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय प्रकोष्ठ और अंग्रेजी एवं अन्य यूरोपियन भाषा विभाग के संयुक्त प्रयास से संचालित किया जाएगा। पाठ्यक्रम में विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों ही प्रवेश ले सकेंगे। 30 घंटे शिक्षण अवधि वाले पाठ्यक्रम की फीस लगभग 20000 रुपये एवं 60 घंटे अवधि के पाठ्यक्रम का शुल्क लगभग 40000 रुपये होगा। शीघ्र ही पाठ्यक्रम चयन को लेकर एक अभिरुचि फॉर्म विश्वविद्यालय द्वारा जारी किया जाएगा जिसके आधार पर पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाएगा। सभी विवरण विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर उपलब्ध कराये जायेंगे. बैठक में दोनों विश्वविद्यालयों का परिचय भी साझा किया गया। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण की दिशा में विश्वविद्यालय आगे बढ़े इसके लिए दुनिया की अनेक भाषाओं को सीखना विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है।उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के साथ कई देशों के विश्वविद्यालयों के साथ अकादमिक साझेदारी पहले से है। कई अन्य देशों की संस्थाओं के साथ अकादमिक एवं शोध साझेदारी के प्रयास किये जा रहे हैं ताकि विदेशी विद्यार्थियों को भी हम अपने विश्वविद्यालय में अध्ययन के प्रति आकर्षित कर सकें। बैठक में इंटरनेशनल सेल के प्रभारी डॉ. वी. रेड्डी, प्रो. बी. आई. गुरु, प्रो. यू. के. पाटिल, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. श्वेता यादव, प्रो. वंदना सोनी, मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल उपस्थित थे।

SagarUniversity | DoctorGour | Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya,Sagar

संकलन, चयन एवं संपादन

कार्यालय, जनसंपर्क अधिकारी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)